वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 86
ISBN 978-93-80353-89-0

मण्डल विधान प्रारंभ एवं हवन विधि

–संकलन एवं पद्यानुवाद –

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य 105 गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के शिष्य जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर धर्मपीठ के पीठाधीश पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के 25वें पीठाधीश पदारोहण दिवस मोक्षसप्तमी-5 अगस्त 2011 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : rk195057@yahoo.com

द्वितीय संस्करण	वीर नि. सं. 2537	मूल्य
(परिवर्द्धित)	मोक्षसप्तमी	40/-रु.
1100 प्रतियाँ	5 अगस्त 2011	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण (सन् 1988)-1100 प्रतियाँ प्रकाशित

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

वर्तमान की आवश्यकतानुसार परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने इस पुस्तक का सृजन किया है। इसके द्वारा प्रत्येक विद्वान को मण्डल विधान सम्पन्न कराने में अत्यन्त सुविधा प्राप्त होगी। क्योंकि आगम के अनुसार माताजी ने इसमें सारी विधि का यथाक्रम संकलन कर दिया है एवं जनसाधारण की संस्कृत भाषाजन्य अशुद्धियों को देखते हुए पद्यानुवाद करके उस विधि को बहुत सरल बना दिया है।

आशा है कि विधान कराने वाले समस्त विद्वानों को यह पुस्तक नई दिशा प्रदान करेगी और वे इस विधि को पूर्णरूपेण प्रयोग कराकर समाज को लाभान्वित करेंगे।

इस पुस्तक में किसी भी विधान को सम्पन्न कराने के लिए उपयोग में आने वाली समस्त सामग्री की लिस्ट भी यहाँ दी जा रही है, पुनः यहाँ सभी विधियों को अलग-अलग सम्पन्न कराने के लिए अलग सामग्री की सूची भी दी जा रही है।

1. झण्डारोहण की सामग्री–सिद्धयंत्र, केसरिया झण्डा स्वस्तिक बना हुआ ढाई फुट लम्बा, झण्डे में बाँधने के लिए पुष्प, पूजन सामग्री, 1 मिट्टी का कलश, नारियल, हल्दी, सुपारी, सरसों, आम के पत्ते, कलावा, केसर, कपूर, माचिस, रुई, घण्टा, सिन्दूर।

2. अंकुरारोपण की सामग्री–सप्तपधान्य बिना कुटे हुए, सात मिट्टी के गमले, पूजन सामग्री, सिद्धयंत्र, कलावा, मिट्टी का एक कलश, नारियल, हल्दी, सुपारी, सरसों, कपूर, माचिस, फावड़ा, 9 थालियाँ, केसरिया वायल 2 मीटर।

3. जाप्यानुष्ठान की सामग्री–विधान सम्बन्धी जाप्य के कार्ड, डाभ के आसन, लकड़ी के पाटे, हल्दी, सुपारी, सरसों, कलावा, सूत या स्फटिक, मूँगा आदि की मालाएँ, कपूर, माचिस, घी, दीपक, धूपदान, धूप, ताजी मिट्टी के बड़े दीपक, लौंग, मंगल कलश, विनायक यंत्र, नारियल, सिंहासन, कापी, पेन या पेन्सिल, कोयले की अग्नि, जनेऊ।

4. सकलीकरण की सामग्री–शुद्ध केसर, लौंग, रकेबियाँ, जल, पूजन

सामग्री, कलावा, कपूर, माचिस, रुई, घी, दीपक, सरसों, सुपारी, हल्दी, सिंदूर, डाभ के आसन, लकड़ी की बैंच इत्यादि।

5. हवन की सामग्री–पूजन सामग्री, धूप, घी, आम की लकड़ी, चंदन की लकड़ी, सप्तधान्य, लकड़ी के चाटू, दूध, गरी के गोले, मंगल कलश, नारियल, आम के पत्ते, कलावा, जनेऊ, हल्दी, सुपारी, सरसों, सिंदूर, 12 मिट्टी के दीपक, रुई, माचिस, कपूर, पिसी हल्दी, डाभ के आसन, सफेद चावल 1 किलो, पीले चावल आधा किलो, 1 मेज, 100 ग्राम लौंग आदि।

6. जलयात्रा की सामग्री–9 मंगल कलश, 9 नारियल, पूजन सामग्री, दीपक, बाल्टी, छन्ना, घड़ा पीतल या स्टील का, सरसों, कपूर, माचिस, सिंदूर, सुपारी, घण्टा आदि।

विधान के लिए सामग्री एवं अन्य आवश्यक उपकरण/वस्तुएँ

झण्डा केसरिया 1 बड़ा (ढाई मीटर), 8 झण्डे (एक मीटर प्रत्येक), चिह्नसहित 458 छोटी झण्डियाँ केसरिया रंग की (ये इन्द्रध्वज विधान में काम आती हैं)।

नारियल	विधान के अर्घों के अनुसार
चावल	50 कि.ग्रा.
बादाम	2 कि.ग्रा.
सुपारी	2 कि.ग्रा.
छुआरा	2 कि.ग्रा.
छोटी इलाइयी	500 ग्राम
लौंग	500 ग्राम
किसमिस	500 ग्राम
केसर असली	10 ग्राम
गरी गोला	5 कि.ग्रा.
रुई	1 बण्डल
माचिस	1 बण्डल
देसी घी	10 कि.ग्रा.
जनेऊ	12 नग

कलावा	250 ग्राम
अगरबत्ती	10 पैकेट
सिन्दूर	10 ग्राम
हल्दी गाँठ	250 ग्राम
धनिया साबुत	100 ग्राम
पीली सरसों	250 ग्राम
कपूर	500 ग्राम
1 रुपये के सिक्के	10
चार आने के सिक्के	10
10 पैसे के सिक्के	30
लालटेन के गोले (शीशे)	10
पिस्ता	100 ग्राम

धूप का सामान

1. अगर	250 ग्राम
2. तगर	” ”
3. छैलछबीला	” ”
4. नागरमोथा	” ”
5. कपूरकचरी	” ”
6. लाल चंदन	500 ”
7. सफेद चंदन	” ”

अंकुरारोपण की सामग्री

मिट्टी के प्याले या गमले	8
मिट्टी के कलश	2

सप्तधान्य

1. जौ	100 ग्राम
2. चना	” ”
3. मटर	” ”
4. सरसों	” ”
5. काले तिल	” ”

6. धान	” ”
7. गेहूँ	” ”

मांडना बनाने का सामान

16 × 16 फुट या 12 × 12 फुट मंडल बनाने के लिए तख्त पर बिछाने वाला कपड़ा

लाल रंग	2 कि.ग्रा.
हरा रंग	” ”
पीला रंग	” ”
नीला रंग	” ”
गुलाबी रंग	” ”
सफेद रंग	” ”
चाय की छन्नी लोहे वाली	4
पानी छानने वाला कपड़ा	2 मीटर
केसरिया तूल	2 मीटर
गोटा (आधा मीटर चौड़ा)	10 मीटर
पूजन बर्तन सैट (जितने पूजन करने वाले हों)	
आसन (डाभ के)	20
नई चटाइयाँ	1 दर्जन
पीतल के दीपक	1 दर्जन
दीपक के लिए रकेबी	1 दर्जन
जलयात्रा के लिए कलश	51

सभी पूजन करने वालों के लिए नये धोती दुपट्टे।

विधानाचार्य के लिए कपड़ों का 1 सेट

धूपदान	10
लाउडस्पीकर (पूजा के लिए)	4 माईक सैट

चौकियाँ

बैंच

चंदोवा

केसरिया साटन (मंडल के चारों तरफ झालर लगाने के लिए)

चंवर	8
छत्र	
सिंहासन	भगवान को विराजमान करने हेतु
अष्ट मंगल द्रव्य	
अखण्ड दीपक के बड़े कटोरे	2
अखण्ड दीपक रखने के लिए केश	2
पंचमेरू	
शांतिधारा के लिए झारी	
एल्यूमिनीयम पाइप (8 फुट लम्बाई व आधा इंच के)	आठ बड़े झण्डों को लगाने के लिए
हार-मुकुट	इन्द्र-इन्द्राणी की संख्या के अनुसार
मुकुट	
कनस्तर या गमले (झण्डे लगाने के लिए)	8
मंडल विधान का बैनर	1

नोट–उपरोक्त सामग्री लगभग 10 व्यक्तियों के लिए है। संख्या के अनुसार पूजन सामग्री घटा या बढ़ा लेनी चाहिये। नारियल की संख्या वही रहेगी।

आद्य वक्तव्य

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

'पंचामृत अभिषेक पाठ संग्रह' पुस्तक में प्रकाशित श्री पूज्यपादस्वामी द्वारा रचित 'पंचामृत अभिषेक' और उसमें क्षेत्रपाल, दिक्पाल का आह्वान देखकर मुझे आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा में प्रचलित वर्तमान में प्रसिद्ध बीसपंथ आम्नाय पर बहुत ही श्रद्धा बढ़ गई। इसमें पंद्रह अभिषेक पाठ संग्रहीत हैं। प्रायः सभी अभिषेक पाठ आचार्यों द्वारा लिखित होने से प्रामाणिक हैं। मात्र पंडित प्रवर आशाधर जी बहुत ही प्रामाणिक विद्वान् माने गये हैं। इनके द्वारा बनाये गये 'अनगारधर्मामृत' आदि ग्रंथ मुनियों को भी मान्य हैं।

इन सभी में सर्वप्रथम लिखा गया श्रीपूज्यपादस्वामी का अभिषेक पाठ मुझे बहुत अच्छा लगा और आबाल गोपाल तक प्रसिद्ध करने की इच्छा रही। मैंने सन् 1976 में इन्द्रध्वज विधान को छपाते समय उसमें यह अभिषेक पाठ ज्यों की त्यों संस्कृत का ही दे दिया था। यह इन्द्रध्वज विधान जब चौथी बार छपा उसमें भी छपाया गया है। श्री पूज्यपादस्वामी की संस्कृत भी अत्यंत कठिन है। अतः यह अभिषेक पाठ शायद किन्हीं विद्वानों ने भले ही कराया हो किन्तु सामान्य विद्वानों ने इसे नहीं कराया।

मेरे मन में कई वर्षों से यह इच्छा थी कि मैं इसका पद्यानुवाद कर दूँ तो सबके लिए सरल हो जाये। सन् 1987 में 6 जुलाई, आषाढ़ सुदी 10 के दिन मैंने इसका पद्यानुवाद पूर्ण किया। इसमें श्लोकों का भावानुवाद ही है और मंत्र ज्यों के त्यों दिये गये हैं।

वर्तमान समय की विघ्नबाधाओं को दृष्टि में रखकर उनके दूर करने हेतु मैंने एक 'शांतिधारा' बनायी थी वह भी इसमें दे दी है। पुनः क्षुल्लक मोतीसागर जी, रवीन्द्र कुमार आदि का कई बार यह कहना रहा कि सकलीकरण, यज्ञदीक्षा आदि विधियाँ संस्कृत में ही हैं। उनको भी आप यदि पद्यानुवाद से सरल कर दें तो अच्छा रहे। क्योंकि कई एक नये विद्वान प्रायः संस्कृत श्लोकों का उच्चारण अशुद्ध करते रहते हैं।

इन लोगों की भावना के अनुसार मैंने इन सकलीकरण आदि के कुछ श्लोकों का पद्यानुवाद करके मंत्रों को मात्र रखकर विधि संक्षिप्त कर दी है।

इस प्रकार इस पुस्तक में सिद्धचक्रविधान, इन्द्रध्वज विधान आदि कराने

वाले विद्वानों के लिये प्रारंभिक और अंतिम हवन विधि तक सर्व विधि सरल कर दी है। क्योंकि ऐसा अनुभव आता है कि बहुत से विद्वान इन विधियों को कठिन और बड़ी समझकर प्रायः छोड़ ही देते हैं। अंत में हवन विधि में भी कुछ मंत्रों द्वारा आहुति कराकर विधान पूर्ण कर देते हैं। इन सभी विद्वानों के लिये ही यह विधि सरल और संक्षिप्त की गई है।

पूजामुखविधि व अन्त्यविधि–श्रीपूज्यपादस्वामी ने अभिषेक पाठ में प्रारंभ में दो श्लोक दिये हैं जिनमें नित्यपूजा के प्रारम्भ में करने योग्य विधि का संकेत दिया है। पुनः अन्त में पैंतीस से चालीस श्लोकों में से अंत के चार श्लोकों में अभिषेक के बाद में करने योग्य पूजा, मंत्रजाप, यक्ष, यक्षी आदि के अर्घ का संकेत दिया है। इसे ही देखिये–

आनम्यार्हंतमादावहमपि विहितस्नानशुद्धिः पवित्रैः।
तोयैः सन्मंत्रयंत्रैर्जिनपतिसवनाम्भोभिरप्यात्तशुद्धिः।।
आचम्यार्घ्यं च कृत्वा शुचिधवलदुकूलान्तरीयोत्तरीयः।
श्रीचैत्यावासमानौम्यवनतिविधिना त्रिःपरीत्य क्रमेण।।1।।

द्वारं चोद्घाट्य वक्त्राम्बरमपि विधिनेर्यापथाख्यां च शुद्धिं।
कृत्वाहं सिद्धभक्तिं बुधनुतसकलीसत्क्रियां चादरेण।।
श्रीजैनेन्द्रार्चनार्थं क्षितिमपि यजनद्रव्यपात्रात्मशुद्धिं।
कृत्वा भक्त्या त्रिशुद्ध्या महमहमधुना प्रारभेयं जिनस्य।।2।।

अर्थ–पूजा अभिषेक के प्रारम्भ में स्नान करके शुद्ध हुआ मैं अर्हन्त देव को नमस्कार करके पवित्र जलस्नान से, मंत्रस्नान से और व्रत स्नान से शुद्ध होकर आचमन कर, अर्घ्य देकर, धुले हुए सफेद धोती और दुपट्टा को धारण कर, वंदना विधि के अनुसार तीन प्रदक्षिणा देकर जिनालय को नमस्कार करता हूँ।

तथा द्वारोद्घाटन कर और मुख वस्त्र हटाकर विधिपूर्वक ईर्यापथ शुद्धि करके, सिद्धभक्ति करके, सकलीकरण करके, जिनेन्द्रदेव की पूजा के लिये भूमिशुद्धि, पूजा द्रव्य की शुद्धि, पूजा पात्रों की शुद्धि और आत्म शुद्धि करके भक्तिपूर्वक मन, वचन, काय की शुद्धि से अब जिनेन्द्रदेव का महामय अर्थात् अभिषेक पूजा प्रारम्भ करता हूँ।।1-2।।

इस कथित विधि के अनुसार आचार्य श्री नेमिचन्द्र कृत प्रतिष्ठातिलक में क्रम से सर्वविधि का वर्णन है। प्रारम्भ में जलस्नान के अनंतर 'मंत्रस्नान'[1] विधि

1. प्रतिष्ठातिलक में है।

का वर्णन है। अनंतर 'पूजा मुखविधि' शीर्षक में मंदिर में प्रवेश करने से लेकर सिद्धभक्ति का का वर्णन हैं अर्थात् मंदिर में प्रवेश करना, प्रदक्षिणा देना, जिनालय की तथा जिनेन्द्रदेव की स्तुति करना, ईर्यापथ शुद्धि करके सकलीकरण करना, द्वारोद्घाटन, मुखवस्त्र उत्सारण (वेदी के सामने का वस्त्र हटाना) पुनः सामायिक विधि स्वीकार कर विधिवत् कृत्य विज्ञापना करके सामायिक दंडक, कायोत्सर्ग और थोस्सामि करके लघु सिद्धभक्ति करना यहाँ तक पूजा- मुखविधि होती है।

पुनः विधिवत् अभिषेक करने का विधान है। उसके अंत में श्लोक ये हैं–

निष्ठाप्यैवं जिनानां सवनविधिरपि प्रार्च्यभूभागमन्यं।
पूर्वोक्तैर्मंत्रयंत्रैरिव भुवि विधिनाराधनापीठयंत्रम्।।
कृत्वा सच्चंदनाद्यैर्वसुदलकमलं कर्णिकायां जिनेद्रान्।
प्राच्यां संस्थाप्य सिद्धानितरदिशि गुरून् मंत्ररूपान् निधाय।।37।।

जैनं धर्मागमार्चानिलयमपि विदिक्पत्रमध्ये लिखित्वा।
बाह्ये कृत्वार्थ चूर्णैः प्रविशदसदकैः पंचकं मंडलानाम्।।
तत्र स्थाप्यास्तिथीशा ग्रहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याहियन्ते।।38।।

एवं पंचोपचारैरिह जिनयजनं पूर्ववन्मूलमंत्रे।
णापाद्यानेकपुष्पैरमलमणिगणैरंगुलीभिः समंत्रैः।।
आराध्यार्हंतमष्टोत्तरशतममलं चैत्यभक्त्यादिभिश्च।
स्तुत्वा श्रीशांतिमंत्रं गणधरवलयं पंचकृत्वः पठित्वा।।39।।

पुण्याहं घोषयित्वा तदनु जिनपतेः पादपद्मार्चितां श्री।
शेषां संधार्य मूर्ध्ना जिनपतिनिलयं त्रिपरीत्य त्रिशुद्ध्या।।
आनम्येशं विसृज्यामरगणमपि यः पूजयेत् पूज्यपादं।
प्राप्नोत्येवाशु सौख्यं भुवि दिवि विबुधो देवनंदीडितश्रीः।।40।।

अर्थ–इस प्रकार जिनेन्द्रदेव की पूजा विधि को पूर्ण करके पूर्वोक्त मंत्र यंत्रों से विधिपूर्वक आराधनापीठ यंत्र की पूजा करें। पुनः चंदन आदि के द्वारा आठ दल का कमल बनाकर कर्णिका में श्रीजिनेन्द्रदेव को स्थापित कर पूर्व दिशा में सिद्धों को, शेष तीन दिशाओं में आचार्य उपाध्याय और साधु को विराजमान करके पुनः विदिशा के दलों में क्रम से जिनधर्म, जिनागम, जिनप्रतिमा और जिनमंदिर को लिखकर बाहर में चूर्ण से और धुले हुए उज्ज्वल चावल आदि से

पंचवर्णी मण्डल बना लेवें। इस कमल के बाहर पंचदश तिथिदेवता को, नवग्रहों को, बत्तीस इन्द्रों को, चौबीस यक्षों को, चौबीस यक्षिणी को तथा द्वारपालों को और लोकपालों को विधिवत् मंत्रपूर्वक में आह्वानन विधि से बुलाता हूँ।

इस तरह पंचोपचारों से मंत्रपूर्वक जिन भगवान् का पूजन कर पूर्ववत् मूल मन्त्रों द्वारा अनेक प्रकार के पुष्पों से, निर्मल मणियों की माला से या अंगुली से एक सौ आठ जाप्य करके अरहंत देव की आराधना करें। पुनः चैत्यभक्ति आदि शब्द से पंचगुरू भक्ति और शांति भक्ति के द्वारा स्तवन करके शांतिमन्त्र और गणधरवलय मन्त्रों को पढ़कर प्रदक्षिणा देकर, मन, वचन, काय की शुद्धिपूर्वक श्रीजिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करे और अमरगण अर्थात् पूजा के लिए बुलाये गये देवों का विसर्जन करके जो व्यक्ति 'पूज्यपाद' श्रीजिनेन्द्र भगवान की पूजा करता है वह 'देवनन्दी' से पूजित श्री विद्वान् मर्त्यलोक और देवलोक में शीघ्र ही सुख को प्राप्त करता है। (37 से 40 तक)

यह अभिषेक पाठ सर्वार्थसिद्धि के कर्ता श्री पूज्यपाद स्वामीकृत ही है। यह पं. पन्नालाल जी सोनी ने अभिषेक पाठ संग्रह की प्रस्तावना में स्पष्ट कर दिया है। यथा–'शिलालेख'[1] नं. 40 (64) में निम्नलिखित दो पद्य दिये गये हैं–

यो देवनंदिप्रथमाभिधानो, बुद्ध्या महत्या च जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपादोऽजनि देवताभिर्यत्पूजितं पादयुगं यदीयम्।।10।।

जैनेन्द्रं निजशब्दभोगमतुलं सर्वार्थसिद्धिः परा।
सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्धकविता जैनाभिषेकः स्वकः।।
छन्दस्सूक्ष्मधियं समाधिशतकस्वास्थ्यं यदीयं विदा।
माश्यातीह स पूज्यपादमुनिपः पूज्यो मुनीनां गणैः[2]।।11।।

पहले गद्य में पूज्यपाद स्वामी ने तीन नाम प्रख्यात होने का हेतु बताया है। अर्थात् जिनका 'देवनंदि' यह प्रथम नाम था, बुद्धि और महानता से जो जिनेन्द्रबुद्धि कहलाये। पुनः देवताओं के द्वारा उनके पाद युगल की पूजा की गई थी इसलिए वे 'श्री पूज्यपाद' नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।

पुनः दूसरे पद्य में उनके बनाये हुए ग्रन्थों के नाम हैं। अर्थात् जिनका 'जैनेन्द्र व्याकरण' अतुल शब्दों का कथन करता है, जिनकी 'सर्वार्थसिद्धि' सिद्धांत में निपुणता को सूचित करती है एवं जिनका बनाया हुआ 'जैनाभिषेक' छंद ग्रन्थ और समाधिशतक उनके श्रेष्ठ कवित्व को कहते हैं ऐसे वे श्री पूज्यपाद मुनिनाथ,

1. शिलालेख संग्रह पु. 1। 2. 'अभिषेक पाठ संग्रह' प्रस्तावना से।

मुनियों के समूह से पूज्य हैं।

यह शिलालेख शक संवत् 1085, विक्रम संवत् 1220 में उत्कीर्ण किया गया है।

इस तरह से यहाँ श्री पूज्यपादस्वामी ने पूजा के आदि में सिद्धभक्ति व अन्त में 'चैत्यभक्ति' पंचगुरूभक्ति और शांतिभक्ति ऐसी चार भक्तियों को करने का विधान किया है।

अन्य ग्रन्थों में भी श्रावकों के लिए अभिषेक पूजन में चारभक्ति–सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरूभक्ति और शांतिभक्ति को करने का विधान है।

'सिद्धभक्त्यादिशान्यंता पूजाभिषवमंगले।

अथवा–

अहिसेयवंदणा सिद्धचेदियपंचगुरूसंतिभत्तीहिं[1]।।'

भावसंग्रह ग्रन्थ में भी श्रावक की सामायिक क्रिया में जिनेन्द्रदेव का विधिवत् अभिषेक और पूजन करने को कहा है। वहाँ पर नित्य अभिषेक पूजन विधि का वर्णन इसी प्रकार से ही किया गया है। यथा–

सामायिकं प्रकुर्वीत, कालत्रये दिनं प्रति।
श्रावको हि जिनेन्द्रस्य, जिनापूजापुरस्सरं[2]।।463।।

पश्चात्स्नानविधिं कृत्वा, धौतवस्त्रपरिग्रहः।
मंत्रस्नानं व्रतस्नानं कर्तव्यं मंत्रवित्तथा।।470।।

एवं स्नानत्रयं कृत्वा, शुद्धित्रयसमन्वितः।
जिनावासं विशेन्मंत्री, समुच्चार्य निषेधिकां।।471।।

कृत्वेर्यापथसंशुद्धिं, जिनं स्तुत्वातिभक्ति तः।
उपविश्य जिनस्याग्रे, कुर्याद्विविमिमां पुरा।।472।।

इत्यादि रूप से 463 श्लोक से लेकर 499 श्लोक तक पूर्वोक्त विधि से 'पूजा मुख विधि, अभिषेक', पूजन आदि करने का विधान किया है।

इस प्रकार श्रीपूज्यपाद स्वामी के कहे अनुसार सर्वविधि मुझे 'प्रतिष्ठातिलक' नाम के ग्रन्थ में देखने को मिली। मैंने सन् 1955 में गड़दगा नाम के गाँव में दक्षिण में एक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा देखी थी। वह प्रतिष्ठा इसी ग्रन्थ के आधार से करायी गई थी।

इस 'प्रतिष्ठा तिलक' में 'नित्यमह' नाम से जो विषय है उसमें सर्वप्रथम

1. अनगारधर्मामृत अ. 9, पृ. 637। 2. भावसंग्रह (श्रीवामदेव विरचित पृ.199)।

मंत्रस्नान विधि दी गई है। इसे ही अन्यत्र 'संध्यावंदन विधि' कहते हैं। इसे यहाँ सर्वप्रथम दिया गया है।

श्रावकों को नित्य ही 'जलस्नान' के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर एक कटोरी में जल लेकर यह 'मंत्रस्नान' विधिवत् करना चाहिये। इस 'संध्यावंदन' को पं. लालारामजी शास्त्री ने भी छपवाया था और 'पुरंदर व्रत विधान' में ब्र. श्री सूरजमलजी ने भी छपवाया है। श्रावकों के लिए शास्त्र में तीन स्नान माने हैं– जल स्नान, मंत्र स्नान और व्रत स्नान। पं. पन्नालालजी सोनी ने 'अभिषेक पाठ संग्रह' ग्रन्थ की भूमिका में 'पूजाविधिः' में तीनों स्नान के मंत्र अलग-अलग दिये हैं। उसमें व्रतस्नान का मंत्र निम्न है–

''ॐ ह्रीं ह्रं श्रीं नमः अणुव्रत पंचकं गुणव्रतत्रयं शिक्षाव्रतचतुष्टयं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधून् साक्षीकृत्य सम्यक्त्वपूर्वकं सुव्रतं दृढव्रतं समारूढं भवतु मह्यं स्वाहा।''

इस प्रकार तीनों स्नान से शुद्ध होकर जिनमंदिर में पहुँचकर अभिषेक-पूजा करने के लिये पूजामुखविधि करें। इसी ग्रन्थ के आधार से पूजा मुखविधि मैंने संक्षेप में दी है। इसमें सकलीकरण भी शामिल है। इस सकलीकरण में मध्य के तीन मंत्र–औदारिक देह दहन आदि के मैंने पं. आशाधरजी कृत सकलीकरण से लिया है।

पुनः 'पंचामृत अभिषेक पाठ' श्रीपूज्यपादस्वामी का दिया है। इसके बाद नवदेवता पूजा देकर 'पूजा अन्त्यविधि' दी है। यह भी 'प्रतिष्ठा तिलक' के आधार से संक्षिप्त करके दी है।

झण्डारोहण विधि–यह विधि प्रतिष्ठातिलक में लगभग 20 पृष्ठों तक है। इस विधि को यहाँ संक्षेप में कतिपय श्लोक मंत्र मात्र से दे दिया है। यह ध्वजारोहण विधि पंच कल्याणक के समय के लिये है। इन्द्रध्वज आदि विधान के प्रारम्भ में भी इसी से ध्वजारोहण करावें। इसमें मंत्र में सर्वाण्हयक्ष के अभिषेक के मंत्र हैं। जहाँ सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति हो वहाँ अभिषेक आदि सरल है। कोई-कोई वस्त्र में बने सर्वाण्हयक्ष का दर्पण में प्रतिबिम्ब डालकर उस दर्पण पर करते हैं। उसी प्रकार इसमें जो नेत्रोन्मीलन आदि के मंत्र हैं उनका प्रयोग तो सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति होने पर ही किया जा सकेगा।

चालू विधि में ध्वजारोहण स्थान पर यंत्र ले जाकर मंगलाष्टक पढ़कर 'भूमिशोधन' विधि करते हैं–इसमें वास्तुकुमार मेघकुमार आदि का आह्वान कर अर्घ देकर यंत्र का अभिषेक कर यंत्रपूजा, नवदेवता पूजा, समय हो तो सिद्धपूजा

करके इस पुस्तक में छपी ध्वजारोहण विधि कराके ध्वजारोहण कराना चाहिये।

अंकुरारोपण विधि–यह विधि भी 'प्रतिष्ठातिलक' में लगभग 20 पृष्ठ तक है। यहाँ पर कतिपय श्लोक लेकर मंत्रमात्र देकर विधि को संक्षिप्त किया है। यह विधि भी प्रतिष्ठा के समय की है।

चालू विधि में अंकुरारोपण के समय भी यंत्र का अभिषेक कर इसमें छपी सर्व विधि कराकर अंकुरारोपण करावें। वहाँ पर पालिका, घटी, सराव और पटली ऐसे चार तरह के पात्र अंकुरारोपण के लिये बताये हैं। इन्द्रध्वज विधान आदि के समय आठ कुण्डों में अंकुरारोपण कराने की परम्परा है।

बीजप्रक्षालन, बीजवपन और जलसेचन के मंत्र विधानाचार्य को मन में पढ़ना चाहिये।

घटयात्रा विधि–यह घटयात्रा विधि वेदी शुद्धि के लिये और भगवान के अभिषेक हेतु जल लाने के लिये भी की जाती है। यहाँ अति संक्षेप में 'व्रतविधि निर्णय' से लेकर श्लोकों का पद्यानुवाद कर दिया है। इसमें भी प्रारम्भ में मंगलाष्टक, पुनः भूमिशोधन विधि करके इस पुस्तक में प्रकाशित विधि करके जल से भरे कलशे लाना चाहिये।

मंडलाराधना विधि–प्रतिष्ठातिलक में 'यागमंडल' के अन्तर्गत मंडलाराधना विधि दी है। इसमें अर्हंत पूजा, सिद्धपूजा, महर्षि पूजा और स्वस्त्ययन पाठ अर्थात् स्वस्ति पाठ है। इसी के अनुसार मैंने यहाँ हिन्दी में अर्हत पूजा, सिद्धपूजा, साधु पूजा देकर वहीं से स्वस्ति पाठ लेकर दे दिया है।

यक्षदीक्षा विधि–यह विधि भी इसी 'यागमण्डल' के अन्तर्गत मण्डलाराधना के बाद की से है। इसे ही मैंने कतिपय हिन्दी पद्य देकर मात्र मंत्रों से ही दे दीहै।

भूमिशोधन विधि–यह विधि भी प्रतिष्ठातिलक में यज्ञदीक्षा के बाद है। इसे भी संक्षिप्त करके मंत्र मात्र से दिया है। यह विधि प्रायः ध्वजारोहरण, जलयात्रा आदि के प्रसंगों पर प्रारम्भ में की जाती है।

मंदिर, वेदी आदि के शिलान्यास के समय भी इस 'भूमिशोधन विधि' को प्रारम्भ में करने की परम्परा है।

मंडपप्रतिष्ठा विधि–यह विधि भी उसी प्रतिष्ठातिलक में है। यहाँ पर संक्षेप में दी गई है। इस मंडपप्रतिष्ठा के समय 'पुण्याहवाचन' की भी परम्परा है। यह लघु पुण्याहवाचन इसी पुस्तक में पृ.....दिया गया है।

जाप्यानुष्ठान विधि–यह विधि इन्द्रध्वज विधान में छपायी जा चुकी है। यहाँ भी वही है।

हवन विधि–यह हवन विधि भी प्रतिष्ठातिलक से ही ली है। इसमें भी कुछ श्लोकों का पद्यानुवाद कर दिया है और सभी मंत्र ज्यों की त्यों रखे गये हैं। यह आहुति मंत्रों का क्रम आदिपुराण में ऐसा ही है।

रथचालन व रक्षा मंत्र–प्रतिष्ठातिलक में यह रथ चलाने का श्लोक है एवं रक्षा मंत्र है। वहीं से लेकर इस श्लोक और मंत्र को यहाँ दिया है।

मंगलाष्टक–अभिषेक पाठ आदि में प्रसिद्ध जो मंगलाष्टक पाठ है, उसे यहाँ दे दिया है। चूँकि सभी विद्वान् हर एक मंगल कार्य-विधि विधान के प्रारम्भ में इस मंगलाष्टक को पढ़ते हैं।

पुण्याहवाचन–यह लघु पुण्याहवाचन भी प्रसिद्ध है। मंडप शुद्धि, सामान्य वेदी शुद्धि आदि के समय इसको पढ़ा जाता है।

व्रतगृहण-समापन विधि–'व्रत तिथि निर्णय' पुस्तक पृ. 201-202 से यह विधि ली गई है। श्रावक-श्राविकाओं को रविवार, रत्नत्रय, अनन्त चौदस आदि व्रत देते समय इस विधि को पढ़ना होता है और समापन करते-कराते समय 'समापन' का पाठ पढ़ना होता है। यद्यपि यह विधि मुनि-आर्यिका आदि के लिये ही है। साधु-साध्वी आदि गुरुओं से ही श्रावकों को व्रत लेना चाहिये, फिर भी कदाचित् गुरुओं के नहीं रहने पर व्रती विद्वान् भी व्रत देते समय यह पाठ बोलें। इसीलिये यहाँ पुस्तक में यह पाठ दे दिया है।

व्रत निष्ठापन विधि–रविवार, अठाई, जिनगुणसम्पत्ति आदि कोई व्रत जब पूरा हो जाता है तब उद्यापन किया जाता है। इस उद्यापन में उस-उस व्रत के मंडलविधान कराये जाते हैं। उस उद्यापन के समय यह गद्य पाठ बोलकर उद्यापन कराना चाहिये। इसीलिए व्रत तिथि निर्णय के पृष्ठ 43 से इसे यहाँ दे दिया है।

तिथि देवता आदि देवताओं के अर्घ–श्रीपूज्यपाद स्वामी कृत अभिषेक पाठ के अन्त में जो तिथिदेवता यक्ष-यक्षी आदि को अर्घ चढ़ाने का कथन है, वही विधि प्रतिष्ठातिलक से लेकर पद्यानुवाद में यहाँ दी है। पुनः क्षेत्रपाल को चोला चढ़ाने के श्लोक दिये हैं और पद्मावती माता को वेश पहनाने, गोद भरने का भजन दिया है।

कलश स्थापित करने का संकल्प मंत्र–मण्डल पर या अन्यत्र कहीं भी मंगलकुम्भ स्थापित करते समय संकल्प मन्त्र पढ़कर कलश स्थापित करना चाहिये।

अखण्ड दीप प्रज्वालन मंत्र–विधान आदि के अवसर पर अखण्ड दीपक को जलाते समय संकल्प मंत्र पढ़कर जलाना चाहिये।

बड़ी शांतिधारा–यह सन् 1948 में फलटण से प्रकाशित 'सप्तर्षि पूजा' से

ली गई है। इन्द्रध्वज विधान में भी पहले यह छपायी जा चुकी है। नागौर (राज.) के ग्रंथ भण्डार में भी यह हस्तलिखित मिली थी। इसमें कुछ पाठ आगे-पीछे हैं। शांतिधारा मात्र पूरी यही है।

1008 और 108 कलश मांडने का चित्र–महाविधान की पूर्ति पर या कभी भी महाभिषेक में जब कभी 1008 कलशों से अभिषेक किया जाता है अथवा 108 कलशों का अभिषेक किया जाता है तब कुछ विद्वान् चाहे जैसे कलश रख देते हैं किन्तु प्रतिष्ठा तिलक में दिये चित्र के अनुसार मंडल बनाकर कलशों को स्थापित करना चाहिये। इसीलिए इस पुस्तक में ये दोनों चित्र दे दिये हैं।

विधान कराने का क्रम–इस प्रकार इस 'मंडल विधान प्रारम्भ विधि एवं हवन विधि' पुस्तक में सर्वप्रथम मंगलाष्टक है। इसके बाद प्रातःकालीन 'संध्यावंदन' है। पुनः देवदर्शनविधि को साथ लेकर पूजामुखविधि है, पुनः सकलीकरण है।

इसके बाद पंचामृतअभिषेक पाठ है। पुनः नित्य पूजा करने वालों के लिये 'नित्यदेवतापूजन' है। और इसके बाद 'पूजा अन्त्यविधि' है। विधान कराने वालों को प्रतिदिन विधान की पूजा के बाद 'अन्त्यविधि' करानी चाहिये। इसी में शांतिपाठ एवं विसर्जन पाठ आ जाता है।

इसके बाद 'ध्वजारोहण विधि' है क्योंकि किसी भी बड़े विधान के प्रारम्भ में सर्वप्रथम ध्वजारोहण किया जाता है। इसके बाद 'अंकुरारोपण विधि' है, क्योंकि ध्वजारोहण के बाद अंकुरारोपण किया जाता है। इसके बाद 'घटयात्रा' (जलयात्रा) से वेदी शुद्धि करके विधान प्रारम्भ किया जाता है।

विधान के प्रारम्भ में पूजामुखविधि से लेकर अभिषेक पाठ तक करके पुनः 'मंडलाराधना' करना चाहिये। इसमें तीन पूजा करके 'स्वस्तिपाठ' किया जाता है। पुनः 'यज्ञदीक्षा विधि ' से इंद्रप्रतिष्ठा करके 'भूमिशोधन विधि' से मंडपशुद्धि करके मंडपप्रतिष्ठा करना, इसमें मंडल के ऊपर चार कोनों में चार मंगल कलश और बीच में भगवान के सामने पूर्ण कलश ऐसे पाँच कलश इन्द्र-इन्द्राणी से स्थापित कराना। मंगल कलश स्थापित करने का एवं 'अखंड दीप' प्रज्वलित कराने की विधि आगे दी गई है।

इसके बाद विधान की पूजन में से समुच्चय पूजन कराना चाहिये। पुनः समय हो तो आगे की पूजन करावें अन्यथा 'पूजा अन्त्य विधि' शांति पाठ विसर्जन कराकर जाप्यानुष्ठान करा देना चाहिये। यदि समयाभाव हो तो उस दिन शाम को जाप्यानुष्ठान करा सकते हैं।

इस प्रकार प्रतिदिन पूजामुखविधि से लेकर अभिषेक पाठ तक विधि

करके 'नवदेवता पूजन' करके विधान की पूजन करना चाहिए। तथा रुचि के अनुसार 'सिद्धपूजा' अन्य तीर्थंकर पूजा आदि भी कर सकते हैं। पुनः पूजा अन्त्यविधि करके यहाँ थाली में ही विसर्जन करना चाहिए। मंडल पर आह्वानन प्रतिदिन करना होता है किन्तु विसर्जन तो विधान की पूजन पूरी हो जाने पर अंत में ही मंडल पर किया जाता है। प्रतिदिन मंडल पर ही अर्घ के श्रीफल, गोला या बादाम चढ़ाना चाहिए। प्रतिदिन अनुष्ठान की जाप्य करना चाहिए।

विधान पूर्ति के बाद तीन कुंड बनवाकर उनमें विधिवत् 'हवन' करना चाहिए।

इस पूर्णाहुति के बाद रथयात्रा की जाती है। अतः रथचालन का श्लोक और रथयात्रा के रक्षा मंत्र करने के लिए मंत्र दिया गया है।

इसके बाद फुटकर रूप में मेरे द्वारा रचित मंगलाष्टक और प्रसिद्ध पुण्याहवाचन दे दिया है।

किन्हीं को कोई व्रत देना या समापन करना हो तो आगे विधि दे दी गई है तथा उद्यापन के विधान में उद्यापन के लिए विधि दी गई है।

इसके बाद पंद्रह तिथि देवता, नौ नवग्रह, चौबीस यक्ष, चौबीस यक्षीः आठ दिक्पाल और आठ दौवारिक अर्थात् आठ द्वारपाल के अर्घ हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी ने 'अभिषेक पाठ' के अंत में कहा है कि–

''तत्र स्थाप्यास्तिथीशा ग्रहसुरपतये यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याहियंते।।

वहाँ पर तिथि देवतता, नवग्रहदेव, यक्ष, यक्षी, द्वारपाल और लोकपाल को स्थापित कर मंत्र पूर्वक उनका आह्वान करना चाहिए। प्रायः यही क्रम 'प्रतिष्ठा तिलक' से दिया गया है। यहाँ नित्यमहनित्यपूजा में ही अंत में है। उन श्लोकों को मैंने पद्यानुवाद कर संक्षेप में यहाँ दे दिया है। विद्वान प्रतिदिन यदि पृथक्-पृथक् अर्घ न चढ़ावें तो पूर्णार्घ चढ़ा देवें और विधान की पूजन में पृथक्-पृथक् अर्घ चढ़वावें।

इसके अनंतर मंडल पर या अन्य किन्हीं मंगल अवसरों पर मंगल कलश स्थापित करने के लिये संकल्प मंत्र दिया है।

विधान के अवसर पर 'अखण्डदीप' को जलाते समय आगे लिखा संकल्पमंत्र बोलना चाहिए।

इसी प्रकार मंडल प्रतिष्ठा करते समय मंडल पर चारों तरफ कलावा लपेटते समय 'शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं' पाठ बोलने की परम्परा है।

पुनः बड़ी शांतिधारा दी है। उसे जब कभी अभिषेक के बाद बड़ी शांतिधारा करनी हो तब करें। दूध से भी बड़ी शांतिधारा करते हैं।

इन विधि विधानों के समय कुछ मुद्राओं के प्रयोग होते हैं। उनके नाम निम्न प्रकार हैं–

सुरभिद्रा, पंचगुरुमुद्रा, शंखमुद्रा, अंकुशमुद्रा, अग्निमुद्रा, आह्वानन, स्थापन और सन्निधीकरण मुद्रा तथा जल, चंदन आदि अष्ट द्रव्य चढ़ाने की विधि को भी गुरुओं से सीख लेना चाहिये।

आगे दिये गये चित्र अनुसार ही 1008 या 108 कलशों के लिए सफेद रांगोली से मंडल बनाकर उनपर कलश स्थापन कर श्रीपूज्यपादस्वामी के पंचामृत अभिषेक पाठ से अभिषेक विधि संपन्न करनी चाहिए।

इस पुस्तक के प्रस्तुत संस्करण में शिलान्यास विधि, 81 कलशों से वेदीशुद्धि की विधि और मंत्र भी मैंने अपनी बहुत पुरानी डायरी से (ब्र. सूरजमल के अनुसार) दे करके इसे परिपूर्ण बना दिया गया है। सो विद्वज्जन उसका भी उपयोग करें। शिलान्यास की विधि में नींव में पारा आदि सामग्री को रखने के मंत्र मैंने स्वयं बना दिये हैं।

कतिपय मुद्राओं के लक्षण–

(1) पंचगुरू मुद्रा–दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर एक दूसरे हाथ की अंगुलियों में फसावें और फिर उन गुथी हुई अंगुलियों को खड़ी करके दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली से बायें हाथ की मध्यमा अंगुली को दबावें, और बायें हाथ की तर्जनी अंगुली से दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली को दबायें। दायें हाथ के अंगूठे से बाएं हाथ की कनिष्ठा अंगुली को दबावें और बाएं अंगूठे से दाहिने हाथ की कनिष्ठा को दबायें और दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों को खड़ी करें और क्रम से अंगुलियों के युगलों पर निम्न मंत्र लिखें। भू, झं, वं, व्हः, पः फिर दोनों को मुद्रा सहित उल्टे करके उस मुद्रा पर दूध डालें और अमृत स्नान करें। इसे पंचगुरूमुद्रा कहते हैं।

(2) अग्नि मुद्रा–बायें हाथ की कनिष्ठा अंगुली पर दायें हाथ की कनिष्ठा को रखें और दायें हाथ की अनामिका एवं मध्यमा को बायें हाथ की कनिष्ठा के नीचे से निकालकर बायें हाथ की मध्यमा एवं अनामिका के ऊपर रखें और दायें हाथ की तर्जनी अंगुली को बायें हाथ के नीचे से निकालकर बायें हाथ के अंगुष्ठ एवं तर्जनी अंगुली से भिड़ाकर तीनों को खड़ी कर उसमें कपूर पकड़ें और

मन्त्रपूर्वक जलावें। इसे अग्नि मुद्रा कहते हैं।

(3) सुरभि मुद्रा–पहले दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर मिलाकर सब अंगुलियों को खड़ी करके दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली को बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में लगावें और बायें हाथ की तर्जनी अंगुली को दाहिनी हाथ की मध्यमा में लगावें और दाहिने हाथ की अनामिका को बायें हाथ की अनामिका के ऊपर से बायें हाथ की कनिष्ठा को लगावें और बायें हाथ की अनामिका को दायें हाथ की कनिष्ठा में लगावें, यह सुरभि मुद्रा है। इस मुद्रा को जल मंडल में दिखावें और सकलीकरण करते समय इससे अग्नि शांत की जाती है।

(4) ज्ञानमुद्रा–योग्य आसन पर बैठकर बायें हाथ को नाभि के पास सीधा रखें और दाहिने हाथ में माला लेकर तर्जनी अंगुली और अंगुष्ठ से ध्यानपूर्वक माला जपने को ज्ञानमुद्रा कहते हैं।

(5) शंखमुद्रा–दाएँ हाथ की तर्जनी अंगुली को मोड़कर अंगूठे के नीचे दबावें और शेष अंगुलियों को सीधी लम्बी करें इसको शंखमुद्रा कहते हैं। इससे आचमन होता है।

(6) अंकुशमुद्रा–दोनों हाथों की अंगुलियों को परस्पर मिलाकर दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को खड़ी कर शेष अंगुलियों को मोड़ लेवें। इसको अंकुशमुद्रा कहते हैं। इससे अमृत स्नान किया जाता है। कोई-कोई इसी को गुरूमुद्रा भी कहते हैं।

इसी प्रकार इस 'मंडल विधान प्रारम्भ विधि एवं हवन विधि' पुस्तक के आधार से विद्वान-विधानाचार्य प्रत्येक सिद्धचक्र, इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, तीनलोक आदि विधानों को करावें। साथ ही विधानकर्ता जातिच्युत, अंगहीन आदि दोषों से दूषित न हों, सज्जाति, सद्गृहस्थ हों तो नियम से विधान का फल देश, राज्य, राष्ट्र में शांति, सुभिक्ष और मंगलस्वरूप होगा तथा धन, सुख और यश की प्राप्ति होकर परलोक में स्वर्ग सुख एवं परम्परा से मोक्ष सुख भी प्राप्त होगा इसमें कोई संदेह नहीं है। विधानाचार्य, विधानकर्ता और विधान देखने वाले सभी मनवांछित सिद्धि को प्राप्त कर आत्मसिद्धि को प्राप्त करें यही मेरा मंगल आशीर्वाद है और यही मंगल कामना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ परतीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमतीमाताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लेक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने को थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तकआने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारीबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
1. मंगलाष्टकस्तोत्रम्	1
2. संध्यावंदन	2
3. पूजामुख विधि	8
4. सकलीकरण विधि	11
5. पंचामृत अभिषेक पाठ	14
6. शांतिधारा	23
7. अभिषेक के अनन्तर करने योग्य क्रियाएँ	26
8. नवग्रहशांति मंत्र	29
9. नवदेवता पूजा	30
10. पूजा अन्त्य विधि	35
11. ध्वजारोहण विधि	40
12. अंकुरारोपण विधि	43
13. घटयात्रा विधि	48
14. महामंडलाराधना	51
15. सिद्ध पूजा	56
16. सर्वसाधु पूजा	60
17. स्वस्तययन विधानम्	63
18. यज्ञदीक्षा विधान	65
19. भूमिशोधन	67
20. मंडप प्रतिष्ठा विधान	72
21. कुमुदादिद्वारपालानुकूलनं	73
22. जाप्यानुष्ठान प्रारम्भ विधि	75
23. हवन विधि	78
24. रथचालन विधि	99
25. मंगलाष्टकं	100

26. पुण्याहवाचन	102
27. व्रत ग्रहण करने का संकल्प	104
28. व्रत समापन विधि	104
29. उद्यापन के समय व्रत	104
30. निष्ठापन विधि	104
31. क्षेत्रपाल पूजा	107
32. अखण्डदीप प्रज्वालन का संकल्प मंत्र	109
33. तिलक लगाने का श्लोक	109
34. महाशांतिधारा	110
35. मंदिर एवं वेदी शुद्धि हेतु घटयात्रा और शुद्धि विधान विधि	120
36. शिलान्यासविधि	134
37. श्री विनायकयंत्र पूजा	141
38. 1008 कलश मांडने का नक्शा	149
39. 108 कलश मांडने का नक्शा	150
40. गणधर, सामान्य व तीर्थंकर कुण्ड	151
41. गंध यंत्रम तथा अग्नि मंडल का नक्शा	152
42. ध्वज गीत	153
43.	
44.	
45. पद्मावती माता की गोद भरने का भजन	154
46. लक्ष्मी माता की पूजन	157

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनांभोधींदवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः ।
धर्मः सूक्तिसुधाश्च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।2।।

नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमंतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरार्विंशति–
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः!
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।5।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जंबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नंदीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।7।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वंति पठंति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि।।9।।

।।इति श्री मंगलाष्टकम्।।

संध्यावंदन

–शम्भु छंद–

पूर्वाण्ह समय पावन जल से, निज हाथ-पैर-मुख धो करके।
वर्णोत्तम श्रावक पूर्व दिशा में, मुख कर बैठे आसन से।।
गुरुवर से कहे मंत्र से नित, संध्यावदंन जो करते हैं।
वे धर्मध्यान में रत मानव, नित स्वस्थ सुखी ही रहते हैं।।1।।

(दोनों हाथ जोड़कर ऐसा संकल्प करें।)

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मते अत्र स्थाने अमुक[1]स्य प्रपौत्रः अमुकस्य[2] पुत्रः अमुकगोत्रजोऽहँ[3] अमुकनामा[4] प्रातःसंध्यां वंदनं करिष्ये।

ॐ श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीये धारिणी हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं परिधानोत्तरीये धारयामि स्वाहा।

(इस मंत्र को बोलते हुए धोती और दुपट्टा ये दो वस्त्र धारण करें।)

ॐ क्ष्वीं भूः शुद्ध्यतु स्वाहा।

(भूमि पर कुछ बूंद जल छिड़कें।)

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा।

(आसन बिछावें।)

ॐ ह्रीं अर्हं ह्युं ह्यूं णिसिहि णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा।

(आसन पर बैठें।)

ॐ मम समस्तपापक्षयार्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं पौर्वाण्हिक-संध्याचरणं करिष्ये।

(यह मंत्र बोलकर संकल्प करें।)

जलयंत्र बनाने की विधि–

जटांतौ विंदुसंयुक्तौ कला वं पं सुवेष्टितौ।
सोममध्ये लिखित्वांभो मध्ये स्नानादिकं चरेत्।।

1. बाबा का नाम लेवें। 2.पिता का नाम लेवें। 3. अपने गोत्र का नाम लेवें। 4. अपना नाम लेवें।

यह श्लोक बोलते हुए थाली या रकेबी में सीधे हाथ की मध्यमा उंगली से अर्धचंद्र बनावें। उसके बीच में झं ठं, अधोरेखा पर दक्षिण से 16 स्वर और ऊपर की रेखा पर मध्य में वं पं लिखें। उसमें थोड़ा पानी डालकर उसी से आगे के मंत्र बोलकर शुद्धि करें।

इवीं क्ष्वीं हं सः।

(यह मंत्र बोलकर जलयंत्र को सुरभि मुद्रा दिखाना।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा इदं समस्ततीर्थनदीजलं भवतु स्वाहा।

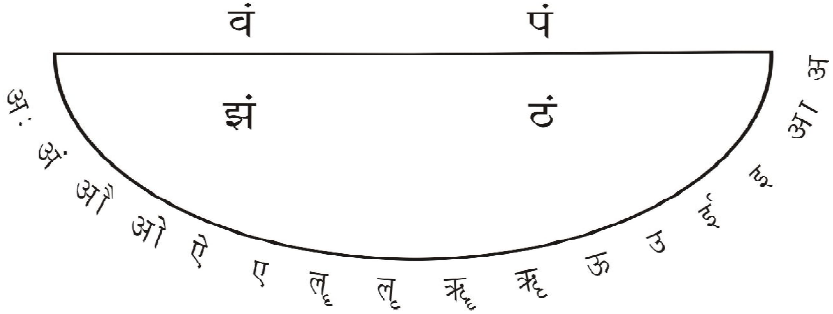

(जलयंत्र है।)

ॐ ह्रीं लां पं व्हः पः इवीं क्ष्वीं स्वाहा।

(शंखमुद्रा से बिन्दुमात्र जल लेकर तीन बार मुंह में डालें।)

द्वादशांगस्पर्शन–

ॐ ह्रीं इवीं–इस मंत्र को पढ़कर सीधे हाथ के अंगूठे में मूल में पानी लगाकर मुख बंद कर तीन बार पोछें।

क्ष्वीं–यह मंत्र बोलकर अंगूठा एवं तर्जनी इन दोनों को मिलाकर शेष तीन उंगलियों से मुख का स्पर्श करें।

वं मं–यह मंत्र बोलते हुए अंगूठे और अनामिका को मिलाकर जल समेत क्रम से दायें-बायें नेत्र का स्पर्श करें।

हं सं–यह मंत्र बोलते हुए अंगूठा और देशनी अंगुली से दायें-बायें नासा का स्पर्श करें।

तं पं–यह मंत्र बोलते हुए अंगूठा और कनिष्ठा अंगुली से क्रम से दायें-बायें कान का स्पर्श करें।

द्रां–इस मंत्र को बोलते हुए अंगूठे से नाभि का स्पर्श करें।

द्रीं–इस मंत्र को बोलकर हाथ के तल भाग से हृदय का स्पर्श करें।

हं सः–इस मंत्र को बोलते हुए दाहिने हाथ की सर्व अंगुलियों के अग्रभाग से क्रम से दाहिनी एवं बायीं भुजा के अग्र भाग का स्पर्श करें।

स्वाहा–इस बीजपद को बोलते हुए सर्व अंगुलियों से शिर का स्पर्श करें।

(जल यंत्र का जल ले-लेकर इन मंत्रों से क्रम-क्रम से बारह अंगों का स्पर्श करना है।)

पुनः प्राणायाम विधि से णमोकार मंत्र को जपें।

णमोकार मंत्र को जपने की विधि–

अंगूठा और अनामिका से नाक के दोनों स्वरों को पकड़कर दक्षिण स्वर से हवा को ऊपर की ओर खींचने को पूरक कहते हैं, पूरक के समय महामंत्र 'णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं' इन दो पदों का स्मरण करना चाहिए।

पूरक द्वारा खींची हुई वायु को 'णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं' इन दोनों का स्मरण करते हुए धीरे-धीरे नाभि प्रदेश में रोकने को कुंभक कहते हैं। पुनः उस रोकी हुई वायु को 'णमो लोए, सव्व साहूणं' इस पद का स्मरण करते हुये धीर-धीरे बाहर निकालें, इसे रेचक कहते हैं।

अथवा—ॐ भूर्भुवः स्वः असि आ उ सा प्राणायामं करोमि स्वाहा।

(इस मंत्र का तीन बार उच्चारण कर कुंभक, पूरक और रेचक इन तीनों को करता हुआ प्राणायाम करें।)

पुनः अंकुशमुद्रा से जल लेकर मस्तक पर और सर्वांग पर जल डालते हुए यह मंत्र पढ़ें–

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय स्वाहा।

(यह प्रोक्षण मंत्र है।) पुनः–

ॐ झं वं ह्वः पः हः स्वाहा। (दिगंजलिः)

इस मंत्र को बोलकर अंजुलि में जल जेकर सब दिशाओं में डाले।

पुनः ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पंचपरमेष्ठी को तीन बार जल से अर्घ देवें। पुनः आगे के 15 मंत्रों को क्रम से बोलते हुए दाहिने हाथ से थोड़ा-थोड़ा जल चढ़ाते हुए तर्पण करें–

1. ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा। 2. ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा। 3. ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा। 4. ॐ ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा। 5. ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यः स्वाहा। 6. ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यः स्वाहा। 7. ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा। 8. ॐ ह्रीं जिनचैत्येभ्यः स्वाहा। 9. ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यः स्वाहा। 10. ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनेभ्यः स्वाहा। 11. ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानेभ्यः स्वाहा। 12. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रेभ्यः स्वाहा। 13. ॐ ह्रीं सम्यक्तपोभ्यः स्वाहा। 14. ॐ ह्रीं अस्मद् गुरुभ्यः स्वाहा। 15. ॐ ह्रीं अस्मद्विद्यागुरुभ्यः स्वाहा।

(इस प्रकार तर्पण मंत्र हुये) पुनः–

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

(इस अपराजित मंत्र का 108 बार जाप करें अथवा 9 बार पढ़ें)

आर्याछंद–

पूर्व दिशा विदिशा में, केवलि जिन सिद्ध साधुगण जितने।
ऋद्धि सहित योगीश्वर, उन सबको नित्य मैं वंदूँ।।1।।

(यह श्लोक बोलकर पूर्व दिशा में तीन आवर्त एक शिरोनति करके नमस्कार करें। ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम और उत्तर दिशा में नमस्कार करें।)

दक्षिण दिशि विदिशा में, केवलि जिन सिद्ध साधुगण जितने।
ऋद्धि सहित योगीश्वर, उन सबको नित्य मैं वंदूँ।।2।।
पश्चिम दिश विदिशा में, केवलि जिन सिद्ध साधुगण जितने।
ऋद्धि सहित योगीश्वर, उन सबको नित्य मैं वंदूँ।।3।।
उत्तर दिश विदिशा में, केवलि जिन सिद्ध साधुगण जितने।
ऋद्धि सहित योगीश्वर, उन सबको नित्य मैं वंदूँ।।4।।

(इसके बाद बने हुए गंध यंत्र में चंदन रखकर या गंध यंत्र बनाकर उस चंदन को लेकर दाहिने हाथ की अनामिका से आगे के एक-एक मंत्र बोलते हुए उन-उन स्थानों में चंदन का तिलक लगावें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरिहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(ललाट में तिलक लगावें।)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(हृदय में लगावें।)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(दाहिनी भुजा में लगावें।)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(बायीं भुजा में लगावें।)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा।
(कंठ में लगावें।)
यह संध्यावंदन विधि पूर्ण हुई।

पूजामुखविधि

निःसंग हो हे नाथ! आप दर्श को आया।
स्नान त्रय से शुद्ध धौत वस्त्र धराया।।
त्रैलोक्य तिलक जिनभवन की वंदना करूँ।
जिनदेवदेव को नमूँ संपूर्ण सुख भरूँ।।1।।

(जिनमंदिर के निकट पहुँचकर यह श्लोक पढ़कर मंदिर को नमस्कार कर चारों दिशा में तीन-तीन आवर्त एक-एक शिरोनति करते हुए मंदिर की तीन प्रदक्षिणा देवें पुनः पैर धोकर अंदर प्रवेश करें।)

ॐ ह्रीं हुँ हूँ णिसिहि स्वाहा।

यह मंत्र बोलकर मंदिर में प्रवेश कर नीचे लिखा मंत्र पढ़कर हाथ धोवें। हाथ धोने का मंत्र—

ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा।

पुनः हाथ जोड़कर दर्शन स्तोत्र पढ़ें–

हे नाथ! आप दर्श करके हर्ष हो रहा।
आनंद अश्रु झड़ रहे सब पाप धो रहा।।
जीवन सफल हुआ मैं आज धन्य हो गया।
प्रभु भक्ति से निज सौख्य में निमग्न हो गया।।2।।

पुनः ईर्यापथ शुद्धि करें–

पडिक्कमामि भंते। इरियावहियाए विराहणाए अणागुत्ते, अइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे, बीजुग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चार-पस्सवण खेलसिंघाणवियडिपइट्ठावणियाए जे जीवा एइंदिया वा, बेइंदिया वा, तेइंदिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, परिदाविदा वा, किरिंच्छिदा वा, लेस्सिदा वा, छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा, ठाणचंकमणदो वा, तस्स उत्तरगुणं तस्स पायच्छित्तकरणं तस्स विसोहिकरणं, जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

इच्छामि भंते। आलोचेउं इरियावहियस्स पुव्वुत्तर-दक्खिणपच्छिम-चउदिसु विदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिट्ठिणा भव्वेण दट्ठव्वा। पमाददोसेण डबडबचरियाए पाणभूदजीवसत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

ॐ क्ष्वीं भूः शुद्ध्यतु स्वाहा। (बैठने की जगह जल छिड़कें।)

ॐ ह्रीं क्ष्वीं आसनं निक्षिपामि स्वाहा। (आसन बिछावें।)

ॐ ह्रीं ह्यूं ह्यूं णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा।(आसन पर बैठें।)

ॐ ह्रीं मौनस्थिताय स्वाहा (मौन ग्रहण करें अर्थात् पूजा-पाठ के सिवाय अन्य बातें न करें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा। (पूजा के बर्तन धोवें या उन पर जल छिड़कें।)

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इवीं क्ष्वीं हं सः असि आ उसा समस्त तीर्थ पवित्रजलेन शुद्धपात्रनिक्षिप्तपूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा सामग्री पर जल छिड़कें।)

अथकृत्यविज्ञापना–

भगवन्! नमोऽस्तु ते एषोऽहं जिनेन्द्रपूजावंदनां कुर्याम्।

पुनः सामायिक स्वीकार करें—

–बसंततिलका छंद–

संसार के भ्रमण से अति दूर हैं जो।
ऐसे जिनेन्द्र पद में नित ही नमूँ मैं।।
संपूर्ण सिद्धगण को सब साधुओं को।
वंदूं सदा सकल कर्म विनाश हेतू।।1।।
है साम्यभाव सब प्राणी में हमारा।
है ना कभी किसी से मुझे वैर किंचित्।।
संपूर्ण आश तज के शुभभाव धारूँ।
संसार दुःख हर सामायिक करूँ मैं।।2।।

पुनः कार्य का विज्ञापन करें—

भगवन्! नमोस्तु प्रसीदंतु प्रभुपादा वंदिष्येऽहं। एषोऽहं तावच्च सर्वसावद्ययोगाद्विरतोस्मि।

अथ जिनेन्द्रपूजावंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा-वंदनास्तवसमेतं श्रीमद्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धांणं णमो आइरियाणं।
ण्मो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगल, चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि।

जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि। (9 बार णमोकार मंत्र का जाप्य।)

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिये विहुयरयमले महप्पण्णे।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो।।1।।

सिद्धभक्ति–

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्हि दंसणह्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।2।।

इच्छामि भंत्ते। सिद्धभत्ति काओसग्गो कओ तस्स आलोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयह्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इति पूजामुखविधिः।

(यह पूजा प्रारंभ विधि हुई।)

सकलीकरणविधि

अर्हंतो मंगलं कुर्युः सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि साधवो मम मंगलम्।।1।।

झं वं ह्वः पः हः लिखे, गुरुमुद्रा के अग्र।
झरते अमृत से करे, मंत्रस्नान पवित्र।।2।।

*(पंचगुरुमुद्रा बनाकर उनके अग्रभागों पर झं वं ह्वः पः हः ये पाँच मंत्र क्रम से लिखें। उस मुद्रा को मस्तक पर रखकर यह चिंतवन करें कि इन अक्षरों से अमृत झर रहा है। पुनः नीचे लिखे मंत्र को पढ़ते हुये अमृत स्नान करें।)

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(यह अमृतप्रोक्षण विधि हुई)

है अग्निमंडल त्रिकोण सरेफ दीखे।
ओंकार मध्य त्रय कोणहि साथिया हैं।।
रेफाग्र से निकल अग्नि जला रही है।
ये सात धातुमय देह जले हमारा।।3।।

दोहा– **नाभि कमल पर स्वर लिखे, अर्हं मध्य लसंत।**
इससे अग्नि निकल कर, त्रयविध देह दहंत।।

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते जिनभास्करस्य बोधसहस्रकिरणैः मम कर्मेंधनद्रव्यं शोषयामि घे घे स्वाहा।

(द्रव्यशोषणं – कर्मद्रव्य सूख रहे हैं, ऐसा सोचें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं हम्ल्व्र्यूं जं जं सं सं दह दह विकर्ममलं दह दह दुःखं दह दह हूँ फट् घे घे स्वाहा।

---

* एक रकेबी में केशर से जलयंत्र बनाकर निम्न मंत्र द्वारा इसमें जलधारा छोड़ें। पनुः "ॐ अमृते" आदि मंत्र पढ़ते हुए अंकुशमुद्रा के द्वारा जल को मस्तक पर डालते हुए शुद्धि करें। जल शुद्धि मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं हूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हं नमः समस्त गंगा सिन्ध्वादि नदी-नदतीर्थजलं भवतु स्वाहा।(जलयंत्र इसी पुस्तक के 4 पृष्ठ पर बना है)

(यह मंत्र बोलकर कपूर जलाकर सामने रकेबी में रखकर ऐसा चिंतन करें कि कर्म ईंधन जल रहे हैं।)

वायुमंडल से पवन, चले स्वाय से व्याप्त।
सर्वकर्मरज उड़ चली, आत्म शुद्धि हो प्राप्त।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनप्रभंजनाय कर्मभस्मविधूननं कुरु कुरु स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर ऐसा सोचें कि कर्म जलने से जो भस्म हुई थी वह उड़ गई।)

अमृतवर्षापूर से, धुले कर्मरज सर्व।
आत्मा शुद्ध स्फटिक सम, मिलें स्वगुण सर्वस्य।।5।।

(मेघ से अमृत की वर्षा होने से आत्मा के कर्मरज धुल गये हैं और वह स्फटिक सम स्वच्छ मूर्ति हो गई है, ऐसा सोचें।)

(पुनः पाँचों अंगुलियों में मूल से लेकर तीनों रेखा व अग्रभाग पर क्रम से निम्नलिखित मंत्र लिखें।)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं। ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं। ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं।

पुनः निम्न मंत्र बोलते हुए दोनों हाथों को जोड़कर मिला लेवें–

ॐ ह्रीं अर्हं वं मं हं सं तं पं अ सि आ उ सा हस्तसंघटनं करोमि स्वाहा।

पुनः जुड़े हुए हाथों से ही नीचे लिखे मंत्र बोलते हुए उन अंगों का स्पर्श करें–

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं स्वाहा। (हृदय का स्पर्श करें।)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा। (ललाट का स्पर्श करें।)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा। (सिर के दक्षिण भाग का स्पर्श करें।)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा। (सिर के पश्चिम भाग का स्पर्श करें।)
ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं स्वाहा। (सिर के पश्चिम भाग का स्पर्श करें।)

पुनः इन्हीं उपर्युक्त मंत्रों को बोलते हुए क्रम से सिर के मध्य भाग, सिर के पूर्व दक्षिण, पश्चिम और उत्तर भागों का स्पर्श करें। इसे अंग न्यास कहते हैं।

पुनः बायें हाथ की तर्जनी अंगुली पर "अ सि आ उ सा" इन पाँच मंत्रों को लिखकर सब अंगुलियों को बंद कर इस तर्जनी को ही लम्बी कर निम्नलिखित मंत्र बोलते हुये दशों दिशाओं में दिखाते जावें–

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। (पूर्व दिशा में)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (आग्नेय दिशा में)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं। (दक्षिण दिशा में)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं। (नैऋत दिशा में)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं। (पश्चिम दिशा में)
ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं। (वायव्य दिशा में)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (उत्तर दिशा में)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं। (ईशान दिशा में)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं। (अधो दिशा में)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं। (ऊर्ध्व दिशा में)

यह दिग्बंधन हुआ।

इस विध सकलीकरण से, रक्षित होते भव्य।
इष्ट क्रिया करते हुए, न हों किसी से बध्य।।6।।

पुनः नीचे लिखे मंत्र से पुष्प, अक्षत को सात बार मंत्रित कर परिचारक-पूजकों के मस्तक पर डालें–

मंत्र–ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

यह पूजकों की रक्षा हुई।

पुनः सरसों हाथ में लेकर नीचे लिखे मंत्र से मंत्रित कर दशों दिशा में क्षेपण करें–

मंत्र–ॐ हूँ फट् किरटिं घातय घातय पर विघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखंडान् कुरु-कुरु आत्मविद्यां रक्ष-रक्ष परविद्यां छिंद छिंद परमंत्रान् भिंद भिंद क्षः फट् स्वाहा।

इस प्रकार सर्वविघ्न उपशमन विधि हुई।

यह सकलीकरण पूर्ण हुआ।

पंचामृत अभिषेक पाठ

(श्री पूज्यपाद आचार्य विरचित)
(भावानुवादकर्त्री–आर्यिका ज्ञानमती)

– शंभुछंद–

अर्हंत देव को प्रणमन कर, जल से स्नान कर शुद्ध हुआ।
सन्मंत्रस्नान व्रतस्नान कर, जिन गंधोदक से शुद्ध हुआ।।
आचमन अर्घ कर धुले धवल, धोती व दुपट्टे को पहने।
जिनमंदिर की त्रय प्रदक्षिणा कर, नमूँ शीश नत विधिवत् मैं।।1।।
जिनगृह के द्वार खोल वेदी का, वस्त्र हटा प्रभु दर्श करूँ।
ईर्यापथ शुद्धि व सिद्ध भक्ति, विधि से कर सकलीकरण करूँ।।
जिनयजन हेतु भूशुद्धि अर्चना द्रव्य पात्र अरु आत्म शुद्धि।
करके भक्ती से जिन अभिषव, प्रारंभूँ मैं कर त्रिधा शुद्धि।।2।।

सौगंध्य-संगत-मधुव्रत-झंकृतेन।
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्य।
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानां।।

(यह श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से भगवान के चरणों में चंदन लगाकर उसी चंदन से अपने माथें में तिलक करें।)

तिलक लगाने के मंत्र–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरिहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (ललाटे)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (हृदये)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा।(दक्षिण भुजे)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (वाम भुजे)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा। (कंठे)

(मात्र ललाट में ही तिलक लगाना हो तो प्रथम मंत्र ही बोलें।)

पूजन की थाली में स्वास्तिक बनाने की विधि–

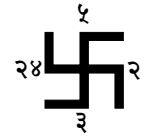

निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए स्वस्तिक के चारों दिशाओं में अंक लिखें।

रयणत्तयं च वंदे, चउवीसजिणं च सव्वदा वंदे।
पंचगुरूणां वंदे, चारणचरणं सदा वंदे।।

ॐ श्री जिनेन्द्र मुझ चित्त पवित्र कीजे।
था स्नानपीठ तव मेरु गिरीन्द्र ऊँचा।।
जन्माभिषेक करके सुर इंद्र हर्षे।
मैं भी करूँ न्हवन आज प्रभो तुम्हारा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (प्रस्तावना हेतु पुष्पांजलि क्षेपण करे।)

ॐ तीर्थकृत न्हवन भूमि पवित्र हेतू।
शुद्धी करूँ जल लिये बहु पुण्य संचूँ।।
अग्नि प्रजाल पुनि नाग सुतर्पणं भी।
श्री क्षेत्रपाल अरचूँ शुचि अर्घ देके।।4।।

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्री शांतिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यो नमो भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

(जल छिड़क कर भूमि शोधन करना।)

ॐ ह्रीं क्षीं अग्निं प्रज्वालयामि निर्मलाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं वन्हिकुमाराय स्वाहा।
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा। (कपूर जलाना।)
ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः नागेभ्यः स्वाहा। (नाग संतर्पण करना।)
ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा। (क्षेत्रपाल को अर्घ चढ़ाना।)

अर्हंतदेव अर्चा विधि विघ्नहारी।
इन्द्रादि दस दिशि सुदर्भ धरूँ रुची से।।

यज्ञोपवीत बहु आभरणादि धारूँ।
भू अर्चके जिन जजूं अब इंद्र होके।।5।।

ॐ ह्रीं क्रों दर्पमथनाय नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं नीरजसे नमः स्वाहा। (जलं)
ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः स्वाहा। (चंदनं)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः स्वाहा। (अक्षतं)
ॐ ह्रीं विमलाय नमः स्वाहा। (पुष्पं)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः स्वाहा। (नैवेद्यं)
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा। (दीपं)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः स्वाहा। (धूपं)
ॐ ह्रीं अभीष्ट फलदाय नमः स्वाहा। (फलं)
ॐ ह्रीं भूमि देवतायै नमः । अर्घं...

इस प्रकार दशों दिशाओं में दर्भ स्थापना, अष्टविध अर्चाभूमि पूजा करें।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा।
ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा।

(इन मंत्रों को पढ़कर यज्ञोपवीत धारण करें। आभूषण-मुकुट, हार, मुद्रिका आदि पहनें।)

ॐ ह्रीं इन्द्रोऽहं स्वाहा। (यह मंत्र बोलकर मैं इंद्र हूँ ऐसा समझें।)

ये चार स्वर्ण कलशे जल से भरे हैं।
ये भव्य क्षेमकर चारहि कोण थापूँ।।
श्री मेरु पे रुचिर पांडुक है शिला जो।
श्रीपीठ तद्वत सुथाप सुधोय पूजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(चार कोनों में चार कलश स्थापित करना।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रें ह्रौं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।

(कलशों को अर्घ चढ़ाना।)

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठः ठः श्रीपीठं स्थापयामि स्वाहा।

(अभिषेक के लिये जलोट[1] या थाली स्थापित करना)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रजलेन श्रीपीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा। (जल से श्रीपीठ का प्रक्षालन करना।)

ये नीर चंदन सुअक्षत पुष्प लेके।
नैवेद्य दीप वर धूप मधुर फलों से।।
श्री पीठ अर्चन करूँ जिननाथ की ये।
इंद्रादि वंद्य मुनिवंदित सौख्यकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा।

(श्रीपीठ के लिए अर्घ चढ़ाना।)

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय स्वाहा।

(श्रीपीठ में दर्भ स्थापित करना या पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीकारवर्ण लिखके वसु अर्घ अर्पूं।
जैनेद्रबिम्ब इस पे वर भक्ति थापूँ।।
श्रीपाद पद्मयुग को प्रक्षाल करके।
त्रैलाक्य ईश पद पंकज को नमूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीलेखनं करोमि स्वाहा। (श्रीपीठ में श्रीकार लिखें।)

ॐ ह्रीं श्रीयंत्रं पूजयामि स्वाहा। (श्रीकार के लिये अर्घ चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं ध्यातृभिः अभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

ॐ ह्रीं धात्रे वषट् नमः स्वाहा।

(जिनप्रतिमा के चरण का स्पर्श करें।)

ॐ ह्रीं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(श्रीवर्ण पर जिनप्रतिमा को विराजमान करें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः पवित्रतरजलेन पात्रद्रव्यशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(जल छिड़ककर पात्र व द्रव्य की शुद्धि करें।)

1. जिसमें भगवान को विराजमान कर अभिषेक करते हैं, उसे श्रीपीठ कहते हैं, उसे जलोट भी कहते हैं।

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रजलेन श्रीपाद प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(जिन प्रतिमा के चरणों का प्रक्षालन करें।)

दूर्वादि धौत सित तंदुल स्वस्तिकादी।
सरसों समेत कर्पूर प्रजाल करके।।
रक्षामणी त्रिजग के जिनराज की मैं।
नीराजना विधि सुआरति मैं उतारूँ।।9।।

ॐ ह्रीं क्रों समस्तनीराजनद्रव्यैर्नीराजनं करोमि दुरितमस्माकमपहरतु भगवान् स्वाहा।

(थाली में दूब, अक्षत, सरसों, स्वस्तिक आदि रखकर कपूर जलाकर आरती उतारते हुये नीराजना करें।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं पाद्यमर्घं करोमि नमोऽर्हदभ्यः स्वाहा।

(अर्घ चढ़ावें।)

पानीय गंध सित तंदुल पुष्पमाला।
मिष्ठान्न दीप वर धूप फलादि भरके।।
अर्हंत देव चरणाब्जयुगं जजूँ मैं।
इंद्रादिवंद्य जिनवंद निजात्म पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः परमात्मकेभ्यः स्वाहा। (चंदनं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनादिनिधनेभ्यः स्वाहा। (अक्षतं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः स्वाहा। (पुष्पं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतज्ञानेभ्यः स्वाहा। (नैवेद्यं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतदर्शनेभ्यः स्वाहा। (दीपं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतवीर्येभ्यः स्वाहा। (धूपं)

ॐ ह्रीं अर्हन्नमः अनंतसौख्येभ्यः स्वाहा। (फलं)

(यह अष्टविध अर्चन हुआ।)

उदकचंदनतंदुल.....अर्घं।

पूर्वादि दशदिक् क्रमात् दश दिक्कपाला।
ये इंद्र अग्नि यम नैऋत वरूण नामा।।
वायू कुबेर ईशान फणीन्द्र चंद्रा।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा लो यज्ञभागा।।11।।

ॐ ह्रीं क्रों प्रसस्तवर्णसर्वलक्षण संपूर्णस्वायुधवाहनवधूचिन्हसपरिवारा इंद्राग्नियमनैऋतवरूणवायुकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमनामदशलोकपाला आगच्छत आगच्छत संवौषट् स्वस्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः मम अत्र सन्निहिता भवत भवत वषट् इदं अर्घं पाद्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा।

(इंद्र आदि दस दिक्पाल देवों को अर्घ चढ़ावें।)

ॐधर्म चक्रपति के अभिषेक हेतू।
संगीत गीत युत वाद्य सुघोष फैला।।
मैं पूर्ण कुंभ विधि से कर में उठाऊँ।
उद्धार हेतु यह कुंभ जगत्त्रयी का।।12।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्णकलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(जल से भरा पूर्ण कलश हाथ में उठावें।)

जल से अभिषेक–

जैनेन्द्र देव अभिषेक विधि करूँ मैं।
कल्याण नीरभृत निर्झरणी यही है।।
त्रैलोक्य भव्यजन को सुख शांति देती।
स्वामी करूँ न्हवन मैं जल से तुम्हारा।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो जलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

नारियल के जल से अभिषेक–

जो चन्द्रकांतमणि के जल सम धवल है।
पीयूषवत् अतुल स्वाद लिये अमल हैं।।

इस नालिकेर रस से अभिषक करके।
चाहूँ प्रभो! मुझ वचन इसके सदृश हों।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो नालिकेररसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

इक्षुरस का अभिषेक–

तत्काल पेलकर पात्र भरा लिया है।
माधुर्य पूर्णयुत ये रस इक्षु का है।।
हे नाथ! आप अभिषेक करूँ रुचि से।
मेरे वचन त्रिजग कर्ण रसायनं हों।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो इक्षुरसाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

घृत से अभिषेक–

अत्यंत पुष्टिकर ये घृत तृप्तिकारी।
संताप दूरकर अतिशय कांति देता।।
घी से जिनेन्द्र अभिषेक करूँ अभी मैं।
दीर्घायु हो अतुल शक्ति बढ़े इसी से।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं इवीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो घृताभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

दूध से अभिषेक–

पूर्णा शशांक किरणों सम कांति धारे।
ये दूध उत्तम रसायन विश्व में है।।
हे नाथ! क्षीरघट से अभिषेक करके।
मैं कामधेनु सम वांछित प्राप्त करलूँ।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो दुग्धाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

दधि से अभिषेक–

जैनेन्द्र कीर्ति यह एकत्रित हुई क्या?
क्षीरोदधी पय हुआ बस वर्फ सम ही।।
अति मंगलीक दधि से अभिषेक करके।
त्रैलोक्य मंगलमयी निज सौख्य पाऊँ।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो दधिअभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

सर्वौषधि से अभिषेक–

एला लवंग कर्पूर सुचंदनादी।
नाना सुगंधवर वस्तु मिलाय करके।।
सर्वौषधि मिलितसार कषाय जल से।
संसाररोगहर हेतु करूँ न्हवन मैं।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपतेः सर्वौषधिअभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन...अर्घं

चार कोण कलशों से अभिषेक–

तृष्णा निवारण करें बहु पुण्यकारी।
मांगल्यद्रव्य वर मिश्रित कोण कलशे।।
त्रैलोक्य नाथ जिन का अभिषेक करके।
पा जाऊँ शीघ्र निज के सुचतुष्टयों को।।21।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमोऽर्हते भगवते मंगलोत्तमकरणाय कोणकलशजलाभिषेकं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

चंदन विलेपन–

त्रैलोक्य पुण्यप्रद चंदन को घिसा है।
सौभाग्यकारि जिनबिम्ब विलेप हेतू।।
सौरभ्य प्राप्त कर लूँ निज के गुणों की।
हे नाथ! आप गुणसौरभ विश्वव्यापा।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय झं झं ह्वीं क्ष्वीं हं सः त्रैलोक्यस्वामिनो कल्कचूर्णैः उद्वर्तनं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा। उदकचंदन ....अर्घं।

वासन्तिकाजातिसुरेशवृन्दैर्बन्धूकवृन्दैरपि चम्पकाद्यैः।
पुष्पैरनेकैरलिभिर्हृताग्रैः श्रीमज्जिनेन्द्रांघ्रियुगं यजेऽहम्।।

पुष्पवृष्टि–ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिं करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

(पुष्पवृष्टि करें।)

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहर पुष्पदीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण।
त्रैलोक्यमंगलसुखालय कामदाह-मारार्तिकं तव विभोरवतारयामि।।

आरती–ॐ ह्रीं क्रों समस्तनीराजनद्रव्यैः नीराजनं करोमि दुरितं अस्माकं अपहरतु भगवान् स्वाहा।

(आरती उतारें।)

सुगन्धित जल से अभिषेक–

कर्पूर चूर्ण मलयागिरि चंदनादी।
नाना सुगंधिकर द्रव्य मिलाय लीने।।
गंधाम्बु से नित करूँ अभिषेक प्रभु का।
कैवल्यज्ञानमय आत्म ज्योति पाऊँ।।22।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हन् अ सि आ उ सा नमः मम सर्वशांतिं कुरु कुरु, मम सर्वतुष्टिं कुरु कुरु, मम सर्वपुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा स्वधा। उदकचंदन.....अर्घं

(यहाँ शांतिधारा करें।*)

गंधोदक लगाने का श्लोक व मंत्र–

मानो हिमाचल महागिरि से गिरी है।
आकाशगंग जलधार पवित्र गंगा।।
अर्हंत का न्हवन नीर इसे नमूँ मैं।
मैं उत्तमांग उर में दृग में लगाऊँ।।23।।

ॐ नमोऽर्हत्परमेष्ठिभ्यः मम सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा।

(आत्मा को पवित्र करें–गंधोदक को सिर पर, ललाट में, गले में, वक्षस्थल में व नेत्रों में लगावें।)

ॐ ह्रीं ध्यातृभिरभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

शांतिधारा

रचयित्री–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय, सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ-सा नमः मम (...)[1] सर्वज्ञानावरण कर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदर्शनावरण कर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववेदनीयकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमोहनीयकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वायुःकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वनामकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वगोत्रकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वान्तरायकर्म छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वक्रोधं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमानं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमायां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व लोभं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमोहं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वरागं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वद्वेषं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वगजभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसिंहभयं

1. जिसके लिये शांतिधारा करनी हो उसका नाम लेवें।

छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वाग्निभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसर्पभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वयुद्धभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसागरनदीजलभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वजलोदरभगंदर-कुष्ठकामलादिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वनिगडादिबंधनभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वचतुश्चक्रिका-दुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वविषाक्तवाष्प-क्षरणभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभूकंपदुर्घटनाभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभूतपिशाचव्यंतरडाकिनीशाकिन्यादिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वधनहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वव्यापारहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वराजभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वचौरभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुष्टभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वशत्रुभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वशोकभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्ववैरं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुर्भिक्षं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वमनोव्याधिं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वआर्तरौद्रध्यानं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुर्भाग्यं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वायशः छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वपापं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्व अविद्यां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वप्रत्यंवाय छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वकुमतिं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वक्रूरग्रहभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वदुःखं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि सर्वापमृत्युं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणित्रिभुवनगुरूत्रिभुवनजनताअभयदान-दायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहति-महावीरसन्मतिवीरातिवीरवर्धमान-नामालंकृत-श्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे ..... प्रदेशे ..... नामनगरे वीरसंवत् ..... तमे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ .....वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! सुभिक्षं कुरु कुरु मनः समाधिं कुरु कुरु धर्मशुक्लध्यानं कुरु कुरु सुयशः कुरु कुरु सौभाग्यं कुरु कुरु अभिमतं कुरु कुरु पुण्यं कुरु कुरु विद्यां कुरु कुरु आरोग्यं कुरु कुरु श्रेयः कुरु कुरु सौहार्दं कुरु कुरु सर्वारिष्ट ग्रहादीन् अनुकूलय अनुकूलय कदलीघातमरणं घातय घातय आयुर्द्रावय द्रावय सौख्यं साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्य सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

1. नित्य में हों तो 'नित्य पूजावसरें' बोलें। यदि किसी विधान के प्रसंग में हैं तो उस विधान का यहाँ पर नाम लेवें।

अभिषेक के अनन्तर करने योग्य क्रियाएँ
(श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा कथित)

विधिवत् अभिषेक करके नित्य पूजा के बाद अंत में जो विधि करनी चाहिए, उसके लिए ''अभिषेक पाठ'' में ही श्री पूज्यपाद स्वामी ने अंत में चार श्लोक दिये गये हैं, उन्हें देखकर विधि करना शास्त्रोक्त है।

निष्ठाप्यैवं जिनानां सवनविधिरपि प्रार्च्यभूभागमन्यं।
पूर्वोक्तैर्मंत्रयंत्रैरिव भुवि विधिनाराधनापीठयंत्रतम्।।
कृत्वा सच्चंदनाद्यैर्वसुदलकमलं कर्णिकायां जिनेन्द्रान्।
प्राच्यां संस्थाप्य सिद्धानितरदिशि गुरून् मंत्ररूपान् निधाय॥।।

जैनं धर्मागमार्चानिलयमपि विदिक्पत्रमध्ये लिखित्वा।
बाह्ये कृत्वाथ चूर्णैः प्रविशदसदकैः पंचकं मंडलानाम्।।
तत्र स्थाप्यास्तिथीशा ग्रहसुरपतयो यक्षयक्ष्यः क्रमेण।
द्वारेशा लोकपाला विधिवदिह मया मंत्रतो व्याह्वियन्ते।।2।।

एवं पंचोपचारैरिह जिनयजनं पूर्ववन्मूलमंत्रे-
णापाद्यानेकपुष्पैरमलमणिगणैरंगुलीभिः समंत्रैः।।
आराध्यार्हंतमष्टोत्तरशतममलं चैत्यभक्त्यादिभिश्च।
स्तुत्वा श्री शांतिमंत्रं गणधरवलयं पंचकृत्वः पठित्वा।।3।।

पुण्याहं घोषयित्वा तदनु जिनपतेः पादपद्मार्चितां श्री-
शेषां संधार्य मूर्ध्ना जिनपतिनिलयं त्रिःपरीत्य त्रिशुद्ध्या।
आनम्येशं विसृज्यामरगणमपि यःपूजयेत् पूज्यपादं।
प्राप्नोत्येवाशु सौख्यं भुवि दिवि विबुधो देवनंदीडितश्रीः।।4।।

इस विधि जिनवर अभिषेक व पूजा विधि को निष्ठापित करके।
वर सिद्धचक्र यंत्रादिक की मंत्रों से आराधन करके।।
चंदन से अठदल कमल बना कर्णिका मध्य ''अर्हन्'' लिखिये।
पूरब दिश सिद्ध इतर त्रयदिश में त्रयविध गुरुओं को लिखिये।।1।।

विदिशा दल में जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा जिनगृह लिखिये।
इस बाहर चूर्णादिक से पाँच कोष्ठक का शुभ मंडल रचिये।।
उसमें पंद्रह तिथिसुर नवग्रह बत्तीस सुरेन्द्र यक्ष यक्षी।
द्वारेश लोकपालों की करता मंत्रों से आह्वान विधी।।2।।

इस विध पंचोपचार पूजन कर मूलमंत्र से जाप करो।
पुष्पों से मणिमाला या अंगुली से जप इकसौ आठ करो।।
फिर चैत्यपंचगुरुशांति भक्ति विधिवत् करके जिन आराधो।
वर शांति व गणधरवलय मंत्र को पाँच बार पढ़ आराधो।।3।।

पुण्याहवाचना कर जिनपदकमलार्चित श्रीशेषा[1] शिर धर।
जिन मंदिर की त्रिकरणशुद्धी से त्रय प्रदक्षिणा भी देकर।।
प्रभु को नम देवविसर्जन कर जो ''पूज्यपाद''[2] जिन को यजते।
वे ''देवनन्दि'' से पूजित श्री भू दिव के सौख्य प्राप्त करते।।4।।

इस प्रकार जिनेन्द्रदेव की पूजा विधि को पूर्ण करके पूर्वोक्त मंत्र-यंत्रों से विधिपूर्वक आराधनापीठ यंत्र की पूजा करे। पुनः चंदन आदि के द्वारा आठ दल का कमल बनाकर कर्णिका में श्री जिनेन्द्रदेव को स्थापित कर पूर्वदिशा में सिद्धों को, शेष तीन दिशा में आचार्य, उपाध्याय और साधु को विराजमान करके पुनः विदिशा के दलों में क्रम से जिनधर्म, जिनागम, जिनप्रतिमा और जिनमंदिर को लिखकर बाहर से चूर्ण से और धुले हुए उज्ज्वल चावल आदि से पंचवर्ण मंडल बना लेवें। इस कमल के बाहर पंचदश तिथिदेवता को, नवग्रहों को, बत्तीस इंद्रों को, चौबीस यक्षों को, चौबीस यक्षिणी को तथा द्वारपालों को और लोकपालों को विधिवत् मंत्रपूर्वक मैं आह्वानन विधि से बुलाता हूँ।

इस तरह पंचोपचारों से मंत्रपूर्वक जिन भगवान् का पूजन कर पूर्ववत् मूल मंत्रों द्वारा अनेक प्रकार के पुष्पों से, निर्मल मणियों की माला से या अंगुली से एक सौ आठ जाप्य करके अरहंतदेव की आराधना करे। पुनः चैत्यभक्ति आदि शब्द से पंचगुरु भक्ति और शांति भक्ति के द्वारा स्तवन

1. आसिका। 2. श्री पूज्यपाद और देवनंदि। ये दोनों नाम श्री पूज्यपादाचार्य के हैं।

करके शांतिमंत्र और गणधरवलय मंत्रों को पाँच बार पढ़कर पुण्याहवाचन की घोषणा करना, इसके बाद जिनेन्द्रदेव के चरणकमलों से पूजित श्रीशेषा/आसिका को मस्तक पर चढ़ाकर जिनमंदिर की तीन प्रदक्षिणा देकर मन, वचन, काय की शुद्धिपूर्वक जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके और अमरगण अर्थात् पूजा के लिए बुलाए गए देवों का विसर्जन करके जो व्यक्ति ''पूज्यपाद'' जिनेन्द्र भगवान् की पूजा करता है वह ''देवनन्दी'' से पूजित श्री विद्वान् मर्त्यलोक और देवलोक में शीघ्र ही सुख को प्राप्त करता है।

चक्रेन्द्र और देवेन्द्र उभय भी अतिशय जिनपूजा करते।
तब मुझ जैसे अतितुच्छ मनुष्य क्या अतिशय पूजा कर सकते।।
फिर भी जिनवर की भक्ति सभी के लिए कामधेनू मानी।
हे तीर्थनाथ! तुममें ही मेरी भक्ति स्थिर हो सुखदानी।।1।।

जो मन वच तन से प्रभू भक्ति उन सब जन का मंगल होवे।
जिन अभिषव महापुण्य कर्त्ता देवेन्द्रों का मंगल होवे।।
जिन न्हवन स्तुति में रत राजा की कीर्ति बढ़े मंगल होवे।
बहुपुण्य व लक्ष्मी सरस्वती सब जन के वृद्धिंगत होवे।।2।।

(इस प्रकार श्री पूज्यपाद स्वामि विरचित महाभिषेक पाठ समाप्त हुआ।)

नवग्रहशांति मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक-श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

2. ॐ ह्रीं सोमग्रहारिष्टनिवारक-श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

3. ॐ ह्रीं मंगलग्रहारिष्टनिवारक-श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

4. ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्टनिवारक-श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

5. ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्टनिवारक-श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

6. ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्टनिवारक-श्री पुष्पदन्तनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

7. ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्टनिवारक-श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

8. ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्टनिवारक-श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं केतुग्रहारिष्टनिवारक-श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

णमोकार महामंत्र के एक-एक पद भी एक-एक ग्रह की शांति के लिए माने गये हैं, जो कि सूर्य, चन्द्र आदि के नंबर से दिये गये हैं–

1. ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (7000 जाप्य)

2. ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं। (11000 जाप्य)

3. ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। (10000 जाप्य)

4. ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (14000 जाप्य)

5. ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (19000 जाप्य)

6. ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। (10000 जाप्य)

7. ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। (23000 जाप्य)

8. ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। (18000 जाप्य)

9. ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। (10000 जाप्य)

नवदेवता पूजन

–गीता छंद–

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक–

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-

चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेतु।
नवदेवों को पूजहूं, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नवदेवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य — ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार)

जयमाला

–सोरठा–

चिंचिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(*चाल–हे दीनबंधु श्रीपति...*)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरू ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पियूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चहूं, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा...।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से नव देवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा अन्त्य विधि

(अनंतर मणि, मूंगा, चाँदी आदि की माला से या अंगुली से अथवा 108 पुष्पों से नीचे लिखे मंत्र का जाप्य करें। समयाभाव में 9 बार मंत्र पढ़कर पुष्प चढ़ावें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उसा स्वाहा।

पुनः चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शांतिभक्ति पढ़ें–

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीचैत्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
ण्मो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं, अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगल, चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि।

जाव अरिहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप्य।)

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णवपवरलोयमहिये विहुयरयमले महप्पण्णे।।
लोयस्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो।।1।।

चैत्यभक्ति–

श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे।
वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकररुचके कुंडले मानुषांके।।
इष्वाकारेऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यंतरे स्वर्गलोके।
ज्योतिर्लोकेऽभिवंदे भुवनमहितले यानि चैत्यानि तानि।।1।।

यावंति जिनचैत्यानि विद्यंते भुवनत्रये।
तावंति सततं भक्त्या त्रिःपरीत्य नमाम्यहं।।2।।

अंचलिका–

इच्छामि भंत्ते! चेइयभत्ति काओस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अहलोय-तिरियलोय उड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोयिसयि-कप्पवासियन्ति चविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहिं गंधेहिं, दिव्वेहिं अक्खेहिं, दिव्वेहिं पुप्फेहिं, दिव्वेहिं दीवेहिं, दिव्वेहिं धूवेहिं, दिव्वेहिं चुण्णेहिं, दिव्वेहिं वासेहिं, दिव्वेहिं ण्हाणेहिं णिच्चकालं अच्चंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसन्ति, चेदियमहाकल्लाणं करंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि दुक्कक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।

णमो अरिहंताणं ..... आदि पढ़कर 9 बार महामंत्र जपकर थोस्सामि स्तव पढ़कर नीचे लिखी पंचगुरु भक्ति पढ़ें-

पंचगुरुभक्ति–

सर्वान् जिनेन्द्रचन्द्रान्, सिद्धानाचार्यपाठकान् साधून्।
रत्नत्रयं च वंदे, रत्नत्रयसिद्धये भक्त्या।।1।।

अंचलिका–

इच्छामि भंत्ते! पंचमहागुरुभक्ति काओसग्गो कओतस्सालोचेउं। अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं अरिहंताणं। अट्ठमहाकम्मविप्पमुक्काणं सिद्धाणं। अट्ठपवयणमाउसंजुत्ताणं आइरियाणं। आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं। तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं। भत्तीए णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंस्सामि। दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं श्रीशांतिभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं।

णमो अरिहंताणं.....से पढ़कर 9 जाप्य करके थोस्सामि पढ़कर शांतिभक्ति पढ़ते हुए पुष्प क्षेपण करना चाहिए।

शांतिभक्ति–

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रं।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रं।।1।।
पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्रनरेन्द्रगणैश्च।
शंतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।।2।।
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुंदुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामररयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः।।3।।
तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं, शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।।4।।
येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः।
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु।।5।।
संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।6।।
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशं।।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि।।7।।
प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वंतु जगतां शांतिं वृषभाद्याः जिनेश्वराः।।8।।

अचंलिका–

इच्छामि भंत्ते! संति भत्ति काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेस-संजुत्ताणं, बत्तीसदेवेन्दमणिमयमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणासंपत्ति होउ मज्झं।

अथ जिनेन्द्रमहापूजास्तवसमेतं सिद्धचैत्यपंचगुरुशांतिभक्तिः कृत्वा तद्हीनाधिकदोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

(9 बार णमोकार मंत्र जपना)

अथेष्ट प्रार्थना–

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः।
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः।
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम्।।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे।
संपद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः।।1।।
तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्।
तिष्ठतु जिनेंद्र! तावत् यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः।।2।।
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं।
तं खमउ णाणदेवय! मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु।।3।।

दुक्कक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

शांति मंत्र–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उसा नमः सर्वशांतिं कुरु-कुरु वषट् स्वाहा। (इस मंत्र का पाँच बार उच्चारण करें।)

गणधरवलय मंत्र–

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहिजिणाणं, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणंतोहि जिणाणं, णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणुसारीणं, णमो संभिण्ण सोदाराणं, णमो सयंबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमोचउदसपुव्वीणं, णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं, णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगासमागीणं, णमो आसीविसाणं, णमो दिट्ठिविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दित्ततवाणं, णमोतत्तवाणं, णमो महातवाणं, णमो

घोरतवाणं, णमो घोरगुणाणं, णमो घोरपरक्कमाणं, णमो घोरगुण बंभयारीणं, णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहिपत्ताणं, णमो जल्लोसहिपत्ताणं, णमो विप्पोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो मणबलीणं, णमो वचिबलीणं, णमो कायबलीणं, णमो खीरसवीणं, णमो सप्पिसवीणं, णमो महुरसवीणं, णमो अमियसवीणं, णमो अक्खीण महाणसाणं, णमो वड्ढमाणाणं, णमो सिद्धायदणाणं, णमो भयवदो महदिमहावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा।

(पुष्पाजंलि क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ–

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि, शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर!।।1।।

आह्वानं नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर।।2।।

मंत्र हीनं क्रियां हीनं द्रव्य हीनं तथैव च।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर!।।3।।

आहूता ये पुरा देवा, लब्धभागा यथाक्रमं।
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या, सर्वे यांतु यथायथम्।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयाः सर्वयक्षयक्षीदिक्पालादिअष्टाशीतिदेवादयः स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः।

–चौबोल छंद–

मोह ध्वांत के नाशक विश्वप्रकाशी विशद दीप्तिधारी।
सन्मारग प्रतिभासक बुधजन को नित ही मंगलकारी।।
श्री जिनचंद्र शांतिप्रद भगवन्! तापहरन भव भक्ति करूँ।
पुनः पुनः तव दर्शन होवे, यही याचना नित्य करूँ।।1।।

इति नित्य पूजा विधिः।

ध्वजारोहण विधि

चाल शेर–

श्रीमज्जिनेन्द्र का ये जगत् ईशिता का ध्वज।
मकरध्वजादि शत्रु जीत का ये विजयध्वज।।
जिन धर्म का प्रतीक ये उत्तुंग महाध्वज।
विधिवत् यहाँ चढ़ाऊँ आज ये है जैन ध्वज।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः।

जिनधाम के सन्मुख ध्वजा के यक्ष को यहाँ।
पुष्पांजलि कर मंत्र से बुलाऊँ मैं यहाँ।।
स्थापनादि कर यहाँ प्रसन्न मैं करूँ।
दिक्पाल दिक्कुमारियों का भी यजन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहिताः सर्वध्वजदेवताः भवत भवत वषट्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म तिगिंच्छकेसरिपुंडरीक महापुंडरीक गंगासिंधुरोहिद्रोहितास्या-हरिद्हरिकांता-सीतासीतोदा नारीनरकांता-सुवर्णकूलारूप्यकूला-रक्तारक्तोदाक्षीरांभोनिधिजलं स्वर्णघटप्रक्षिप्तसर्वगंधपुष्पाढ्यं आमोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं स्वाहा। जलाभिमंत्रणं।

ॐ ह्री स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा।(नव कलश स्थापन करना)

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।(कलश के पास अर्घ्य चढ़ावें)

(दर्पण में बिंबित सर्वाण्ह यक्ष आदि ध्वज देवताओं का इन्हीं नव कलशों से अभिषेक, [१]गंध लेपन, नेत्रोन्मीलन आदि करके अर्घ्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षसहित सर्वध्वजदेवते इदं स्नानं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ सर्व राष्ट्रक्षुद्रोपद्रवं हर हर ॐ स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा। (संप्रोक्षणं)

---

१. सर्वाण्ह यक्ष की मूर्ति हो तो उसका अभिषेक करना। नहीं तो कपड़े में बने यक्ष का दर्पण में प्रतिबिम्ब पड़े, उसका अभिषेक करना।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः अरहंताणं। सर्वाण्हयक्षाय धर्मचक्रविराजिताय चतुर्भुजाय । सुवर्णवर्णाय गजारूढाय सर्वजननयनाल्हादकाय सुगंधानुलेपनं करोमि स्वाहा। (सुगंधानुलेपनं)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः सर्वाण्हयक्षस्य मुखवस्त्रं प्रक्षिपामि स्वाहा।

[१](मुख वस्त्र प्रदानं)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः णमो अरिहंताणं सर्वाण्हयक्षाय श्यामवर्णाय यथोक्तलक्षण लक्षिताय सर्वजननयनाल्हादकराय नयनोन्मीलनं करोमि स्वाहा।

*(नयनोन्मीलनविधानं)

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षाय इंद अर्घ्यं इत्यादि।

ॐ ह्रीं इंद्रादिदशदिक्पालकेभ्यः इदं अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं अष्टदिक्कन्यकाभ्यः इदं अर्घ्यं।

(अनंतर ध्वज को उत्सव से नगर में घुमावें। पुनः ध्वजदंड की शुद्धि, मालावेष्टन, पंचामृताभिषेक, अर्घ्यं आदि करें।)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं नमोऽर्हते श्रीमत्पवित्रजलेन ध्वजदंड शुद्धिं करोमि स्वाहा। (संप्रोक्षणं)

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा। (दर्भमालावेष्टनं)

ॐ णमो अरिहंताणं .... चत्तारिमंगलं .... ॐ ह्रीं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

(इससे ध्वजदंड के अग्रभाग का पंचामृत अभिषेक करें)

पुनः ॐ नीरजसे नमः आदि से अर्चन करें।

पुनः गड्ढे में दूब दही मिश्रित धान्य स्थापित करें।

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि से गड्ढे की भूमि की पूजा करें।

पुनः सुवर्णयुक्त परमान्न स्थापन करें। अनंतर ध्वजदंड स्थापित करें।

(पुनः दिक्पाल आदि के क्षुद्र ध्वजदंड स्थापित करें)

ॐ णमो अरिहंताणं स्वाहा। 108 जाप्य।

(अनादि सिद्ध मंत्र से पंचामृत अभिषेक)

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्ष! इदं जलादिकं गृहाण गृहाण स्वस्ति भद्रं भवतु स्वाहा। अर्घ्यं।

---

१. इन मंत्रों का प्रयोग सर्वाण्ह यक्ष की मूर्ति होने पर ही होगा। * सोने की या अनार की कलम से केशर द्वारा सर्वाण्ह यक्ष का नयनोन्मीलन करें।

तीर्थेश व नवदेवता बहुविध जयादि सुर।
योगीन्द्र व त्रेसठ पुरुष व तत्वज्ञानि धुर।।
राजा अमात्य सर्व प्राणि राष्ट्र आदि की।
पीड़ादि हरें नित्य परमानंद करें भी।।3।।

सब्रह्मवृद्धिर्भूयात्, सद्धर्मवृद्धिर्भूयात्।

इह सकल चैत्यालया अकृत्रिम चैत्यालया इव स्वर्णमया रत्नमया ज्योतिर्मया भूयासुरश्रान्तं।

ॐ नित्योत्सवमासोत्सपक्षोत्सववर्षोत्सवप्रमुखोत्सवानां समृद्धयोऽर्हतां मंदिरेषु भूयासुरश्रान्तम्।

भगवज्जिनेश्वर.....[1]विधानमहोत्सवप्रारंभे विधियमानध्वजारोहणमुहूर्तः सुमुहूर्तो भूयात्।

त्रैलोक्यमयी ज्ञान जो कैवल्य रूप है।
इस ध्वज में करूँ कल्पना ये सर्व पूज्य है।।
रत्नत्रयी स्वरूप इसी ध्वजा दंड में।
मंगलसुवाद्य घोष सहित ध्वज चढ़ाऊँ मैं।।4।।

ॐ णमो अरिहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु, सर्वलोकशांतिर्भवतु स्वाहा।

ध्वजारोहण मंत्रः।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासनपताके सदोच्छ्रिता तिष्ठ-तिष्ठ भव-भव वषट् स्वाहा।

जैनेन्द्र महायज्ञ की आदी में मान्य है।
जिनउत्सव दर्शकों का करता आह्वान है।।
संपूर्ण दुःख हरे वे सुख समृद्धि भी करे।
इस जैनमहाध्वज को विधि से अर्घ हम धरें।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्ष! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वस्ति भद्रं च भवतु स्वाहा। (अर्घ्योद्धारणं इतिध्वजारोहण विधानं।)

---

1. जो विधान कराना हो या जो उत्सव हो उसका नाम लेवें।

2. यह मंत्र पढ़कर ध्वज पर पुष्पांजलि डालें। विधि मंत्र मात्र से संक्षिप्त की गई है। प्रतिष्ठातिलक में बृहद् विधि है।

अंकुरारोपण विधि

–शेर छंद–

त्रिभुवन के एकचंद्र श्री जिनेन्द्र को नमूँ।
रवि चंद्र कोटि से अधिक दीप्ती उन्हें नमूँ।।
पुण्यांकुरों सम अंकुरारोपण विधी करूँ।
पुण्यांकुरों से नाथ की अर्चाविधी करूँ।।1।।

(चैत्यालय के पूर्व या उत्तर दिशा में कमलाकार मंडल बनाकर स्वस्तिक पर दस, बारह या आठ पालिका, घटी, शराव, पटली को रखें। इन मंडलों के पश्चिम भाग में सुन्दर सिंहासन पर सर्वाण्ह यक्ष की स्थापना करें।)

सर्वाण्ह यक्ष पूजा–

जो दिव्य शुभ्र गज पे खड़े हाथ जोड़ के।
श्री धर्मचक्र शिर पे धरे हाथ दोय से।।
जिनयज्ञ की रक्षा करें, सर्वाण्ह यक्ष ये।
आह्वान कर पूजा करूँ, कल्याणदक्ष ये।।2।।

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाण्हयक्ष! एहि एहि संवौषट्।

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाण्हयक्ष! तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्ण सर्वलक्षणसंपूर्ण हे सर्वाण्हयक्ष! सन्निहितो भव-भव वषट्।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्षाय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरूँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्ष यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं स्वस्तये कलशस्थापनं करोमि स्वाहा। (कलश स्थापनं)

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।(कलश को अर्घ्य चढ़ावें)

श्री देवी आदि पूजा–ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्णाः चतुर्भुजाः पुष्पमुखकलशकमल-हस्ताः श्रीआद्यष्ट-दिक्कन्यकाः अत्र आगच्छत आगच्छत, इदं अर्घ्यं पाद्यं....।

दिक्पाल पूजा–ॐ ह्रीं प्रशस्तवर्णाः सर्वलक्षणसंपूर्णाः स्वायुधवाहनवधू-चिन्हसपरिवाराः इंद्राग्नियमनैऋत्यवरुणपवनकुबेरेशान-धरणीन्द्रचन्द्राश्चेति दशदिक्पालाः! अत्र आगच्छत आगच्छत, इदं अर्घ्यं पाद्यं....।

अष्टमंगलद्रव्यन्यास व पूजा–

भेरी व शंख घंटा दीपक व शशि रवि।
श्रीचक्र और दर्पण मंगलस्वरूप ही।।
इन आठ को आठों दिशा में मंत्र बोल के।
थापूँ यहाँ मंगल करो सुख शांति जोड़ के।।3।।

ॐ भेरीश्रियै स्वाहा। ॐ शंखश्रियै स्वाहा।

ॐ घंटाश्रियै स्वाहा। ॐ प्रदीपश्रियै स्वाहा।

ॐ चंद्रश्रियै स्वाहा। ॐ आदित्यश्रियै स्वाहा।

ॐ चक्रश्रियै स्वाहा। ॐ दर्पणश्रियै स्वाहा। (लेखन मंत्राः)

अष्टमंगल पूजा–ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः गंधं। अक्षताय नमः अक्षतं। विमलाय नमः पुष्पं। दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं। ज्ञानोद्योताय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। परमसिद्धाय नमः फलं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

अथ घटीनां अभ्यंतरेषु–भवनेन्द्रादिआह्वाननपुरस्सरं प्रत्येकपूजाप्रतिज्ञा-पनाय घटीषु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं असुरनागसुपर्णद्वीपोदधिस्तनित-विद्युदग्निवातकुमारनामधेयाः दशविधभवनेंद्राः! अत्र आगच्छत आगच्छत, इदं अर्घ्यं.....।

शरावाणां अभ्यंतरेषु–ॐ ह्रीं किन्नरकिंपुरूषमहोरगगंधर्वयक्षराक्षस-भूतपिशाचनामधेयाः अष्टविधव्यंतरेंद्राः! अत्र आगच्छत आगच्छत, इदं अर्घ्यं ....।

पटलिकानां अभ्यंतरेषु–ॐ ह्रीं सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलांतव-शुक्रशतारानतप्राण-तारणाच्युतनामधेयाः द्वादश कल्पेन्द्राः! अत्र आगच्छत आगच्छत, इदं अर्घ्यं .....।

(नगर के पूर्व व उत्तर आदि क्षेत्र की मिट्टी लावें)

खेत में जाकर–

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः।

पंचकुमार पूजा–ॐ ह्रीं वायुकुमारदेव! महीं पूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

(भूमि झाड़ें)

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवाय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घं....।

ॐ ह्रीं मेघकुमारदेव! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। (भूमि सींचें)

ॐ ह्रीं मेघकुमारदेवाय इदं अर्घ्यं.....।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव! भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। (अग्नि जलावें)

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवाय इदं अर्घ्यं.....।

ॐ ह्रीं क्रों षष्ठिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा।

नागसंतर्पणार्थं ऐशान्यां दिशि जलांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवाय इदं अर्घ्यं.....।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ....।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय तैलाभिषेकं करोमि प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय सिंदूरसेचनं करोमि स्वाहा।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय गुडं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

ॐ ह्रीं अत्रस्थक्षेत्रपालाय इदं जलं....।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय सद्वस्त्रं भूषणं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(पूर्वमुख अथवा उत्तरमुख होकर मिट्टी खोदकर ऊपर की मिट्टी हटाकर पुनः खोदकर नीचे की शुद्ध मिट्टी इकट्ठी करें।)

दोहा– **पुण्यांकुर की अर्चना, मूलभूत जो शुद्ध।**
इस मिट्टी को मैं जजूँ, नीरादिक ले शुद्ध।।4।।

ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा। इति स्वकीयवामकरतलं अभिमंत्रयेत्।

ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा। इति धरामप्यभिमंत्रयेत्।

ॐ ह्रीं सर्वलोकगुरुभ्यो नमः स्वाहा। इति मृत्स्नां गृण्हीयात्।

भेरी मृदंग शंख व वीणादि बजाके।
घंटा व कांस्यताल आदि घोष कराके।।
संगीत गीत जय जयादि शब्द बोलके।
मिट्टी से भरे पात्र सर्व धरूं शीश पे।।5।।

(अनेन मृत्पूरितपात्राणि विनयेनोत्तमांगेषु स्थापयेत्)

(सर्वाण्ह यक्ष के साथ महाधूमधाम से वह मिट्टी लाकर शराव आदि के स्थान पर रखें। पुनः जिन अभिषेक, पूजा, पंचमंडल आराधना, श्रुतस्कंध, महर्षि आदि की पूजा करके पात्र की मिट्टी को लेकर पूर्व या उत्तरमुख होकर पालिका आदि पात्रों को भरके रात्रि में शुभ मुहूर्त में कुल स्त्रियों द्वारा बीज वपन करावें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा। पुष्पांजलिः।

(सर्वाण्ह यक्ष को यक्षआसन पर स्थापित करके पास में मिट्टी से पूरित पात्रों को रखें)

आठों दिशाओं में आठ दिक्पालों की पूजा–

ॐ ह्रीं धामग्रामाश्रित-दिक्पालकदेवाः सर्वेऽपि ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं अर्घ्यं गृण्हीत् गृण्हीत् यागविघ्नशांतिं कुरुत-कुरुत स्वाहा।

ॐ ह्रीं परिपूर्णानंतचतुष्टयाय नमः। इति पालिकादिपात्रेषु मृत्तिकां पूरयेत्।

गेहूँ व मूँग धान उड़द तिल व राजमा।
सांवा व कांगनी वा कुलथी तथा चना।।
इन सरसों आदि अठरह विध बीज धोयके।
शुभ लग्न में कुल नारियां बोयें यहाँ आके।।6।।

ॐ ह्रीं नमो वृषभाय रोहिणि चंडे महाचंडे सर्वचंडे स्वाहा। इति बीजानि प्रक्षालयेत्।

ॐ नमो रोहिणि वर्धमानविजये विजयचंडे बीजप्रमुखाय लोकविदिताय सर्वज्ञाय स्वाहा। इति सुन्दरीभिर्वपयेत् स्वयं च वपेत्।

पुण्याहमंत्रः–

शिष्यांकुरों को सींचते जिनराज के वचन।
उनकी करें अति उन्नति जिनराज के वचन।।
श्रीपाद अर्चना के लिये पूर्णकुंभ ले।
पुण्यांकुरों इव अंकुरों को सींचहूं भले।।7।।

ॐ नमो रोहिणि चंडे पार्श्वचंडे विघ्नविजयचंडे सर्वचंडे स्वाहा। (इति जलसेचनं कुर्यात्। पुण्याहमंत्रेणापि जलसेचनं कुर्यात्।)

–आर्या छन्द–

शिवमस्तु सर्वजगतां, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः।
दोषाः प्रयांतु नाशं, तिष्ठतु जिनशासनं सुचिरं।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वाण्हयक्ष प्रमुखदेवा आहूतार्चिताः सर्वे स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः। इति विसर्जनमंगलेषु पुष्पांजलिं विकीर्य देवता विसर्जयेत्।

अंकुरों से पूजा–

–शेर छंद–

हन घाति प्रगट निरवधी दृक् ज्ञानवीर्य सुख।
कल्याण पांच चौंतिस अतिशय कहें प्रमुख।।
पुण्यांकुरों से आज यहां श्री जिनेन्द्र को।
बहुपुण्य अंकुरों के लिये मैं जजूँ उनको।।9।।

ॐ ह्रीं नमः परमकल्याणकेभ्यः स्वाहा। इत्यंकुरैरभ्यर्चयेत्।

प्रमादाज्ज्ञानदर्पाद्यैर्विहितं विहितं न यत्।
जिनेंद्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलं च तत्।।

क्षमापणपुरः सरं पंचांगप्रणामः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उसा स्वस्थानं गच्छ गच्छ जः जः जः।
इति विसर्जनं।

घटयात्रा विधि

समस्त उद्यापन विधानों के लिये जलयात्रा (घटयात्रा) का विधान यह है कि सौभाग्यवती स्त्रियाँ तूल में लिपटे और कलावा से सुसंस्कृत नारियलों से ढके कलश जलाशय के पास ले जावें। जलाशय के पूर्वभाग या उत्तर भाग में भूमि को जल से धोकर पवित्र करें। पश्चात् उस भूमि में चावलों से चौक बनाकर चावलों का पुंज रखे और कलशों को उन पुंजों पर स्थापित कर दें। चौक के चारों कोनों पर दीपक जलाना चाहिये। पुनः नीचे लिखी विधि करके कुएं से जल निकालें।[1]

श्री जिनेन्द्रदेव का 108 कलशों द्वारा महाभिषेक करने के लिये जलयात्रा में इसी विधि से जल लाना चाहिये। वेदी शुद्धि के लिये भी यही विधि करना चाहिये। कलश लेकर कुएं पर पहुँच कर महामंत्र पढ़कर निम्न विधि करनी चाहिये–

–शेर छंद–

जो जैन मार्ग सदृश विमल नीर से भरे।
पद्मादि सरोवर से सुधाशीत गुण धरे।।
जल गंध अक्षतादि अर्घ को समर्प्य के।
संसार तपन दूर करूं हर्ष हर्ष के।।1।।

ॐ ह्रीं पद्माकराय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(पढ़कर जलाशय-कुएं पर अर्घ चढ़ावें।)

श्री आदि देवियाँ जिनेन्द्रमात सेवतीं।
कुल नग के पद्म आदि सरवरों पे निवसतीं।।जल.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीप्रभृतिदेवताभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

(यहाँ से जलाशय पूजा करें।)

गंगादि देवियां सदा मंगलस्वरूप हैं।
गंगादि नदी में रहें जिनभक्ति युक्त हैं।।जल.।।3।।

ॐ ह्रीं गंगादिदेवीभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

1. व्रततिथि निर्णय पृ. 40 से 42 तक श्लोकों का भाषा पद्यानुवाद है।

सीतानदी संबंधि महाह्रद में जो रहें।
ये नागकुमर देव पापमल को धो रहे।।
जल गंध अक्षतादि अर्घ को समर्प्य के।
संसार तपन दूर करूं हर्ष हर्ष के।।4।।

ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाह्रददेवेभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

सीतोदनदी मध्य महाह्रद में जो रहें।
ये नागकुमार धर्मनिष्ठ पाप धो रहे।।जल.।।5।।

ॐ ह्रीं सीतोदाविद्धमहाह्रददेवेभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं ... ।

लवणोदधी कालोदधी में तीर्थ जो कहे।
मागध प्रभास वरतनू सुरगण वहां रहें।।जल.।।6।।

ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादितीर्थदेवेभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं ... ।

सीता व सीतोदा नदी के तीर्थ जो कहे।
मागध प्रभास वरतनू सुरगण वहां रहें।।जल.।।7।।

ॐ ह्रीं सीतासीतोदामागधादितीर्थदेवेभ्यः इदं जलादि अर्घ्यं ... ।

लवणोद आदि जलधि असंख्यात गिनाये।
इनमें रहें जो सुर जिनेंद्र भक्त बताये।।जल.।।8।।

ॐ ह्रीं संख्यातीतसमुद्रदेवेभ्यः जलादि अर्घ्यं ... ।

जो लोक में प्रसिद्ध श्रेष्ठ तीर्थ मान्य हैं।
नंदीश्वरादि वापि में सुरगण प्रधान हैं।।जल.।।9।।

ॐ ह्रीं लोकाभिमत तीर्थदेवेभ्यः जलादि अर्घ्यं ... ।

इस श्लोक को बोलकर कुएँ से जल निकालकर बड़े बर्तन में भरना।

गंगादि व श्री आदि देवियां प्रसिद्ध हैं।
मागध प्रभास आदि जलधि के अधीश हैं।।
सरवर के देव अन्य जलाशय के देव भी।
ये नीर शुद्ध करें आयके यहां अभी।।10।।

पुनः निम्नलिखित मंत्र बोलकर कलशों में भरना–

ॐ ह्रीं श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्मीशांतिपुष्टयः श्रीदिक्कुमार्यो जिनेंद्र-महाभिषेककलशमुखेषु एतेषु नित्यविशिष्टा भवत भवत स्वाहा।

पुनः निम्न श्लोक पढ़कर जलशुद्धि करें। विसर्जन कर जल से भरे कलशों को सौभाग्यवती स्त्रियों अथवा कन्याओं द्वारा ले आवें। कलशों की संख्या[1] 9 है।

ये तीर्थनीर से भरे स्वर्णीय कुंभ हैं।
श्रीआदि देवियों से सहित पुण्य कुंभ हैं।।
जय जय निनाद करके पूर्ण कुंभ उठाऊँ।
मस्तक पे धरके लायके जिनवर को न्हवाऊँ।।11।।

यदि यहाँ वेदी शुद्धि के लिये घटयात्रा से जल ला रहे हों तो अंतिम चरण में ऐसा बोलना चाहिये–

(मस्तक पे धरके लाऊं वेदी शुद्धि कराऊँ)

इति घटयात्रा विधिः

1. 108 कलशों की घटयात्रा में भी यही विधि करें।

अथ महामंडलाराधना

जिनानामपि सिद्धानां महर्षीणां समर्चनात्।
पाठात्स्वस्त्ययनस्यापि मनःपूर्वं प्रसादये।।1।।

मनः प्रसत्तिसूचनार्थं अर्चनापीठाग्रतः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्हन्त पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंकपंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।

अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तु।
पीयूष तुल्य चरू लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नि विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।
मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बारह हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।

जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रविप्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल संगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चऊ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभु सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला अर्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

सिद्ध पूजा

स्थापना–गीताछंद

श्री सिद्ध परमेष्ठी अनंतानंत त्रैकालिक कहे।
त्रिभुवन शिखर पर राजते वह सासते स्थिर रहे।।
वे कर्म आठों नाश कर, गुण आठधर कृतकृत्य हैं।
कर थापना मैं पूजहूँ, उनको नमें नित भव्य हैं।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टकं (पंचचामर छंद)–

अनादि से तृषा लगी न नीर से बुझी कभी।
अतः प्रभो त्रिधार देय नीर से जजूँ अभी।।
अनंत सिद्धचक्र की सदा उपासना करूँ।
स्व जन्म मृत्यु मल्ल जीत सिद्धि अंगना वरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत काल राग आग दाह में जला हिया।
उसी कि शांति हेतु गंध लाय चर्ण चर्चिया।।अनंत.।।2।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणेक सुक्ख हेतु मैं नमा सभी कुदेव को।
अखंड सौख्य हेतु शालि से जजूँ सुदेव को।।अनंत.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध पुष्पहार ले जजूँ समस्त सिद्ध को।
रतीश मल्ल जीत के लहूँ निजात्म सिद्धि को।।अनंत.।।4।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पियूष पिंड के समान मोदकादि लेय के।
निजात्म सौख्य हेतु मैं जजूँ प्रमाद खोय के।।अनंत.।।5।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवर्ण दीप लेय नाथ पाद अर्चना करूँ।
समस्त मोह ध्वांत नाश ज्ञान ज्योति को भरूँ।।अनंत.।।6।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध धूप लेय अग्नि पात्र में प्रजालिये।
कलंक पंक ज्वाल के निजात्म को उजालिये।।अनंत.।।7।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनार सेव संतरादि सत्फलों को लाइये।
स्व तीन रत्न हेतु नाथ पाद में चढ़ाइये।।अनंत.।।8।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरत्न को मिलाय अर्घ लेय थाल में भरे।
अनंत शक्ति हेतु आप चर्ण अर्चना करे।।अनंत.।।9।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्धपरमेष्ठिभ्यः अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रभु पद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेत।।10।।

शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

पुष्पांजलिः।

जयमाला

–दोहा–

पुद्गल के संबंध से, हीन स्वयं स्वाधीन।
नमूँ नमूँ सब सिद्ध को, तिन पद भक्ति अधीन।।1।।

चाल–हे दीनबंधु.....

जय जय अनंत सिद्धवृंद मुक्ति के कंता।
जय जय अनंत भव्यवृंद सिद्धि करंता।।
जय जय त्रिलोक अग्रभाग ऊर्ध्व राजते।
जय नाथ! आप में हि आप नित्य राजते।।1।।

ज्ञानावरण के पाँच भेद को विनाशिया।
नव भेद दर्शनावरण को सर्व नाशिया।।
दो वेदनीय आठ बीस मोहनी हने।
चउ आयु नामकर्म सब तिरानबे हने।।2।।

दो गात्र अंतराय पाँच सर्व नाशिया।
सब इक सौ अड़तालीस कर्म प्रकृति नाशिया।।
ये आठ कर्मनाश मुख्य आठ गुण लिये।
फिर भी अनंतानंत सुगुणवृंद भर लिये।।3।।

इन ढाई द्वीप मध्य से ही मुक्ति पद मिले।
अन्यत्र तीन लोक में ना पूर्ण सुख मिले।।
सब ही मनुष्य मुक्त होते कर्मभूमि से।
अन्यत्र से भी मुक्त हों उपसर्ग निमित से।।4।।

पर्वत नदी समुद्र गुफा कंदराओं से।
वन भोग भूमि कर्मभू और वेदिकाओं से।।

जो मुक्त हुए हो रहे अरु होयेंगे आगे।
उन सर्व सिद्ध को नमूँ मैं शीश झुकाके।।5।।

नर लोक पैतालीस लाख योजनों कहा।
उतना प्रमाण सिद्धलोक का भी है रहा।।
अणुमात्र भी जगह न जहाँ मुक्त ना हुए।
अतएव सिद्धलोक सिद्धगण से भर रहे।।6।।

उत्कृष्ट सवा पाँच सौ धनु का प्रमाण हैं।
जघन्य साढ़े तीन हाथ का ही मान है।।
मध्यम अनेक भेद से अवगाहना कही।
उन सर्व सिद्धि को नमूँ वे सौख्य की मही।।7।।

निज आत्म जन्य निराबाध सौख्य भोगते।
निज ज्ञान से ही लोकालोक को विलोकते।।
निज में सदैव तृप्त सदाकाल रहेंगे।
आगे कभी भी वे न पुनर्जन्म लहेंगे।।8।।

उन सर्व सिद्ध की मैं सदा वंदना करूँ।
सर्वार्थसिद्धि हेतु सदा अर्चना करूँ।।
तुम नाममात्र भी निमित्त सर्व सिद्धि में।
अतएव नमूँ बारबार सर्व सिद्ध मैं।।9।।

-दोहा-

भूत भविष्यत संप्रती, तीन काल के सिद्ध।
उनकी पूजा जो करें लहें ''ज्ञानमती'' निद्ध।।10।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सर्वसिद्धपरमेष्ठिभ्यः जयमाला अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

सर्वसाधु पूजा

स्थापना-गीताछंद

जो नित्य मुक्तीमार्ग रत्नत्रय स्वयं साधें सही।
वे साधु संसाराब्धि तर पाते स्वयं ही शिव मही।।
वहं पे सदा स्वात्मैक परमानंद सुख को भोगते।
उनकी करे हम अर्चना, वे भक्त मन मल धोवते।।1।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिसमूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-नाराच छंद

साधु चित्त के समान स्वच्छ नीर लाइये।
साधु चर्ण धार देय पाप पंक क्षालिये।।
प्राकृतीक निर्विकार नग्नरूप को धरें।
मुक्तिवल्लभा तथापि शीघ्र आपको वरें।।1।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कांति के समान पीत गंध लाइये।
साधु चर्ण चर्चते समस्त ताप नाशिये।।प्राकृतीक.।।2।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र रश्मि के समान धौत शालि लाइये।
चर्ण के समीप पुंज देत सौख्य पाइये।।प्राकृतीक.।।3।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुगंधि पुष्प थाल में भरे।
कामदेव के जयी जिनेन्द्र-पाद में धरें।।प्राकृतीक.।।4।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरिका इमर्तियाँ सुवर्ण थाल में भरे।
भूख ब्याधि नाश हेतु आप अर्चना करें।।प्राकृतीक.।।5।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप में कपूर ज्योति को जलाइये।
साधुवृंद पूजते सुज्ञान ज्योति पाइये।।प्राकृतीक.।।6।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध अति सुगंध धूप खेय अग्नि में।
अष्ट कर्म भस्म होत आप भक्ति रंग में।।प्राकृतीक.।।7।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम संतरा बदाम थाल में भरे।
पूजते हि आप चर्ण मुक्ति अंगना वरे।।प्राकृतीक.।।8।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध आदि अष्ट द्रव्य अर्घ ले लिया।
सुख अनंत हेतु, आप चर्ण में समर्पिया।।प्राकृतीक.।।9।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गुरु पद में धारा करूँ, चउ संघ शांति हेत।
शांतीधारा जगत में, आत्यंतिक सुख हेत।।10।।

शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

पुष्पांजलिः।

जयमाला

–दोहा–

चिच्चैतन्य सुकल्पतरु, आश्रय ले सुखकार।
शिवफल की वांछा करें, नमूँ साधु गुणधार।।

चाल–हे दीनबंधु ....

जैवंत साधुवृंद सकल द्वंद्व निवारें।
जैवंत सुखानंद स्वात्म तत्त्व विचारें।।
जै जै मुनीन्द्र नग्नरूप धार रहे हैं।
जै जै अनंत सौख्य के आधार भये हैं।।1।।

गुरुदेव अट्ठाईस मूलगुण को धारते।
उत्तर गुणों को शक्ति के अनुसार धारते।।
श्रुत का अभ्यास द्वादशांग तक भी कर रहें।
जिन रूप से ही मोक्षपद साकार कर रहें।।2।।

ग्रीषम ऋतू में पर्वतों पे ध्यान धरे हैं।
वर्षा ऋतू में वृक्षमूल में हि खड़े हैं।।
ठंडी ऋतू में चौहटे पे या नदी तटे।
निज आत्मा को ध्यावते शिवपथ से नहिं हटे।।3।।

बहु तप के भेद सिंह-निष्क्रीडितादि हैं।
उनकी सदा करें न तन से ममतआदि हैं।।
तप ऋद्धि बुद्धि ऋद्धि क्रिया विक्रिया ऋद्धी।
रस ऋद्धि औ अक्षीणऋद्धि औषधि ऋद्धी।।4।।

नाना प्रकार ऋद्धियों के नाथ हुए हैं।
सिद्धी रमा से भी वे ही सनाथ हुए हैं।।

इनके दरश से भव्य जीव पाप को हरें।
आहार दें नवनिधि समृद्धि पुण्य को भरें।।5।।
इनकी सदैव भक्ति से, जो वंदना करें।
वे मोहकर्म की स्वयं ही खंडना करें।।
मिथ्यात्व औ विषय कषाय दूर से टरें।
स्वयमेव भक्त निजानंद पूर से भरें।।6।।
गुणथान छठे सातवें से चौदहें तक भी।
संयत मुनी ऋषि साधु कहाते हैं सभी भी।।
वे तीनन्यून नव करोड़ संख्य कहे हैं।।
बस ढाई द्वीप में अधिक इतने ही रहे हैं।।।7।।
इन सर्व साधुओं की नित्य अर्चना करूँ।
त्रयकाल के भी साधुओं की वंदना करूँ।।
गुरूदेव! बार बार मैं ये प्रार्थना करूँ।
निजके ही तीन रत्न की बस याचना करूँ।।8।।

–दोहा–

नाम लेत ही अघ टले, सर्वसाधु का सत्य।
केवल 'ज्ञानमती' मिले, जो अनंतगुण तथ्य।।9।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः जयमाला अर्घ्यं ...।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

अथातः स्वस्त्ययनविधानं

–उपजाति छंद–

श्री पंचकल्याणमहार्हणार्हा, वागात्मभाग्यातिशयैरुपेताः।
तीर्थंकराः केवलिनश्च शेषाः, स्वस्तिक्रियां नो भृशमावहंतु।।1।।
ये शुद्धमूलोत्तरसद्गुणानां, आधारभावादनगारसंज्ञाः।
निर्ग्रंथवर्या निरवद्यचर्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।2।।

ये चाणिमाद्यष्टसविक्रियाढ्याः, तथाक्षयावासमहानसाश्च।
राजर्षयस्ते सुरराजपूज्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।3।।
ये कोष्ठबुद्ध्यादिचतुर्विधर्द्धि-रवापुरामर्षमहौषधर्द्धीः।
ब्रह्मर्षयो ब्रह्मणि तत्परास्ते, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।4।।
जलादिनानाविधचारणा ये, ये चारणाग्न्यांबरचारणाश्च।
देवर्षयस्ते नतदेववृन्दाः स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।5।।
सालोकलोकज्जवलनैकतानं, प्राप्ताः परंज्योतिरनंतबोधम्।
सर्वर्षिवंद्याः परमर्षयस्ते, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।6।।
श्रेणिद्वयारोहणसावधानाः, कर्मोपशांतिक्षपणप्रवीणाः।
ये ते समस्ता मुनयो महान्तः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।7।।
समग्रमध्यक्षमिताश्च देश-प्रत्यक्षमत्यक्षसुखानुरक्ताः।
मुनीश्वरास्ते जगदेकमान्याः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।8।।
उग्रं च दीप्तं च तपोभितप्तं, महच्च घोरं च तरां चरन्तः।
तपोधना निर्वृतिसाधनोक्ताः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।9।।
मनोवचःकायबलप्रकृष्टाः, स्पष्टीकृताष्टांगमहानिमित्ताः।
क्षीरामृतास्राविमुखा मुनीन्द्राः स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।10।।
प्रत्येकबुद्धप्रमुखा मुनीन्द्राः शेषाश्च ये ये विविधर्द्धियुक्ताः।
सर्वेऽपि ते सर्वजनीनवृत्ताः, स्वस्तिक्रियासुर्जगते हिता नः।।11।।

–शार्दूलविक्रीडित छंद–

शापानुग्रहशक्तिताद्यतिशयै-रुच्चावचैरंचिताः।
ये सर्वे परमर्षयो भगवतां, तेषां गुणस्तोत्रतः।।
एतत्स्वस्त्ययनादपैति सकलः, संक्लेशभावः शुभः।
भावः स्यात् सुकृतं च तच्छुभविधे-रादाविदं श्रेयसे।।12।।

इति स्वस्त्ययनं मनःप्रसादनविधानम्।

यज्ञ दीक्षा विधान

–बसंततिलका छंद–

अर्हंत सन्मुख धरी सब वस्तुयें हैं।
मंत्रित किया वर अनादि सुमंत्र से मैं।।
श्रीमान् गुरुवर निकट यह यज्ञ दीक्षा।
लेकर जिनेंद्रवर पूजन को करूँ मैं।।1।।

(चंदन, माला, मुकुट आदि प्रसाधन वस्तुयें एक पात्र में लेकर भगवान् के सन्मुख रखना, पुनः अनादि सिद्ध मंत्र बोलकर मंत्रित करके आगे के मंत्रों के अनुसार उन-उन वस्तुओं को ग्रहण करना या मंत्रित चंदन को उन-उन वस्त्र आदि में लगाते रहना।)

अनादि सिद्धमंत्र–

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।

चत्तारि मंगलं–अरहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहुमंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मोमंगल। चत्तारि लोगुत्तमा–अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि–अरहंतसरणं पव्वज्जामि, सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहुसरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं क्रों शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

नीचे लिखा मंत्र पढ़कर पहने हुए वस्त्रों का स्पर्श करना–

ॐ ह्रीं हूँ श्रीं नमः श्वेत वर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीये धारणी हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा।

(वस्त्रावरणं)

ॐ ह्रीं परमपवित्राय नमः

(दाहिने हाथ की अनामिका में पवित्र-अंगूठी धारण करना।)

श्री चंदनानुलेपनं स्रग्धारणं च (चंदन लेपन कर माला पहनना)

जो दिव्यसूत्र वर भावश्रुत प्रकाशी।
ये ब्रह्मसूत्र वरमौलि व कुंडलादी।।
कंकण अंगूठि वर भूषण को पहन के।
जैनेंद्रपूजन करूँ अब इंद्र होके।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा।

(यज्ञोपवीत पहनें।)

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा। (कुंडल और मुकुट धारण करना।)

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा। (कंकण धारण करना।)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा। (अंगूठी पहनना।)

सम्यक्त्व ज्ञान अणुव्रत त्रयरत्न धारे।
एकाशनादि व्रत श्रेष्ठ सुब्रह्मचर्य।।
ये यज्ञपूर्ति तक कंकण सूत्र बाँधूँ।
''मैं इंद्र हूं'' यह विधान करूँ रुची से।।3।।

(अर्हंतदेव की यज्ञ दीक्षा को स्वीकार करता हूँ और दीक्षा के चिन्ह को धारण करता हूँ। इस प्रकार कमर मे कंदोरा और पुरुष के दाहिने हाथ में कंकण व महिलाओं के बायें हाथ मे कंकण बांधना। इसमें विधान पूर्ति तक एक बार शुद्ध भोजन, दूसरी बार फलाहार रखना रात्रि में चतुर्विध आहार का त्याग, व विधान पूर्ति तक ब्रह्मचर्य व्रत का नियम देना होता है।)

पुनः विधानाचार्य नीचे लिखा मंत्र बोलते हुए इक्कीस बार इंद्रों के मस्तक पर पुष्प क्षेपण करते हुए पूजकों को इंद्र बनायें–

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रौं ह्रः श्रूं ह्रूं क्षः इंद्राय संवौषट्।

(इस मंत्र से इंद्र का संकल्प करें।)

यह यज्ञ दीक्षा विधान हुआ।

अथ भूमिशोधन

(मंडप शुद्धि)

–दोहा–

घंटां ताल मृदंग ध्वनि, दुंदुभि वाद्य बजंत।
जय जय मंगल ध्वनि करूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

ॐ घंटादिवाद्यं उद्घोषयामि स्वाहा।

(बाजों पर पुष्पांजलि क्षेपण कर घंटा, मंजीरा, ढोलक आदि बाजे बजाकर जय जय ध्वनि करें।)

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नमः। स्वस्ति स्वस्ति जीव जीव नंद नंद वर्धस्व-वर्धस्व विजयस्व विजयस्व अनुशाधि अनुशाधि पुनीहि पुनीहि पुण्याहं पुण्याहं मांगल्यं मांगल्यं पुष्पांजलिः। सोदकानि पुष्पाणि क्षिपेत्। (मंडल पर पुष्प क्षेपण करें।)

क्षेत्रपाल पूजा

–शेर छंद–

जिनयज्ञ में इस क्षेत्र की रक्षा सुकीजिये।
संपूर्ण विघ्न दूर करके शांति दीजिये।।
हे क्षेत्रपाल आइये निज भाग लीजिये।
आग्नेय दिश में थापूँ यहाँ पर ही तिष्ठिये।।2।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इंद जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(आग्नेय दिशा में अर्घ चढ़ायें।)

संपूर्ण गेह में सदा निवास जो करें।
श्रीवास्तुदेव सर्व का उपकार वो करें।।

उन वास्तुदेव का यहाँ आह्वान मैं करूँ।
ईशान कोण में यहाँ वसु अर्घ मैं धरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वास्तुदेवाय इंद अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(ईशान दिशा में अर्घ चढ़ायें।)

जिनदेव के विहार में तुम भक्ति से आते।
देवेन्द्र की आज्ञा से सुखद पवन चलाते।।
वायुकुमार देव! यज्ञ भूमि सोधिये।
निज यज्ञभाग लीजिये संतुष्ट होइये।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकुमार देव महीं पूतां कुरु-कुरु हूँ फट् स्वाहा।

(दर्भ के पूले से भूमि का संमार्जन करें।)

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इंद अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतं स्वाहा। (पूर्व और ईशान दिशा के बीच में अर्घ चढ़ायें।)

जिनदेव के विहार में तुम भक्ति से आते।
सुरभित उदक की वृष्टि से अति हर्ष बढ़ाते।।
हे मेघकुमार देव! यज्ञभूमि सोधिये।
निज यज्ञ भाग लीजिये संतुष्ट होइये।।4।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारदेव! धरां प्रक्षालय-प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। (दर्भ पूले से जल लेकर भूमि पर छिड़कें।)

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इंद अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतं स्वाहा। (पूर्व और ईशान दिशा के बीच में अर्घ चढ़ायें।)

संपूर्ण होम अग्नि में तुम पूज्य हुये हो।
निर्वाण की पूजा में अग्रगण्य हुये हो।।
अग्निकुमारदेव! यज्ञभाग लीजिये।
अग्निशिखा से यज्ञभूमि शुद्ध कीजिये।।6।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव! भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। (जलते हुये दर्भ के पूले से भूमि शुद्ध करें।)

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवाय सर्वविघ्नविनाशनाय इंद अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(पूर्व और ईशान दिशा के बीच में दर्भपूला या कपूर जलायें।)

ये साठ सहस नागकुमार देव विचरते।
जिनयज्ञ में भक्तों के सर्व विघ्न को हरते।।
ईशान दिशा में यहाँ जलांजली करूँ।
हे नागदेव आपको संतुष्ट मैं करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा। इंद अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतं प्रतिगृह्यतां स्वाहा। (नागसंतपर्ण के लिये ईशान दिशा में जलांजलि देवें।)

(यहाँ पर पुण्याहवाचन करने का भी विधान है। मंदिर से अतिरिक्त स्थान पर यदि विधान के लिए मंडप बनाया है तो अवश्य ही पुण्याहवाचन करें। लघु पुण्याहवाचन आगे है वहाँ से लेवें।)

दिक्पाल अर्घ

(यह अर्घ मंडल पर ही चढ़ावें)

–दोहा–

पहले ब्रह्म प्रदेश में, पुनः पूर्वदिश आदि।
दर्भ स्थापन विधि करूँ, मंत्र सहित रुचिरादि।।2।।

प्रकृतक्रमविधि अवधानाय पुष्पांजलिः।

श्री जिनेन्द्र के यज्ञ में, ब्रह्म स्थान महान्।
विघ्नशांतिहित दर्भ अरु अर्घ्य करूँ सुख खान।।2।।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा। ब्रह्मदर्भः।

(मंडल पर मध्य में दर्भ स्थापन कर पुष्पांजलि क्षेपण करें पुनः अर्घ चढ़ावे।)

ॐ ह्रीं अंनतज्ञानाय अनंतदर्शनाय अनंतवीर्याय अनंतसुखाय पूर्वदिङ्मुखे दर्भमवस्थापयामि नमः स्वाहा।

(पूर्व दिशा में दर्भ स्थापन पुष्पांजलिः अर्घ चढ़ावें।)

ॐ ह्रीं ब्रह्मणे स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, जिनाय स्वाहा, जिनोत्तमाय स्वाहा, धवाय स्वाहा, धवोत्तमाय स्वाहा, शुचिष्ठाशुचिष्ठेषु कोणाकोणेषु आग्नेयां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा।

(आग्नेय दिशा में दर्भ स्थापना आदि करें)

ॐ ह्रीं अनंतवीर्याय जितेंद्रियाय नमः दक्षिणस्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा। (दक्षिण दिशा में दर्भ स्थापना आदि करें)

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नैऋत्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा।

(नैऋत्य दिशा में दर्भ स्थापित करें)

ॐ ह्रीं परममंगलाय परमपवित्राय परमनिर्वाणकारणाय अपरस्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा। (पश्चिम दिशा में दर्भ स्थापना करें)

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणसंपूर्णाय वायव्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा। (वायव्यदिशा में दर्भ स्थापना करें)

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाय त्रिलोकमहिताय शुचिरत्नत्रयदर्शनकराय उत्तरस्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा। (उत्तर दिशा में दर्भ स्थापना करें)

ॐ ह्रीं नवकेवललब्धिसमन्विताय देवाधिदेवाय ऐशान्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा। (ईशान दिशा में दर्भ स्थापना करें)

ॐ ह्रीं क्रों फणालंकृत धरणेन्द्राय कूर्मवाहनसमन्विताय ईशानेंद्रमध्ये अधरस्यां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा।

(ईशान और पूर्व दिशा के बीच में दर्भ स्थापना करें)

ॐ ह्रीं क्रों हरिणलांछन समन्विताय सोमाय नैऋतवरुणमध्ये ऊर्ध्वायां दिशि दर्भं अवस्थापयामि स्वाहा।

(नैऋत्य और पश्चिम दिशा के बीच में दर्भ स्थापित करें)

भूमि देवता पूजा

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः जलं। ॐ ह्रीं शीलगंधाय नमः चंदनं।
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः अक्षतं। ॐ ह्रीं विमलाय नमः पुष्पं।
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं। ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः दीपं।
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः धूपं। ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः फलं।
ॐ ह्रीं भूर्भूमिदेवतायै भूम्यर्चनं करोमि स्वाहा अर्घ्यं।

अथ मंडप प्रतिष्ठा विधान

चाल–शेर–

ॐ मणिमयी स्तंभ से ऊँचा महामंडप।
दसविध ध्वजाओं से महारमणीय है मंडप।।
तोरण चंदोवा चंवर छत्र पुष्पहार से।
अतिशोभता मंगल कलश व धूप घटों से।।1।।

मंडपांतः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(मंडप के अन्दर सब तरफ और भूषण आदि वस्तुओं पर पृथक्-पृथक् चंदन से सहित पुष्पांजलि क्षेपण करें। पुनः मंडप पर पाँच मंगल कलश स्थापित करें।)

ये पंचरंग सूत्र सुपवित्र सूत्र है।
सूत्रोक्त तप्व के समान श्रेष्ठ सूत्र है।।
पूजन विधान मंडप को चार ओर से।
मैं तीन बार वेष्टित करता हूँ सूत्र से।।2।।

(इस मंडप को बाहर से पंचरंगी कलावा से तीन बार वेष्टित करें। इसे वेष्टित करते समय शांतिजिनं शशि–आदि शांति पाठ बोलने की परम्परा भी देखी जाती है।)

जिनवर समवसरण में शोभे श्रीमंडप।
उसके समान तीन लोक लक्ष्मी का मंडप।।
सब पापताप खंडे ऐसा है ये मंडप।
मैं अर्घ देय पूजूँ ये सौख्य का मंडप।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमंडपाय अर्घं समर्पयामि स्वाहा।

(मंडप के लिए अर्घ चढ़ायें)

अथ कुमुदादिद्वारपालानुकूलनं

–दोहा–

पूर्वादि चउ द्वार की, विधिवत् रक्षा हेतु।
कुमुद आदि सुर को जजूँ, निज पर मंगल हेतु।।

(तोरणों के पास आदि स्थानों में पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

बहु धान्य अंकुरों से मंगल सुद्रव्य से।
मंगल कलश से शोभे वर स्वस्तिकादि से।।
जिनयज्ञ में सुवर्णदण्ड हाथ में धरें।
पूरब के कुमुद द्वारपाल विघ्न परिहरें।।2।।

ॐ ह्रीं कुमुदप्रतीहार! निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः पुष्पांजलिः। इदं अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(पूर्व दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ चढ़ायें।)

बहु धान्य अंकुरों से मंगल सुद्रव्य से।
मंगल कलश से शोभे वर स्वस्तिकादि से।।
जिनयज्ञ में सुवर्ण दंड हाथ में धरें।
दक्षिण दिशा में अंजनसुर विघ्न परिहरें।।3।।

ॐ ह्रीं अंजन प्रतीहार। निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः पुष्पांजलिः। इदं अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(दक्षिण दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ चढ़ावें।)

बहु धान्य अंकुरों से मंगल सुद्रव्य से।
मंगल कलश से शोभे वर स्वस्तिकादि से।।
जिनयज्ञ में सुवर्ण दंड हाथ में धरें।
पश्चिम दिशा में वामनसुर विघ्न परिहरें।।4।।

ॐ ह्रीं वामन प्रतीहार! निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः पुष्पांजलिः। इदं अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(पश्चिम दिशा में पुष्पांजलि क्षेपण कर अर्घ चढ़ायें।)

बहुधान्य अंकुरों से मंगलसुद्रव्य से।
मंगल कलश से शोभे वर स्वस्तिकादि से।।
जिनयज्ञ में सुवर्णदंड हाथ में धरें।
उत्तर में पुष्पदंतदेव विघ्न परिहरें।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्पदंतप्रतीहार। निजद्वारि तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः पुष्पांजलिः। इदं अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुँ दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

इति मंडपप्रतिष्ठा

जाप्यानुष्ठान प्रारंभ विधि

(जाप्य विधि के प्रारम्भ में मंगलाष्टक पढ़ें)

जटांतौ बिंदुसंयुक्तौ, कला वं पं सुवेष्टितम्।
सोममध्ये लिखित्वाम्भो, मध्ये स्नानादिकं चरेत्।।1।।

भावार्थ—एक रकेबी में अर्ध चन्द्र का आकार केशर से सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली से बनायें, उसके बीच में झं ठं और अधोरेखा पर दक्षिणावर्त क्रम से 16 स्वर और ऊपर की रेखा पर मध्य में वं पं भी लिखें और उसमें निम्नलिखित मंत्र पढ़कर पानी डाल कर जल शुद्ध कर लें। पुनः उसी जल से आगे के मंत्रों द्वारा अपने अंगों की शुद्धि करें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते गंगासिंध्वादिजलं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(इति जल शुद्धि मंत्रः)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षः दर्भपूलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

ॐ ह्रीं दर्भासने अहं उपविशामि स्वाहा।

(क्रम से अ सि आ उ सा को मस्तक, ललाट, नेत्र, कंठ और हृदय में धारण करें। आचार्य, सिद्ध, श्रुत, चारित्रादि भक्ति पढ़ें। अनंतर उपर्युक्त शुद्ध जल से निम्न मंत्रों द्वारा उन अवयवों को शुद्ध करें।)

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों अंगूठे जल से शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

(हस्तपवित्रीकरणं)

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मम शिरः रक्ष रक्ष स्वाहा।

(शिरसि जलं क्षिपेत्)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(मुखं प्रक्षालयेत्)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(हृदयं प्रक्षालयेत्)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(नाभिं प्रक्षालयेत्)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

(आगे के मंत्रों से उन उन दिशा में पीली सरसों क्षेपण करता जाये)

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशागतविघ्नान् निवारय-निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (सर्षपं पूर्वदिशि क्षिपेत्)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशागतविघ्नान् निवारय-निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (सर्षपं दक्षिणदिशि क्षिपेत्)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशागतविघ्नान् निवारय-निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (सर्षपं पश्चिमदिशि क्षिपेत्)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशागतविघ्नान् निवारय-निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (सर्षपं उत्तरदिशि क्षिपेत्)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशागतविघ्नान् निवारय-निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (सर्षपं सर्वदिक्षु क्षिपेत्)

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (सर्वांगरक्षणं)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगद् रक्ष-रक्ष स्वाहा।

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय-स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः असि आ उसा अर्हं नमः स्वाहा। (सर्वांगसेचनं– सर्वांगशुद्ध करना)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशागतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा। (इति सर्वत्र सर्षपं क्षिपेत्)

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(इति परिचारक रक्षा)

ॐ हूँ फट् किरटिं घातय घातय पर विघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखंडान् कुरु-कुरु आत्मविद्यां रक्ष-रक्ष परविद्यां छिंद छिंद परमंत्रान् भिंद भिंद क्षः फट् स्वाहा।

(इस मंत्र को मन में 21 बार पढ़कर सभी जाप्य करने वालों पर और उस स्थान पर सरसों क्षेपण करें।)

अथ संकल्पः–ॐ ह्रीं मध्यलोके जंबूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे...देशे ...ग्रामे...देवशास्त्रगुरूसंनिधौ परमधार्मिकविद्वज्जनसन्निधौ शांतिकपौष्टिक-सकलकार्यसिद्ध्यर्थं इंद्रध्वजविधानस्य[1] एतद्[2]...जाप्यं.....वाराद् आरभ्य...वासरपर्यतं करिष्यामहे। (संकल्प हेतु हाथ में लिये हुए सुपारी, हल्दी, पुष्प आदि पाटे पर छोड़ें)

पुनः जाप्य करने के स्थल पर जो यंत्र अथवा जो प्रतिमा विराजमान की हों, उनका विधिवत् अभिषेक पूजन करके जाप्य प्रारम्भ करें।

इन्द्रध्वज विधान की जाप्य–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा मध्यलोकसंबंधिचतुःशताष्टपंचाशत् श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

सिद्धचक्र विधान की जाप्य–

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा अनाहतविद्यायै नमः।

शांति विधान की जाप्य–

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय जगत्शांतिकराय सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

1. जो विधान होवे उसको बोलना। 2. जो विधान हो उसकी जाप का मंत्र बोलें।

हवनविधि

(इसमें सर्वप्रथम संकल्प करके पुण्याहवाचन करें)

संकल्प मंत्र

–शेर छंद–

अर्हंत देव कथित दयामूल धर्म है।
याजक व श्रावकों के लिये सौख्य मर्म है।।
इन धर्मनिष्ठ जनों को सद्धर्म वृद्धि हो।
श्रीबल व आयु स्वास्थ्य व ऐश्वर्य वृद्धि हो।।1।।

अथ श्रीमज्जिनशासने भगवतो महतिमहावीरवर्द्धमानतीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे, श्रीमूलसंघे, मध्यलोके, जम्बूद्वीपे सुदर्शनमेरोर्दक्षिणभागे, भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ... देशे ... नगरे विविधालंकारमंडितयज्ञमंडपे, हुंडावसर्पिणीकाले, दुःषमनामनि पंचमे कलियुगे प्रवर्तमाने, ... संवत्सरे ... अयने ... ऋतौ ... मासे ... पक्षे ... तिथौ जिनप्रतिमायाः सन्निधौ, मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकादिचतुर्विधसंघसन्निधौ विधिना विधियमान इन्द्रध्वजविधान[1]कर्मणि सकलाभ्युदयनिःश्रेयससिद्ध्यर्थं, शुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं शांतिहोमविधिं विधास्यामः।

तत्कर्मणः पुण्याहार्थं ऋद्ध्यर्थं स्वस्त्यर्थं पुण्याहवाचनां कर्तुमुत्सहामहे।

(ऐसा संकल्प करके पुण्याहवाचन करें।)

(पुण्याहवाचन के पूर्व करीब एक सेर श्वेत चावल एक चौकी पर बिछावें, उस पर ''ह्रींकार'' से वेष्टित स्वास्तिक बनायें। उसके ऊपर जल से परिपूर्ण गंध अक्षत आदि से अर्चित अशोक या आम्र के पत्तों से सुशोभित श्वेत सूत्र से कंठ वेष्ठित, नूतन वस्त्र, माला आदि से शोभित, जिसके अन्दर मांगलिक वस्तु हल्दी, सुपारी, नवरत्न आदि डाले गये हैं, ऐसे कलश को स्थापित[2] करें। पुनः उस कलश के जल से पूजक आदि सभी जनों पर आगे के शांति मंत्र को बोलते हुए जल छिड़कें।)

1. जिस विधान में होम कर रहे हों, वहाँ पर उस विधान का नाम लेवें। 2. इस टिप्पण का विवरण अगले पेज पर है।

पुण्याहवाचनं

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रियंतां प्रियंतां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः त्रिलोकनाथाः त्रिलोकप्रद्योतनकराः वृषभाऽजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्व-चन्द्रप्रभपुष्पदन्तशीतलश्रेयोवासुपूज्यविमलानंतधर्मशांतिकुँथ्वरमल्लिमुनिसुव्रत-नमिनेमिपार्श्वश्रीवर्धमानाः शांताः शांतिकराः सकलकर्मरिपुविजयकांतार-दुर्गविषमेषु रक्षंतु नो जिनेंद्राः सर्वविदश्च। श्री ह्री धृतिकीर्तिकांतिबुद्धिलक्ष्मी-मेधाविन्यः सेवाकृषिवाणिज्यवाद्यलेख्यमंत्रसाधनचूर्णिप्रयोगस्थानगमन-सिद्धिसाधनाय अप्रतिहतशक्तयो भवंतु नो विद्यादेवताः। नित्यमर्हत्सिद्धा-चार्योपाध्यायसर्वसाधवश्च भगवंतो नः प्रियन्तां प्रियन्तां। आदित्य सोमांगार-बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुग्रहाश्च नः (प्रियंतां प्रियंतां)। तिथिकरणमुहूर्त लग्नदेवताः इह चान्यग्रामनगरादिषु अपि वास्तुदेवताश्च ताः सर्वा गुरूभक्ता अक्षीणकोषकोष्ठागाराः भवेयुः दानतपोवीर्य नित्यमेवास्तु नः प्रीयंता प्रीयंतां। मातृपितृ-भ्रातृसुतसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहितानां धनधान्यैश्वर्यद्युति-बलयशोवृद्धिरस्तु। प्रमोदोऽस्तु। शांतिर्भवतु। पुष्टिर्भवतु। सिद्धिर्भवतु। काममांगल्योत्सवाः सन्तु। शाम्यंतु घोराणि। शाम्यंतु पापानि। पुण्यं वर्द्धताम्। धर्मोवर्द्धताम्। श्रेयायुषी वर्द्धताम्। कुलं गोत्रं चाभिवर्द्धताम्। स्वस्ति भद्रं

---

1. याचक यजमान के हाथ से मंत्र बोलकर कलश स्थापन करावें, पुनः यजमान से दूसरे कलश से उसमें जल धारा कराते हुए उस जल को शुद्ध करा करके उस कलश को अर्घ्य चढ़ाकर उसे उठाकर अशोक आदि के पत्तो से या दर्भ के पूले से पुण्याह मंत्रो द्वारा सभी पर जल छिड़कें।
   कलश स्थापन मंत्र–ॐ ह्रीं स्वस्तये पुण्याहं कलशं स्थापयामि स्वाहा।
   जल शुद्धिकरण मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंछ-केषरिमहापुंडरीकपुंडरीकगंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरितहरिकांतासीतासीतो–दानारीनरकांतासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजलसुवर्णघटप्रक्षालितनवरत्न-गंधाक्षतपुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। इति जलेन प्रसिंच्य पवित्रीकरणं।
   कलशार्चन का मंत्र–ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट् कलशार्चनं करोमि स्वाहा।
   अर्घ्यं.....

चास्तु नः। हतास्ते परिपंथिनः। शत्रवः शमं यान्तु। निष्प्रतिघमस्तु। शिवमतुलमुप्त सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छंतु नः स्वाहा।

(ॐ कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति प्रार्थयेत्। प्रार्थितविप्राः पुण्याहं कर्मणोऽस्तु इति ब्रूयुः। अनेन प्रकारेण। ॐ कर्मण स्वस्ति भवंतो ब्रुवन्तु स्वस्ति कर्मणेऽस्तु च। कर्मऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु कर्मऋद्धिस्तु। एतद्वाक्यत्रयोच्चारणान्ते त्रिवारपात्रांतरपातितपूर्णकलशजलेन सभां शांतिमंत्रेण सिंचेत्।)

शांतिमंत्र

–शेर छंद–

चारों निकाय देव के मुकुटाग्र मणी से।
जिनके चरण चुंबित हुये अर्हंत देव वे।।
सब दोष शून्य परम ज्ञान ज्योति रूप हैं।
बहिरंग समवसरण मध्य चित् स्वरूप हैं।।2।।

अथ अभ्यर्हिताखिलाभ्युदय निःश्रेयस संपादकः स्याद्वादन्यायनायकः परमाप्तो भगवानर्हद्भट्टारकः। मातृपितृभ्रातृसृहृत्स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहितयजमा नस्य (...) सकलकल्याणं करोतु। शांतिं कांतिमाविष्करोतु प्रादुष्करोतु। सौभाग्यमारोग्यमातनोतु संतनोतु। संपदमापदं संपादयतु संविदारयतु। अयशोयशो निष्कासयतु विकासयतु। एनो मतिमवसादयतु प्रसादयतु। सुखमसुखं तनोतु धुनोतु। अनभिमतमभिमतं वारयतु पूरयतु। श्रियमायुः श्लाघयतु द्राघयतु। पुण्यं पापं व्याजृंभयतु स्तंभयतु। कुपथं सुपथं व्यावर्तयतु प्रवर्तयतु। सत्कर्मासत्कर्म बोधयतु रोधयतु। अनेकांतमेकांतं निध्यापयतु विध्यापयतु। विद्यामविद्यां उन्मीलयतु समुन्मूलयतु। सत्शास्त्रं असच्छास्त्रं पोषयतु शोषयतु। श्रेयः प्रत्यवायं पुष्णातु मुष्णातु। क्षामं क्षेमं क्रशयतु शृशयतु। शौचमाचारं प्रभृयतु द्रढयतु। कुमतिं सुमतिं अनिशं मर्दयतु वर्धयतु। सकलाभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिं करोतु वृद्धिं करोतु। झ्वीं क्षीं हं सः स्वाहा।

–वसंततिलका छंद–

कल्याण हो धन बढ़े सुख शांति होवे।
दीर्घायु हो सुकुलवंशसमृद्धि होवे।।

आरोग्य हो फल अभीसिप्त प्राप्त होवे।
हे वत्स! ते जिनपदांबुज प्रीति होवे।।3।।

चक्रीश पंचम कहे वर कामदेवा।
तीर्थेश षोडश तुम्हें त्रैलोक्य पूजे।।
हे शांतिनाथ! जग में तुम शांतिदाता।
श्री शांतिहोम करणाय तुम्हें नमूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भूः स्वाहा।

विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः।

घंटा ताल मृदंग ध्वनि, दुंदुभि वाद्य बजंत।
जय जय मंगल ध्वनि करूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।5।।

ॐ घंटादिवाद्यं उद्घोषयामि स्वाहा।

(बाजों पर पुष्पांजलि क्षेपण कर घंटा, मजीरा, ढोलक, आदि बाजे बजाकर जय जय ध्वनि करें)

क्षेत्रपाल पूजा

–शेर छंद–

जिन यज्ञ में इस क्षेत्र की रक्षा सुकीजिये।
संपूर्ण विघ्न दूर करके शांति दीजिये।।
हे क्षेत्रपाल आइये निज भाग लीजिये।
आग्नेय दिश में थापूँ यहाँ पर ही तिष्ठिये।।6।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपाल! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(आग्नेय दिशा में अर्घ चढ़ावें)

वास्तुदेव पूजा

संपूर्ण गेह में सदा निवास जो करें।
श्रीवास्तुदेव सर्व का उपकार वो करें।।
उन वास्तुदेव का यहाँ आह्वान मैं करूँ।
ईशान कोण में यहाँ वसु अर्घ मैं धरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट्।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं वास्तुदेव! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं वास्तुदेवाय इदं अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(ईशान दिशा में अर्घ चढ़ावें)

वायुकुमार पूजा

जिनदेव के विहार में तुम भक्ति से आते।
देवेन्द्र की आज्ञा से सुखद पवन चलाते।।
वायुकुमार देव! यज्ञ भूमि सोधिये।
निज यज्ञ भाग लीजिये संतुष्ट होइये।।8।।

ॐ ह्रीं वायुकुमार देव! महीं पूतां कुरू कुरू हूं फट् स्वाहा।

(दर्भ के पूले से भूमि का संमार्जन करें)

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घं पाद्यं गंधं अक्षतं पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा। (पूर्व और ईशान दिशा के बीच में अर्घ चढ़ावें)

मेघकुमार पूजा

जिनदेव के विहार में तुम भक्ति से आते।
सुरभित उदक की वृष्टि अति हर्ष बढ़ाते।।
हे मेघकुमर देव! यज्ञ भूमि सोधिये।
निज यज्ञ भाग लीजिये संतुष्ट होइये।।9।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार देव! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। (दर्भ पूले से जल लेकर भूमि पर छिड़कें)

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरूं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा। (पूर्व और ईशान दिशा के बीच में अर्घ चढ़ावें)

अग्निकुमार पूजा

संपूर्ण होम अग्नि में तुम पूज्य हुये हो।
निर्वाण की पूजा में अग्रगण्य हुये हो।।
अग्निकुमार देव! यज्ञ भाग लीजिये।
अग्नीशिखा से यज्ञ भूमि शुद्ध कीजिये।।10।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार देव! भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा। (दर्भ के पूले से जलते हुये भूमि शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवाय सर्वविघ्नविनाशनाय इदं अर्घं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतं प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

(पूर्व और ईशान दिशा के बीच में दर्भपूला या कपूर जलावें)

नागकुमार पूजा

से साठ सहस नागकुमर देव विचरते।
जिन यज्ञ में भक्तों के सर्व विघ्न को हरते।।
ईशान दिशा में यहाँ जलांजली करूँ।
हे नागदेव आपको संतुष्ट मैं करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं क्रों षष्टिसहस्रसंख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा। इदं अर्घं पाद्यं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतं प्रतिगृह्यतां स्वाहा। (नागसंतर्पण के लिये ईशान दिशा में जलांजलि देवें)

(यहाँ पर पुण्याहवाचन करने का भी विधान है। मंदिर से अतिरिक्त स्थान पर यदि विधान के लिये मंडप बनाया है तो अवश्य ही लघु पुण्याहवाचन करें।

दिक्पाल अर्घ

(यह अर्घ मंडप पर ही चढ़ावें)

–दोहा–

पहले ब्रह्म प्रदेश में, पुनः पूर्वदिश आदि।
दर्भ स्थापन विधि करूँ, मंत्रसहित रुचिरादि।।12।।

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः स्वाहा। ब्रह्मादिदशदिक्षु दर्भः।

भूमि अर्चन–ॐ नीरजसे नमः जलं। शीलगंधाय नमः चंदनं। अक्षताय नमः अक्षतं। विमलाय नमः पुष्पं। दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं। ज्ञानोद्योताय नमः दीपं। श्रुतधूपाय नमः धूपं। परमसिद्धाय नमः फलं। ॐ ह्रीं भूमि देवतायै नमः अर्घ्यं.....।

–शेर छंद–

पांडुकशिला प्रसिद्ध उसके बीच सिंहासन।
उसके सदृश वेदी के मध्य रखा सिंहासन।।
शुचि नीर से इस पीठ की प्रक्षालना करूँ।
अक्षत कुसुम व दर्भ आदि थापना करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठ ठ श्री पीठ स्थापनं करोमि स्वाहा।
(श्री पीठ स्थापित करें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन श्री पीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

तत्पीठोत्परिप्रागग्रवस्त्राच्छादनं। (पीठ प्रक्षालन करें)

ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः । (पुष्प, अक्षत और दर्भ स्थापित करें)

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा। (पीठ को अर्घ चढ़ाना)

इस पीठ पे जिनबिंब की स्थापना करूँ।
बहु वाद्य बजा लोक में प्रभावना करूँ।।
प्रतिमा के दायें भाग में त्रयचक्र को धरूँ।
त्रय छत्र बायें भाग में धर ताप को हरूँ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थादिनाथ भगवन्! इह पांडुकशिलापीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। (श्री पीठ पर जिनबिंब को स्थापित करें)

दक्षिणपार्श्वे चक्रत्रयस्थापनं। वामपार्श्वे छत्रत्रय स्थापनं।

(प्रतिमा के दायें भाग में तीन चक्र और बायें भाग में तीन छत्र स्थापित करना)

पुनः जिनेंद्रदेव का आह्वान आदि करके नीर से जिन प्रतिमा के चरणों का प्रक्षालन करके जल, चंदन आदि आठ द्रव्य चढ़ावें।

अर्हतदेव पूजा

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उ सा हं एहि एहि संवौषट् आह्वानं।

ॐ ह्रां ... अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रां ... अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अनंतानंतज्ञानशक्तये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(इसी मंत्र को पुनः पुनः बोलकर आठों द्रव्य चढ़ाकर 'उदकचंदन' आदि बोलकर अर्घ चढ़ावें)

तीन चक्र की पूजा

राजेन्द्र व देवेन्द्र व जिनेन्द्र योग्य हैं।
ये चक्र तीन मंगलमय मुख्य वस्तु हैं।।
जिन पास में स्थापित की अर्चना करूँ।
संसारचक्र नाश के मुक्त्यंगना वरूँ।।15।।

ॐ नीरजसे नमः जलं। ॐ शीलगंधाय नमः चंदनं।

ॐ अक्षताय नमः अक्षतं। ॐ विमलाय नमः पुष्पं।

ॐ दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं। ॐ ज्ञानोद्योताय नमः दीपं।

ॐ श्रुतधूपाय नमः धूपं। ॐ परमसिद्धाय नमः फलं।

ॐ ह्रीं चक्रत्रयेभ्यः अर्घ्यं।

तीन छत्र की पूजा

त्रैलोक्य के स्वामित्व के ये चिन्ह बताये।
ये तीन छत्र मंगलमय वस्तु कहाये।।
जिनपास में स्थापित की अर्चना करूँ।
संसार ताप नाशो यह प्रार्थना करूँ।।16।।

ॐ नीरजसे नमः जलं (उपर्युक्त मंत्रों से आठों द्रव्य चढ़ावें)

पुनः कुण्ड के निकट बैठने हेतु निम्न मंत्रों से भूमिशुद्धि आदि करें।

ॐ ह्रीं क्षीं भूः शुद्धयतु स्वाहा। (भूमि पर जल छिड़कें)

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठं आसनं निक्षिपामि स्वाहा। (आसन बिछावें)

ॐ ह्रीं अर्हं ह्युँ ह्युँ णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा।

(दर्भासन पर बैठें)

होम और पूजनादि द्रव्य पास में रखके।
सब वस्तु शोध करके उचित मौन को धरके।।
सब मंत्र क्रिया क्रम में सावधान हो रहा।
इस होम क्रिया विधि को प्रारंभ कर रहा।।17।।

(होम द्रव्य पूजानादि द्रव्य को समीप में रखना। स्रुच और स्रुवा आदि को पास में लेना और जल से धोना। सभी पात्रों को ग्रहण करने और रखने में देखना, शोधन करना। घी के पात्र को उठाकर जमीन को देखकर रखना। घी को दर्भ से हिलाकर देखकर तपा लेना। इस तरह पूजक को प्राणियों के घात के परिहार हेतु आदर सहित सारे कार्य करने चाहिये।)

ॐ ह्रीं हं मौनस्थितायार्हं मौनव्रतं गृण्हामि स्वाहा। (मौनव्रत ग्रहण करें)

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय परमपवित्राय पवित्रजलेन होमकुण्डशुद्धिं पात्रशुद्धिं च करोमि स्वाहा।

(होम कुण्ड पर और सभी पात्रों पर जल छिड़कें)

–दोहा–

होम कुण्ड की अर्चना, अग्नि प्रजालन आदि।
सर्वविधि विधिवत् करूँ, मिटे कर्म की व्याधि।।18।।

ॐ प्रक्रमक्रमविधि अवधानाय पुष्पांजलिः।

चौकोन कुण्ड की पूजा

तीर्थेश से संबंधि ये चौकोन कुण्ड है।
श्रीगार्हपत्य आश्रय से इंद्र वंद्य है।।
निर्वाण समय इंद्र रचित पुण्य पुंज है।
इस कुंड की पूजा करूँ ये ध्यान कुंज है।।19।।

ॐ नीरजसे नमः जलं। ॐ शीलगंधाय नमः चंदनं।
ॐ अक्षताय नमः अक्षतं। ॐ विमलाय नमः पुष्पं।
ॐ दर्पमथनाय नमः नैवेद्यं। ॐ ज्ञानोद्योताय नमः दीपं।
ॐ श्रुतधूपाय नमः धूपं। ॐ परमसिद्धाय नमः फलं।
ॐ चतुरस्रकुण्डाय अर्घं ... ।

त्रिकोन कुण्ड की पूजा

गणधर गुरू संबंधि यह त्रिकोन कुण्ड है।
ये आह्वानीय अग्नि के आश्रय से श्रेष्ठ है।।
निर्वाण समय इंद्ररचित पुण्य पुंज है।
इस कुण्ड की पूजा करूँ यह ध्यान कुंज है।।20।।

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ायें।

गोल कुण्ड की पूजा

सामान्य केवली मुनी का गोल कुण्ड है।
ये दक्षिणाग्नि आश्रय से सर्ववंद्य है।।
निर्वाण समय इंद्र रचित पुण्यपुंज है।
इस कुण्ड की पूजा करूँ ये ध्यान कुंज है।।21।।

ॐ नीरजसे नमः इत्यादि मंत्रों से अष्टद्रव्य चढ़ायें।

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसंदर्भाय केवल दर्शने प्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रेण दर्भपरिधिं उदुंवरसत्परिधिं च करोमि स्वाहा।

(यह मंत्र बोलकर होम कुण्ड के चारों ओर पाँच-पाँच दर्भकाण्ड की परिधि करें)

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसंदर्भाय केवलदर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रेण होमकुण्डानां मध्ये शुष्कदर्भपरिस्तरणं करोमि स्वाहा।

(यह मंत्र बोलकर होमकुण्ड के मध्य सूखा दर्भ स्थापित करें, दर्भ के अभाव में कपूर स्थापित करें)

पुनः अग्नि स्थापना

ॐ ह्रीं स्वस्तये श्रीमन्तं पवित्रतरं अग्नीन्द्रं स्थापयामि स्वाहा।

(कुण्ड में अग्नीन्द्र की स्थापना करें)

जैनेन्द्रवाक्य के समान सुप्रसन्न है।
सूखे हुये दर्भाग्र से उत्पन्न अग्नि है।।
कुण्डों में रखे ईंधन की शुद्ध अग्नि है।
मैं अग्नि संधुक्षण करूँ ये समय मान्य है।।22।।

उसहायिजिणे पणमामि सया, अमलो विरजो वरकप्पतरू।
सअ कामदुहा मम रक्ख सया, पुरु विज्जुणुही पुरु विज्जुणुही।।23।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं स्वाहा। अग्निं संधुक्षयेत्

(कपूर से अग्नि संधुक्षित करें)

तीर्थकरादिक से प्रथित, गार्हपत्य प्रमुखाग्नि।
कर्मेंधन के दहन हित, समिधाहुति दूँ मान्य।।

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावलोकिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा।

(एक समिधा की आहुति देवें)

गार्हपत्य अग्नि पूजा

तीर्थेश के निर्वाण महोत्सव में भक्ति से।
अग्निकुमार ने प्रगट की अग्नि मुकुट से।।
वो गार्हपत्य अग्नि इंद्रवंद्य जगत में।
पूजूँ वही चौकोण कुण्ड अग्नि आज मैं।।24।।

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः इत्यादि मंत्रों से पूजा करें।

आहवनीय अग्नि पूजा

गणधर गुरू के अन्त्य महोत्सव में भक्ति से।
अग्निकुमार ने प्रगट की अग्नि मुकुट से।।
वो आह्वनीय अग्नि इंद्र वंद्य जगत में।
पूजूँ वही त्रिकोण कुंड अग्नि आज मैं।।25।।

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः इत्यादि आठों द्रव्य चढ़ावें।

दक्षिणाग्नि पूजा

जिनकेवली के अन्तिम उत्सव में भक्ति से।
अग्निकुमार ने प्रगट की अग्नि मुकुट से।।
वो दक्षिणाग्नि इंद्रगण से वंद्य जगत् में।
पूजूँ वही ही गोलकुण्ड अग्नि आज मैं।।26।।

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः इत्यादि मंत्रों से पूजा करें।

कटनी त्रय की अर्चना, करूँ प्रीति मन लाय।
तिथिपति ग्रह देवेन्द्र अरू, दिक्पालादि बुलाय।।

विधियज्ञ प्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिः।

पहली कटनी की पूजा

जिननाथ पादभक्त हैं तिथि देवता सभी।
ये लोक की यात्रा यहाँ वर्तन करें सभी।।
आह्वान करके यज्ञभाग देउं मैं यहाँ।
ये सर्वजन को सुख व शांति देवेंगे यहाँ।।27।।

ॐ ह्रीं यक्षवैश्वानर राक्षसनधृत पन्नगअसुरसुकुमारपितृ विश्वमालि चमर वैरोचन महाविद्यमार पिंडाशिन् पंचदशतिथिदेवताः सर्वेऽपि आयात-आयात यानायुधयुवतिजनैः सार्धं।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा। पुष्पांजलिः।

साघ्र्यं चरूं अमृतमिमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत। अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं यक्षादिपंचदशतिथिदेवाः यष्ट्रप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा। पूर्णार्घ्यं। (पूर्णार्घ्य चढ़ावें)

दूसरी कटनी की पूजा

जो मेरू की प्रदक्षिणा सदैव कर रहे।
नरलोक में निग्रह अनुग्रह भी कर रहे।।
वे सूर्य चंद्र मंगल बुध गुरू व शुक्र हैं।
शनि राहु केतु नवग्रह का अर्घ सुखद है।।28।।

ॐ ह्रीं आदित्य सोमांगारकबुधबृहस्पति शुक्रशनैश्चरराहुकेतवः नवग्रहदेवाः सर्वेऽपि आयात आयात यानायुधयुवतिजनैः सार्धं।

(ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा। पुष्पांजलिः।)

साघ्र्यं चरुं अमृतं इमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत-गृण्हीत। (अर्घ्यं)

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवाः सर्वेऽपि यष्ट्रप्रभृतीनां शांति कुरुत कुरुत स्वाहा। पूर्णार्घ्यं। (पूर्णार्घं चढ़ावें)

तीसरी कटनी की पूजा

भाावनसुरों के इंद्र दश व्यंतर के आठ हैं।
ज्योतिष्क के रवि चंद्र इंद्र दो विख्यात हैं।।
सुर कल्पवासि के अधिप बारह प्रसिद्ध हैं।
बत्तीस इंद्र को जजूँ ये सर्व इष्ट हैं।।29।।

ॐ ह्रीं असुरेन्द्रादि द्वात्रिंशदिंद्राः सर्वेऽपि आयात आयात यानायुधयुवति-जनैः सार्धं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा। पुष्पांजलिः।

साघ्र्यं चरुं अमृतं इमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं असुरेंद्रादि द्वात्रिंशदिन्द्रा यष्ट्रप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा। (पूर्णार्घ्यं)

दिक्पाल पूजा

जिन यज्ञ में समस्त विघ्न दूर हटाते।
जिन धर्म का अतिशय प्रभाव जग में बढ़ाते।।
इंद्रादि दश दिक्पाल का आह्वान मैं करूँ।
पूजन में भाग देकर सन्मान मैं करूँ।।30।।

ॐ ह्रीं इंद्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरैशानशेषशीतांशवो दशदिक्पालदेवाः सर्वेऽपि आयात आयात यानायुधयुवति जनैः सार्धं ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा।

(पुष्पांजलिः।)

साघ्र्यं चरुं अमृतं इमं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृण्हीत गृण्हीत अर्घ्यं।

ॐ ह्रीं इंद्रादिदशदिक्पालदेवा यष्ट्रप्रभृतीनां शांतिं कुरुत कुरुत स्वाहा।

(पूर्णार्घ्यं।)

सिद्धों की अर्चना में जो क्रियामंत्र हैं।
जो जैनवेद में ये साधनादि मंत्र हैं।।
ये होममंत्र हैं इन्हीं से होम करूँ मैं।
इन तीन अग्नि में हवन प्रारंभ करूँ मैं।।31।।

उद्पीठिका मंत्रों से आहुति

पीठिका मंत्र छत्तीस से, काम्यमंत्र तक लेय।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती येह।।32।।

(अब 36 पीठिका मंत्रों से अन्न की आहुति देवें)

ॐ सत्यजाताय नमः। अर्हज्जाताय नमः। परमाजाताय नमः। अनुपमजाताय नमः। स्वप्रदाय नमः। (स्वप्रधानाय नमः) अचलाय नमः। अक्षताय नमः। अव्याबाधाय नमः। अनंतज्ञानाय नमः। अनंतदर्शनाय नमः। अनंतवीर्याय नमः। अनंतसुखाय नमः। नीरजसे नमः। निर्मलाय नमः। अच्छेयाय नमः। अभेद्याय नमः। अजराय नमः। अमराय नमः। अप्रमेयाय नमः। अगर्भवासाय नमः। अक्षोभ्याय नमः। अविलीनाय नमः। परमधनाय नमः। परमकाष्ठयोगरूपाय नमः। लोकाग्रवासिने नमो नमः। परमसिद्धेभ्यो नमो नमः। अर्हत्सिद्धेभ्यो नमो नमः। केवलिसिद्धेभ्यो नमो नमः। अंतकृत्सिद्धेभ्यो नमो नमः। परंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः। अनादिपरंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः। अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे आसन्न भव्य आसन्न भव्य, निर्वाणपूजार्ह निर्वाणपूजार्ह अग्नीन्द्राय (अग्नीन्द्र) स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

दश जाति मंत्रों से आहुति

–दोहा–

दशविध जातीमंत्र से, होय निराकुल चित्त।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती अद्य।।33।।

ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्यामि। अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्यामि। अर्हन्मातुः शरणं प्रपद्यामि। अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्यामि। अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्यामि। अनुपमजन्मनः शरणं प्रपद्यामि। रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्यामि। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे, ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते, सरस्वति सरस्वति, स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

तेरह निस्तारक मंत्रों से आहुति

–दोहा–

निस्तारक आदी कहे, तेरह मंत्र प्रसिद्ध।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती अद्य।।34।।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। अर्हज्जाताय स्वाहा। षट्कर्मणे स्वाहा। ग्रामपतये स्वाहा। अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा। स्नातकाय स्वाहा। श्रावकाय स्वाहा। देवब्रह्मणाय स्वाहा। सुब्राह्मणाय स्वाहा। अनुपमाय स्वाहा। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे, निधिपते निधिपते, वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा।।13।।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

अट्ठारह ऋषिमंत्रों से आहुति

–दोहा–

अट्ठारह ऋषिमंत्र से, होय निराकुल चित्त।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती अद्य।।35।।

ॐ सत्यजाताय नमः। अर्हज्जाताय नमः। निर्ग्रंथाय नमः। वीतरागाय नमः। महाव्रताय नमः। त्रिगुप्ताय नमः। महायोगाय नमः। विविधयोगाय नमः।विविधर्द्धये नमः। अंगधराय नमः। पूर्वधराय नमः। गणधराय नमः। परमर्षिभ्यो नमः। अनुपमजाताय नमो नमः। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे, भूपते

भूपते नगरपते नगरपते, कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।।18।।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

सोलह सुरेन्द्र मंत्रों से आहुति

–दोहा–

मंत्र सुरेन्द्रादिक कहे, सोलह दिवसुख काज।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती आज।।36।।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। अर्हज्जाताय स्वाहा। दिव्यजाताय स्वाहा। दिव्यार्च्यजाताय स्वाहा। नेमिनाथाय स्वाहा। सौधर्माय स्वाहा। कल्पाधिपतये स्वाहा। अनुचराय स्वाहा। परंपरेन्द्राय स्वाहा। अहमिन्द्राय स्वाहा। परमार्हताय स्वाहा। अनुपमाय स्वाहा। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे, कल्पपते कल्पपते, दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते, वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा।।16।।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

बारह परम राजादि मंत्रों से आहुति

–दोहा–

मंत्र परमराजादि हैं, बारह निज सुख काज।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती अद्य।।37।।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा। अर्हज्जाताय स्वाहा। अनुपमेन्द्राय स्वाहा। विजयार्च्यजाताय स्वाहा। नेमिनाथाय स्वाहा। परमजाताय स्वाहा। परमार्हताय स्वाहा। अनुपमाय स्वाहा। सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे, उग्रतेजः उग्रतेजः, दिशांजय दिशांजय, नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा।।12।।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

छब्बीस परमेष्ठी मंत्रों से आहुति

–दोहा–

परमेष्ठी आदिक कहे, छब्बिस मंत्र प्रसिद्ध।
पूजा शेष हव्यादि से, करूँ आहुती अद्य।।38।।

ॐ सत्यजाताय नमः। अर्हज्जाताय नमः। परमजाताय नमः। परमार्हताय नमः। परमरूपाय नमः। परमतेजसे नमः। परमगुणाय नमः। परमस्थानाय नमः। परमयोगिने नमः। परमभाग्याय नमः। परमर्द्धये नमः। परमप्रसादाय नमः। परमकांक्षाय नमः। (परमकांक्षिताय) नमः। परमविजयाय नमः। परमविज्ञानाय नमः। परमदर्शनाय नमः। परमवीर्याय नमः। परमसुखाय नमः। सर्वज्ञाय नमः। अर्हते नमः। परमेष्ठिने नमो नमः। परमनेत्रे नमो नमः। सम्यग्दृष्टे, सम्यग्दृष्टे, त्रिलोकविजय त्रिलोकविजय, धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते, धर्मनेमे धर्मनेमे, स्वाहा।।2।।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु।

–शेर छंद–

शाल्यन्न घी व पायस! पूआदि लिया है।
पक्वान्न बहुत लेकर के हवन किया है।।
इस अन्न से की आहुति मैं भक्ति भाव से।
हे अग्निदेव मेरे सब विघ्न शांत हों।।39।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव! यजमान प्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (पूर्णार्घ्यं)

समिधा आहुति

ये क्षीरतरु पलाश आदि काष्ठ की समिधा।
लम्बी कहीं नव अंगुल ये होम की समिधा।
ये मोटी दो या तीन भी अंगुल प्रमाण हैं।
इन इक सौ आठ समिधा से होम मान्य है।।40।।

(गार्हपत्य अग्नि अर्थात् चौकोन कुण्ड में 108 समिधा से शांतिमंत्र द्वारा 108 आहुति देवें।)

***शांतिमंत्र**–ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय

*यदि इतने बड़े शांतिमंत्र से 108 बार आहुति का समय न होवे तो 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।' अथवा 'ॐ ह्रीं असि आ उ सा नमः सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा' इन लघु मंत्रों से भी आहुति कर सकते हैं।

सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार यजमानप्रभृतीनां सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (पूर्णार्घ्यं)

घृत आहुति

ताजा लिया गोघृत इसी से आहुती करूँ।
ये इक सौ आठ शांतिमंत्र से हवन करूँ।।
घृतहोम से तुम पूज्य अग्निदेव यहाँ पे।
भक्तों को शांति कांति पुष्टि तुष्टि करोगे।।41।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोष ....स्वाहा।

(उपर्युक्त शांतिमंत्र से घी से चौकोन कुण्ड में 108 आहुति देवें।)

ॐ ह्रीं अग्निकुमार देव! यजमानप्रभृतीनां सर्व शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

(पूर्णार्घ्यं)

लवंग आहुति

वर लौंग और लाजा[1] तिल तंदुलादि हैं।
कर्पूर केशरादि चंदन विभिन्न हैं।।
इन इक सौ आठ लौंगों से आहुती करूँ।
सब विघ्न दूर कर परम स्थान छह वरूँ।।42।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष.....।

(उपर्युक्त शांतिमंत्र से लवंग द्वारा चौकोन कुण्ड में 108 आहुति देवें।)

ॐ ह्रीं अग्निकुमार यजमानप्रभृतीनां सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

(पूर्णार्घ्यं)

(यहाँ विधान के मूलमंत्र से जाप्य देवें।)

–दोहा–

गंध पुष्प अक्षत मिलित, विमलनीर को लेय।
परमेष्ठी तर्पण करूँ, मंत्र पीठिका देय।।43।।

ॐ ह्रीं सत्यजाताय नमः इत्यादि 36 पीठिका मंत्रों से तर्पण करें।

1. धान के लावा (खील)।

अथ पूर्णाहुति*

ॐ श्री जिनेन्द्र देव और तिथीदेव को।
ग्रहदेव नव को एवं दिक्पालदेव को।।
अग्नी प्रसन्न हेतु वे मंत्र उच्चरूँ।
मैं भक्ति सहित घी से पूर्ण आहुती करूँ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धकेवलिभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रों पंचदशतिथिदेवेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रों नवग्रहदेवेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रों द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं क्रों दशलोकपालकेभ्यः स्वाहा। ॐ ह्रीं अग्निन्द्राय स्वाहा।

इति पूर्णाहुतिः। ततः पुण्याहं घोषयेत् (यहाँ पुण्याहवाचन भी पढ़ते हैं।)

(पुनः नीरजसे नमः जलं इत्यादि मंत्रों से चौकोन कुंड अग्नि की पूजा करें।)

गार्हपत्य अग्नि पूजा

ये चार सौ इकसठ कहे पूर्वोक्त मंत्र हैं।
इन सबसे आहुती किया हे अग्निदेव मैं।।
सम्यक्त्व से आरोपित हे गार्हपत्य तुम।
सब अभ्युदय सहित मुझे निर्वाण करो तुम।।45।।

ॐ ह्रीं गार्हपत्य! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा। (पूर्णार्घ्य चढ़ावें।)

(पुनः नीरजसे नमः जलं इत्यादि मंत्रों से त्रिकोण कुण्ड अग्नि की पूजा करें।)

आह्वनीय अग्नि पूजा

जो एक सौ इकतिस प्रमाण दिव्य मंत्र हैं।
आहुति किया है अन्न की उन मंत्र से ही मैं।।
हे आह्वनीय अग्नि सज्ज्ञान कल्प तुम।
सब अभ्युदय सहित मुझे निर्वाण करो तुम।।46।।

ॐ ह्रीं आह्वनीय! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य चढ़ावें।)

(पुनः नीरज से नमः जलं इत्यादि मंत्रों से गोलकुंड की अग्नि की पूजा करें।)

*पूर्णाहुति करते समय होमकुण्ड में घी से अखंड धारा करें पुनः नारियल आदि उसी में छोड़ देवें।

दक्षिण अग्नि पूजा

जो एक सौ इकतीस प्रमाण दिव्य मंत्र हैं।
आहुति किया है अन्न की उन मंत्र से ही मैं।।
चारित्र से संकल्पित हे दक्षिणाग्नि तुम।
सब अभ्युदय सहित मुझे निर्वाण करो तुम।।47।।

ॐ ह्रीं दक्षिणाग्ने! यजमानप्रभृतीनां शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

(पूर्णार्घ्य चढ़ावें।)

(पुनः नीरज से नमः जलं इत्यादि मंत्रों से चौकोर कुण्ड की अग्नि की पूजा करेंवा)

स्तुति

–शेर छंद–

सब अभ्युदय निःश्रेयस की सिद्धि में हेतू।
जो रत्नत्रय से कल्पित उस अग्नि को पूजूँ।।
तीर्थेश के निःश्रेयस कल्याण में प्रगटी।
उन अग्नि को मैं वंदूँ वह कर्म को दहती।।48।।

ध्यानाध्ययन की अग्नि से जो कर्म को दहें।
वे केवली व गणधर निर्वाण को लहें।।
इन सबके मुक्ति जाने पर अग्नि जो प्रगटी।
उस अग्नि को वंदूँ वह कर्म को दहती।।49।।

अग्निकुमार इंद्र के मुकुटाग्र से प्रगटी।
तीर्थेश आदि मुक्ति प्राप्त देह को दहती।।
उस अग्नि को जो वंदे वो मुक्ति लहेंगे।
निज ध्यान अग्नि से ही वसु कर्म दहेंगे।।50।।

चौंतीस अतिशयों युत अर्हंत को नमूँ।
मोहारि विघ्न रज के नाशक तुम्हें नमूँ।।
अंतर व बाह्य मल के विध्वंसि को नमूँ।
सब विश्वरूप ज्ञाता निजदेव को नमूँ।।51।।

वसु प्रातिहार्य के तुम स्वामी तुम्हें नमूँ।
नव केवलीलब्धीयुत जिनदेव को नमूँ।।
त्रैलाक्य में हो मंगल उत्तम तुम्हें नमँ।
त्रैलोक्य के शरण हो मैं कोटिशः नमूँ।।52।।

(इस प्रकार जिनप्रतिमा के सम्मुख खड़े होकर स्तुति पढ़ें।)

होम की भस्म लगाने का श्लोक

ये रत्नत्रय अर्चनयुत वर होम भूति है।
तुम सबको दिव्य इंद्र की विभूति को करे।।
छह खण्ड दिग्विजय की विभूति को देवे।
त्रैलोक्य राज्यमय जिनेन्द्र विभव को देवे।।53।।

(इस आशीर्वाद श्लोक को बोलते हुए विधानाचार्य यजमान आदि जनों को शांतिमंत्र से मंत्रित होम की भस्म को देवें। सब लोग भी भक्ति से वह भस्म अपने ललाट में, दोनों भुजाओं में, कंठ में और हृदय में लगावें।)

पुनः शांतिपाठ और विसर्जन करें–

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेंद्रः।।54।।

(तीन बार शांतिधारा देवें।)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायर्ससाधवः अन्ये च देवादयः सर्वे च स्वस्थानं गच्छत गच्छत जः जः जः।

प्रमादाज्ज्ञानदर्पाद्यैः विहितं विहितं न यत्।
जिनेन्द्रास्तु प्रसादात्ते सकलं सकलं च तत्।।55।।

(विसर्जन करें। क्षमापणपूर्वक पंचांग नमस्कार करें।)

अंतिम प्रार्थना

–चौबोल छंद–

मोहध्वांत के नाशक विश्वप्रकाशी विशद दीप्तिधारी।
सन्मारग प्रतिभासक बुधजन को नित ही मंगलकारी।।

श्रीजिनचंद्र! शांतिप्रदभगवन्! तापहरन! तव भक्ति करूँ।
पुनः पुनः तव दर्शन होवे, यही याचना नित्य करूँ।।56।।

(विधान समाप्ति के बाद विधानाचार्य निम्नलिखित श्लोक बोलकर यजमान आदि के मस्तक पर पुष्प क्षेपण करते हुए आशीर्वाद देवें।)

आशीर्वाद श्लोक

सौभाग्यं धनधान्यसौख्यविपुलं सर्वत्र कीर्त्यास्पदं।
आरोग्यं सुतमित्रबंधुवनितासौख्यं सदा मंगलं।।
विद्याधीश्वरतां नरेशवशितां भूभृत्पदं भूतले।
श्रीमज्जैनविधानतो भवतु ते सर्वार्थसिद्धिस्त्वरं।।57।।

रथचालन विधि

रथविहार के समय भगवान की आरती करके सरसों और अक्षत, पुष्प लेकर निम्न मंत्र पढ़कर सरसों मंत्रित कर रथ के आगे क्षेपण करें। पुनः रथ चलाने का श्लोक पढ़कर रथ को चलावें।

परविद्याछेदन मंत्र–

ॐ श्रीं ह्रीं ह्रूं कलिकुंडदंडस्वामिन् अतुलबलवीर्यपराक्रम स्फ्रां स्फ्रीं स्फ्रूं स्फ्रें स्फ्रौं स्फ्रः आत्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद छिंद ह्रूं फट् स्वः।

रथचालन श्लोक–

यथा कोटिशिला पूर्वं, चालिता सर्वविष्णुभिः।
चालयामि तथोत्तिष्ठ, शीघ्रं चल महारथ।।[1]

रथशीघ्रोच्चालनमंत्रः।

नोट–रथयात्रा के बाद 1008 कलशों से या 108 कलशों से महाभिषेक करना चाहिए।

1. प्रतिष्ठातिलक से।

मंगलाष्टकस्तोत्रम्

–शार्दूलविक्रीडितछंदः –

सिद्धेः कारणमुत्तमा जिनवरा, आर्हंत्यलक्ष्मीवराः।
मुख्या ये रसदिग्युता गुणभृतस्त्रैलोक्यपूजामिताः।।
चित्ताब्जं प्रविकासयंतु मम भो! ज्योतिःप्रभा भास्कराः।
तीर्थेशा वृषभादिवीरचरमाः कुर्वंतु नो मंगलम्।।1।।

या कैवल्यविभा निहंति भविनां, ध्वांतं मनःस्थं महत्।
सा ज्योतिः प्रकटीक्रियान्मम मनो-मोहान्धकारं हरेत्।।
या आश्रित्य वसंति द्वादशगणा, वाणीसुधापायिनः।
तास्तीर्थेशसभा अनंतसुखदाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।2।।

पूज्यां गंधकुटी दधाति कटनी, रत्नादिभिर्निर्मिता।
एतस्यां हरिविष्टरे मणिमये, मुक्ताफलाद्यैर्युते।।
आकाशे चतुरंगुले जिनवरास्तिष्ठंति धर्मेश्वराः।
एते गंधकुटीश्वराः [1]वरजिनाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

ये त्रिंशत् चतुरुत्तरा अतिशया, ये प्रातिहार्या वसुः।
येऽप्यानन्त्यचतुष्टया गुणमया, दोषाः किलाष्टादश।।
ये दोषैः रहिता गुणैश्च सहिता, देवाश्चतुर्विंशतिः।
ते सर्वस्वगुणा अनंतगुणिताः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।4।।

भाषासर्वमयो ध्वनिर्जिनपते-र्दिव्यध्वनिर्गीयते।
आनन्त्यार्थसुभृत् मनोगततमो, हंति क्षणात्प्राणिनः।।
[1]दिव्यास्थानगतामसंख्यजनता-माल्हादयन् निःसृतः
ते दिव्यध्वनयस्त्रिलोकसुखदाः, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।5।।

1. 'व' शब्द से 4 तथा 'र' शब्द से 2 लेने पर 24 तीर्थंकर अर्थ हो जाता है।
2. समवसरण में आये हुए।

ये तीर्थंकरशिष्यतामुपगताः, सर्वर्द्धिसिद्धीश्वराः।
ये ग्रथ्नंति किलांगपूर्वमयसच्छास्त्रं ध्वनेराश्रयात्।।
ये ते विघ्नविनाशका गणधरास्तेषां समस्तर्द्धयः।
ते शांतिं परमां च सर्वसिद्धिं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।6।।

अष्टाविंशतिमूलवृत्तसहिता[1], उत्तरगुणैर्मंडिताः।
पंचाचारपरायणाः प्रतिक्षणं, स्वाध्यायमातन्वते।।
आचार्यादिमुनीश्वराः बहुविधा, ध्यानैकलीना मुदा।
ते सर्वेऽपि दिगंबरा मुनिगणाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।

लेश्याशुक्लमिव प्रशस्तमनसः, शुक्लैकवस्त्रावृताः।
लज्जाशीलविशुद्धसर्वचरणाः, स्वाध्यायशीलाः सदा।।
याः साध्व्यश्च महाव्रतांगशुचयो, वंद्याः सुरेंद्रैरपि।
ताः सर्वाः अमलार्यिकाः प्रतिदिनं, कुर्वंतु नो मंगलम्।।8।।

यद्द्रव्यार्थिकतोऽप्यनादिनिधनं, पर्यायतः साद्यपि।
जैनेंद्रं वरशासनं शिवकरं, तीर्थेश्वरैः वर्तितम्।।
कुर्यात् ज्ञानमतिं श्रियं वितनु मे, नंद्याच्च जीयाच्चिरम्।
श्रीतीर्थंकरशासनानि सततं, कुर्वंतु नो (वो) मंगलम्।।9।।

1. मूलचारित्र अर्थात् मूलगुण।

लघु पुण्याहवाचन

पुण्याहवाचन के पूर्व श्वेत चावल एक पट्टे या चौकी पर बिछावें और उसके ऊपर ह्रीं एवं स्वस्तिक बनाकर जल से परिपूर्ण कलश में मंगलमय हल्दी, सुपारी, सरसों, नवरत्न, गंध, अक्षतादिक डालें एवं मुख पर नारियल, नागर बेल (पान) या आम्रादिक के पत्ते लगावें, उसके कण्ठ में पंचरंगी सूत्र बांधे, उस पर स्वस्तिक बनावें। इस प्रकार एक कलश को सजाकर यजमान के हाथ से स्थापन कराके निम्नलिखित मंत्र को पढ़ता हुआ जयमान दूसरे कलश से उसमें पानी की धार छोड़ें। मंत्र पूर्ण होने पर उसी जल से पुण्याह मंत्र बोलते हुए सब द्रव्यों को पवित्र करें अर्थात् उस कलश में से पानी लेकर दर्भपूली से या पत्ते वगैरह से सिंचन करें। सभासद जनोपर भी जल सिंचन करें।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पुण्याहं कलशं स्थापयामि स्वाहा।

शालि पुंज पर कलश स्थापन करें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीकगंगासिंधुरोहिद्रोहितास्या-हरितहरिकान्ता-सीता-सीतोदानारीनरकांता-सुवर्णकूला-रूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजल-सुवर्णघटप्रक्षालितनवरत्नगंधाक्षत पुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं ह्मौं ह्मौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

इति जलेन प्रसिंच्य पवित्रीकरणं।

ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषट्। इति कलशार्चनं करोति स्वाहा। अर्घ्यं।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाण-सागर-महासाधु-विमलप्रभ-शुद्धाभ-श्रीधर-सुदत्तामलप्रभोद्धरांगिरसन्मति-सिंधुकुसुमां-जलिशिवगणोत्साहज्ञानेश्वरपरमेश्वरविमलेश्वरयशोधरकृष्णमतिज्ञानमति-शुद्धमतिश्रीभद्रअतिक्रांतशांताश्चेति चतुर्विंशतिभूतकालीनपरमदेवा वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ संप्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमणकेवलज्ञान-निर्वाणकल्याणविभूतिविभूषित महाभ्युदयाः श्रीवृषभाजितसंभवाभिनंदन-सुमति-

पद्मप्रभसुपार्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंतशीतलश्रेयोवासुपूज्य विमलानंतधर्मशांतिकुन्थ्वर-मल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्द्धमानाश्चेति चतुर्विंशतिवर्तमानपरमदेवा वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मसुरदेवसुपार्श्व स्वयंप्रभसर्वात्मभूत-देवपुत्रकुलपुत्रउदंकप्रोष्ठिलजयकीर्तिमुनिसुव्रत-अरनिष्पापनिष्कषाय विमलप्रभ-निर्मलचित्रगुप्तसमाधिगुप्तस्वयंप्रभअनिवृत्तिकजयनाथविमलदेवपालानन्त-वीर्याश्चेतिभविष्यत्परमदेवा वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ त्रिकालवर्त्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुसंजातकस्वयं-प्रभऋषभेश्वरानन्तवीर्यसूरप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननभद्रबाहुभुजंगमेश्वर-नेमीश्वरवीरसेनमहाभद्रदेवयश-अजितवीर्याश्चेति। विदेहक्षेत्रविहरमाणविंशति-परमदेवा वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ वृषभसेनादिगणधर देवाः वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ कोष्ठबीजपादानुसारिबुद्धिसंभिन्नसंश्रोतृप्रज्ञाश्रवणाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ आमर्षक्ष्वेडजल्लविड्डुत्सर्गसर्वौषधयश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ जलफलतन्तुपुष्पश्रेणिपत्राग्निशिखाकाशचारणाः वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ आहाररसवदक्षीणमहानसालयाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ उग्रदीप्ततप्तमहाघोरानुपमतपाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ मनोवाक्कायबलिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ क्रियाविक्रिया धारिणश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

ॐ अंगांगबाह्यज्ञानदिवाकराः कुंदकुंदाद्यनेकदिगम्बरदेवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां प्रीयंतां।

इह वान्यत्र नगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरूभक्ताः जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानम् नित्यमेवास्तु। मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रसुहृत्स्व-जनसम्बन्धिबन्धुवर्गसहितस्य.....ते धनधान्येश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवा प्रवर्द्धंतां प्रवर्द्धंतां प्रवर्द्धंतां। इत्यादि पुण्याहवाचनं पठित्वा कलशं स्थापयेत्।

ॐ ह्रीं स्वस्तये मंगलकुम्भं स्थापयामि स्वाहा।

(यह बोलकर पुण्याहवाचन समाप्त होने पर कलश स्थापन करें।)

व्रत ग्रहण करने का संकल्प

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य ब्रह्मणो मते मासानां मासोत्तममासे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ .....वासरे जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे ..... प्रदेशे ..... नगरे एतत् अवसर्पिणीकालावसान चतुर्दशप्राभृतमानित-सकललोकव्यवहारे श्री गौतमस्वामीश्रेणिकमहामंडलेश्वर-समाचरित-सन्मार्गावशेषे ..... वीरनिर्वाणसंवत्सरे अष्टमहाप्रातिहार्यादिशोभितश्रीमदर्हत्पर-मेश्वर प्रतिमासन्निधौ अहम् ..... व्रतस्य संकल्पं कारयामि[1]।

व्रत समापन विधि

ॐ आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे शुभे .....मासे ..... पक्षे अद्य ..... तिथौ श्रीमदर्हत्प्रतिमासन्निधौ पूर्वं यद्व्रतं गृहीतं तस्य परिसमाप्तिं करिष्ये–अहम्। प्रमादाज्ञानवशात् व्रते जायमानदोषाः शांतिमुपयान्ति-ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणेषु आनंदभक्तिः सदास्तु, समाधिमरणं भवतु, पापविनाशनं भवतु-ॐ ह्रीं असि आ उ सा नमः। सर्वशांतिर्भवतु स्वाहा।

उद्यापन के समय व्रत निष्ठापन विधि[2]

ॐ अथ भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो यते त्रैलोक्य मध्यासीने मध्यलोके श्रीमदनावृतयक्षसंसेव्यमाने दिव्य जम्बूवृक्षोपलक्षितजम्बूद्वीपे महनीयमहामेरोर्दक्षिणभागे अनादिकालसंसिद्धभरतनामधेयप्रविराजित षट्खण्डमण्डितभरतक्षेत्रे सकलशलाकापुरुषसम्बन्धविराजितार्यखण्डे परमधर्मसमाचरण.......प्रदेशे अस्मिन् विनेयजनताभिरामे.......नगरे अस्मिन् दिव्यमहाचैत्यालये एतदवसर्पिणीकालावसाने प्रवृतसुवृत्तर्शमनूप-मान्वितसकल-लोकव्यवहारे श्री वृषभस्वामिपौरस्त्यमंगलमहापुरुषपरिषत्प्रतिपादितपरमोपशम-पर्वक्रमे वृषभसेनसिंहसेनचारुसेनादिगणधरस्वामिनिरूपितविशिष्टधर्मोपदेशे

---

1. स्वयं व्रत ग्रहण करना हो तो 'कारयामि' के स्थान पर 'करोमि' पाठ बोलना चाहिए। ऐसे ही व्रत समापन के दिन दूसरा पाठ पढ़ना चाहिये। 2. व्रत के उद्यापन के समय यह पाठ पढ़कर व्रत का निष्ठापन करना या कराना चाहिए।

पञ्चमकाले प्रथमपादे महतिमहावीरवर्धमानतीर्थंकरोपदिष्टसद्धर्मव्यतिकरे श्रीगौतमस्वामिप्रतिपादितसन्मार्गप्रवर्तमाने श्रेणिकमहामंडलेश्वर-समाचरित-सन्मागार्वशेषे .... विक्रमाङ्के .... मासे .... तिथौ .... वासरे प्रशस्त-तारकायोगकरणनक्षत्रहोरामुहूर्तलग्नयुक्तायाम् अष्टमहाप्रातिहार्य-शोभित-श्रीमदर्हत्परमेश्वरसन्निधौ अहं .....नामकव्रत निष्ठापनं कारयामि। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वशांतिर्भवतु, सर्वकल्याणं भवतु श्रीं क्लीं नमः स्वाहा।

तिथि, ग्रह, यक्ष-यक्षी आदि के अर्घ्य

–दोहा–

जैनमार्ग में जो कहे, तिथि प्रमाण सुरवृंद।
वे पंद्रह तिथिदेवता, जजूँ अर्घ अर्पंत।।1।।

ॐ ह्रीं यक्षवैश्वानरराक्षसनधृतपन्नगअसुरसुकुमारपितृविश्वमालिनि चमरवैरोचनमहाविद्यमार विश्वेश्वरपिंडाशिन् इति पंचदश तिथिदेवाः! अत्र आगच्छत- आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्र स्थाने तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ ह्रीं श्री पंचदशतिथिदेवेभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

मेरु प्रदक्षिण निज करें, नव ग्रह विश्वप्रसिद्ध।
उनका बहुसन्मान कर, करूँ अशुभ ग्रह बिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं आदित्यसोमकुजबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतवः इति नवग्रहदेवा! आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहेभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पंचरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

चौबिस गोमुख आदि हैं, वर जिनशासन यक्ष।
भक्तों के रक्षक सदा, लेते जिनवृष पक्ष।।3।।

ॐ ह्रीं गोमुखमहायक्षत्रिमुखयक्षेश्वरतुंबरुकुसुमवरनंदि विजय-अर्जितब्रह्मेश्वरकुमारषण्मुखपातालकिंनरकिंपुरुषगरुडगंधर्व महेन्द्रकुबेरवरुण भृकुटिसर्वाण्हधरणेंद्रमातंगाभिधानचतुर्विंशतियक्षदेवताः! आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ ह्रीं गोमुखादिचतुर्विंशतियक्षेभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पंचरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

जिनवर धर्म प्रभावना, करने में अतिप्रीत्य।
चक्रेश्वरि आदिक जजूँ, शासनदेवी नित्य।।4।।

ॐ चक्रेश्वरी रोहिणीप्रज्ञप्ती वज्रशृंखलापुरुषदत्तामनोवेगाकालीज्वाला-मालिनीमहाकालीमानवीगौरी गांधारी वैरोटी अनंतमतीमानसी महामानसी जयाविजयाअपराजिता बहुरूपिणी चामुण्डीकूष्मांडिनीपद्मावतीसिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिदेवताः आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ श्रीं चक्रेश्वर्यादिशासन देवताभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पंचरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

यज्ञविघ्न नाशन प्रवण, इंद्रादिक दिक्पाल।
अष्ट दिशा के आठ को अर्घ देउं तत्काल।।5।।

ॐ ह्रीं इंद्राग्नियमनैऋतवरुणवायुकुबेरैशानाभिधानाष्टदिक्पालदेवा! आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ श्रीं इंद्रादिअष्टदिक्पालदेवेभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पंचरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

दो राक्षस दो असुर दो, अहिपति दो गरुडादि।
दौवारिक दिश विदिश के, द्वारपाल सुर आदि।।6।।

ॐ ह्रीं राक्षसादि अष्टदौवारिकाः! आगच्छत आगच्छत संवौषट्।

ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।

ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

ॐ श्रीं राक्षसादि अष्टदौवारिकदेवेभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

समुच्चय अर्घ्य

–शंभु छंद–

नव देवों की पूजा करके भक्ति से उनके गुण गाऊँ।
अट्ठासी सुरगण को आदर से यज्ञभाग दे हर्षाऊँ।।
पंद्रह तिथिदेव नव ग्रह सुर चौबीस यक्ष चौबिस यक्षी।
दिक्पाल आठ दौवारिक अठ ये धर्मविघ्न के प्रतिपक्षी।।1।।

ॐ ह्रीं तिथिदेवता नवग्रहदेव जिनशासनयक्षयक्षी दिक्पालदौवारिकादि अष्टाशीति सुरगणेभ्यः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतान् पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल पूजा

क्षेत्रपालाय यज्ञेऽस्मिन्नेतत्क्षेत्राधिरक्षणे।
बलिं दिशामि दिग्यग्नेर्वेद्यां विघ्नविघातिने।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अत्रस्थक्षेत्रपाल! आगच्छ आगच्छ संवौषट्। तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् इति पुष्पांजलिः।

क्षेत्रपाल का तेल से अभिषेक

सद्यस्केन सुगंधेन स्वच्छेन बहलेन च।
स्नपनं क्षेत्रपालस्य तैलेन प्रकरोम्यहं।।2।।

ॐ ह्रीं तैलेन क्षेत्रपाल अभिषेचयामि इति स्वाहा।

सिंदूर चढ़ाने का श्लोक

सिंदूरैरारुणाकारैः पीतवर्णैः सुसंभवैः।
चर्चनं क्षेत्रपालस्य सिंदूरैः प्रकरोम्यहं।।3।।

ॐ ह्रीं सिंदूरैः क्षेत्रपालार्चनं करोमीति स्वाहा।

क्षेत्रपाल के लिए अर्घ

भोः क्षेत्रपाल! जिनपप्रतिमांकभाल।
दंष्ट्राकराल जिनशासनवैरिकाल।।
तैलादिजन्म गुडचंदनपुष्प धूपैः* ।
भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे क्षेत्रपाल! इदं जलादिकं गृहाण गृहाण। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधा स्वाहा।

इति क्षेत्रपालार्चनं।

* पंचामृत अभिषेक पाठ। पं. आशाधर विरचित।

मंगलकलश स्थापन का संकल्प मंत्र

ॐ आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ..... प्रदेशे ..... देशे ..... ग्रामे ..... जिनचैत्यालये वीरनिर्वाण संवत् ..... तमे ..... ईस्वी सन् ..... तमे ..... मासोत्तममासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... विधानावसरे ..... यजमानस्य हस्ताभ्यां मंगलकुँभं स्थापयामि मंगलं भवतु इति स्वाहा।

अखंडदीप प्रज्वालन का संकल्प मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिण भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे ..... प्रदेशे ..... देशे ..... ग्रामे ..... वीरनिर्वाण संवत् ..... तमे ..... वर्षे ..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... श्रीजिनचैत्यालये ..... विधानावसरे ..... अस्य ..... यजमानस्य हस्तेन अखण्डदीपस्य ज्योतिः प्रज्वालयमि इदं मोहान्धकारमपहाय मम हृदये ज्ञानज्योतिः स्फुरायमानं करोतु इति स्वाहा।

तिलक लगाने का श्लोक

किसी भी मंगलकार्य के अवसर पर विधानाचार्य यजमान के ललाट में तिलक करते समय निम्न श्लोक बोलें–

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।

अथवा–

स्ववंशतिलको भूयाः, तिलको भारतस्य च।
जिनपादप्रसादात्त्वं, त्रैलोक्यतिलको भव।।

(चंदन या रोली से तिलक लगाकर उसमें अक्षत लगाकर मस्तक पर तीन बार अक्षत क्षेपण करें।)

महाशांतिधारा

।।ॐ नमः शांतिजिनेशिने।।

–शार्दूलविक्रीडित छंद–

श्री खण्डोद्भवकर्दमैः सुरुचिरैः कर्पूरचूर्णैर्मितैः।
संमिश्रैरतिगन्धिभिर्नदनदीकासारकूपादिभिः।।
पाथोभिः परिपूरितेन कलशैर्नान्तः स्थितैर्नात्मनां।
शान्त्यर्थं महाशांतिमंत्रपठनैर्देवं जिन स्नापये।।1।।

गद्य

ॐ कर्पूरकाश्मीरागुरुमलयजादिक्षोदव्यामिश्रैर्निर्णिक्तस्वर्णरेणूयमान-कञ्ज-किंजल्क-पुञ्जपिञ्जरितैर्बिजितविलसद्विलासिनीविलोललोचन-नीलनीरज-जलदपरिपूरितैः परिपूरितसकलजगद्घ्राणविवरबंधुरसौगन्द्ध्यैः।

–वसन्ततिलका छंद–

अन्धीकृतालिभिरभिष्टुतहेमकुम्भ-
सन्धारितैर्विजितदिग्द्विपदानगन्धैः।
बन्धुप्रभुं भवभृतां हतघातिबन्धम्,
गन्धोदकैर्जिनपतिं स्नपयामि शान्त्यै।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों ([1]अमुकनामधेयस्य) पापं खण्ड खण्ड, हन हन, दह दह, पच पच, पाचय पाचय, कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं, अर्हं अर्हं, झं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्षीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ ठ (अमुकनामधेयस्य) श्रीरस्तु। सिद्धिरस्तु। वृद्धिरस्तु। तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। शांतिरस्तु। कान्तिरस्तु। कल्याणमस्तु स्वाहा।

ॐ निखिलभुवनभवनमंगलीभूतजिनपतिसवनसमयसम्प्राप्ताः,

1. जिसके लिये शांतिधारा करनी हो उसका नाम बोलें अथवा स्वयं के लिए करते हों तो 'मम' 'चतुर्विधसंघस्य' ऐसा बोलें।

वरमभिनवकर्पूर-कालागरुकुंकुमहरिचंदनाद्यनेक सुगंधिबंधुरगन्धद्रव्य-सम्भारसम्बन्धबन्धुरं, अखिलदिगन्तरालव्याप्तसौरभातिशयसमाकृष्टसमद-सामजकपोलतलविगलितमदमुदित-मधुकरनिकरं, अर्हत्परमेश्वर-पवित्र-तरगात्रस्पर्शनमात्रपवित्रीभूतं भागवतमिदं गन्धोदकधारावर्षणमशेषमर्हन्निबंधनं (अमुकनामधेयस्य) शांतिंकरोतु, कान्तिमाविष्करोतु, कल्याणं प्रादुष्करोतु, सौभाग्यं सन्तनोतु, आरोग्यमातनोतु, सम्पदं सम्पादयतु, विपदमवसादयतु, यशो विकासयतु, मनः प्रसादयतु, आयुर्द्राघयतु, श्रियं श्लाघयतु, शुद्धिं विशुद्धय बुद्धिं विवर्द्धयतु, श्रेयः पुष्णातु, प्रत्यवायं मुष्णातु, अनभिमतं निवारयतु, मेरथं परिपूरयतु, परमोत्सवकारणमिदं, परममंगलमिदं, परमपावनमिदं, स्वस्त्यस्तु नः, स्वस्त्यस्तु वः, झ्वीं, क्ष्वीं हं सः असिआउसा स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय, घातिकर्मविनाशनाय, अष्टमहाप्रातिहार्यसहिताय, चतुस्त्रिंशदतिशयसमेताय, अनंतदर्शनज्ञानवीर्य-सुखात्मकाय, अष्टादशदोषरहिताय, पंचमहाकल्याणसम्पूर्णाय, नवकेवललब्धिसमन्विताय, दशविशेषणसंयुक्ताय देवाधिदेवाय, धर्मचक्राधीश्वराय, धर्मोपदेशनकराय, चमरवैराचनाच्युतेन्द्रप्रभृतीन्द्रशतेन मेरुगिरिशिखरशेखरीभूतपाण्डुकशिलातलेन गंधोदकपरिपूरितानेकविचित्र-मणिमयमंगलकलशैरभिषिक्तमिदानीमहं त्रैलोक्येश्वरमर्हत्परमेष्ठिन-मभिषेचयामि हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः द्रां द्रीं ऐं अर्हं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय स्वाहा।

(आगे के उन उन मंत्रों द्वारा क्रम से जल, गंध आदिक अष्टद्रव्य चढ़ावें)

ॐ ह्रीं शीतोदकप्रदानेन शीतलो भगवान् प्रसीदतु, शीता आपः पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः नः स्वाहा[1]।।1।। गन्धोदकप्रदानेनाभिनन्दनो भगवान् प्रसीदतु, गन्धाः पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।2।। अक्षतोदक-प्रदानेनानंतो भगवान् प्रसीदतु, अक्षताः पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।3।। पुष्पोदकप्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान् प्रसीदतु, पुष्पाणि पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।4।। नैवेद्यप्रदानेन नेमिनाथो भगवान्

1. सभी में 'वः नः स्वाहा' बोलें।

प्रसीदतु पीयूष पिण्डाः पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।5।। दीपप्रदानेन चन्द्रप्रभो भगवान् प्रसीदतु, कर्पूरमाणिक्यदीपाः पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।6।। धूपप्रदानेन धर्मनाथो भगवान् प्रसीदतु, गुग्गुलादि-दशाङ्गधूपाः पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।7।। फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसीदतु, क्रमुकनारिंगप्रभृतिफलानि पान्तु, शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः।।8।। अर्हन्तः पान्तु वः। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु वः। सिद्धाः पान्तु वः हृदयनिर्वाणं प्रयच्छन्तु वः। आचार्याः पान्तु वः। शीतलसौगन्ध्यमस्तु वः। उपाध्यायाः पान्तु वः। सौमनस्यं चास्तु वः। सर्वसाधवः पान्तु वः। अन्नदानतपोवीर्यविज्ञानमस्तु वः।।

(अगले मंत्रों से चौबीस बार पुष्प चढ़ावें।)

ॐ वृषभस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादष्टविधकर्मविनाशनमस्तु वः नः स्वाहा[1]।।1।। श्रीमदजितस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादजेयशक्तिर्भवतुः वः।।2।। सम्भवस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादनेकगुणगणश्चास्तु वः।।3।। अभिनंदनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादभिमतफलं प्रयच्छन्तु वः।।4।। सुमतिस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादमृतं पवित्रं प्रयच्छन्तु वः।।5।। पद्मप्रभस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्दयां प्रयच्छन्तु वः।।6।। सुपार्श्व स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु वः।।7।। श्रीचन्द्रप्रभस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्चन्द्रार्कतेजोऽस्तु वः।।8।। पुष्पदंतस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्पसायकातिशयोऽस्तु वः।।9।। शीतलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादशुभकर्ममलप्रक्षालनमस्तु वः।।10।। श्रेयांसजिनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् श्रेयस्करोऽस्तु वः।।11।। वासुपूज्यस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्रत्नत्रयावासंकरोऽस्तु वः।।12।। विमलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मवृद्धिर्वै माङ्गल्यं चास्तु वः।।13।। अनंतनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु वः।।14।। धर्मनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् शर्मप्रचयोऽस्तु वः।।15।। श्रीमदर्हत्परमेश्वरसर्वज्ञपरमेष्ठिशांतिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् शांतिकरोऽस्तु वः।।16।। कुन्थुनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्तत्राभि

1. चौबीसों मंत्र में 'वः नः स्वाहा' बोलें।

(तन्त्राभि) वृद्धिंकरोऽस्तु वः।।17।। अरजिनस्वामिनः श्रीपादपद्म-प्रसादात्परमकल्याणपरम्पराऽस्तु वः।।18।। मल्लिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्छल्यविमोचनकरोऽस्तु वः।।19।। मुनिसुव्रतस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनं चास्तु वः।।20।। नमिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्ज्ञानं चास्तु वः।।21।। अरिष्टनेमिस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादक्षयं चारित्रं ददातु वः।।22।। श्रीमत्पार्श्वभट्टारकस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सर्वविघ्नविनाशनमस्तु वः।।23।। श्रीवर्धमानस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनाद्यष्टगुणविशिष्टं चास्तु वः।।24।।

श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञपरमेष्ठिपरमपवित्रशांतिभट्टारकस्वामिनः श्रीपादपद्म-प्रसादात्सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु। वृषभादयो महतिमहावीरवर्धमानपर्यन्तपरमतीर्थंकरदेवाश्चतुर्विंशतिरर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सम्भिन्नतमस्का वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकनाथास्त्रिलोक-महितास्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरणविप्रमुक्ताः सकलभव्यजनसमूह-कमलवनसम्बोधनकराः देवाधिदेवा अनेकगुणगणशत-सहस्रालङ्कृत-दिव्यदेहधराः पञ्चकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिंशदतिशय-विशेषसम्प्राप्ताः इंद्रचक्रधरबलदेववासुदेवप्रभृतिदिव्यसमानभव्यवरपुण्डरीक-परमपुरुष-मुकुटतटनिबिडनिबद्धमणिगणकरनिकरवारिधाराभिषिक्तचारुचरण-कमलयुगलाः स्वशिष्यपरशिष्यवर्गाः प्रसीदन्तु वः।। परममाङ्गल्यनामधेयाः सद्धर्मकार्येष्विहामुत्र च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छन्तु वः।।

ॐनृपतिशतसहस्रालङ्कृतसार्वभौमराजाधिराजपरमेश्वरबलदेववासुदेव-मण्डलीकमहामंडलीकमहामात्यसेनानाथराजश्रेष्ठिपुरोहिताधीशकराञ्जलि-नमितकरकुड्मलमुकुलालङ्कृतपादपद्माः कुलिशनालरजतमृणालमन्दारकर्णि-कारातिकुलगिरिशिखरशेखरगगनमन्दाकिनीमहाह्रदनदनदीशतसहस्रदलकमल-वासिन्यादिसर्वाभरणभूषिताङ्गसकसुन्दरीवृन्दवन्दितचारुचरणकमलयुगलाः आमौषधयः, क्ष्वेलौषधयः, जल्लौषधयः, विप्रुषौषधयः, सर्वौषधयश्च वः नः[1] प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। मतिस्मृतिसंज्ञाचिन्ताभिनिबोधज्ञानिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। कोष्ठबुद्धिबीजबुद्धिपदानुसारिबुद्धिसम्भिन्नश्रोतृश्रवणाश्च वः

1. 'वः नः प्रीयन्तां प्रीयन्तां बोलें।

प्रीयंतां प्रीयन्ताम्।। जलचारणजङ्घचारणतन्तुचारणभूमिचारणपुष्पचारण-श्रेणिचारणचतुरङ्गुलचारणाकाशचारणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। मनोबलिवचोबलिकायबलिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। उग्रतपोदीप्ततपो-महातपोघोरतपोऽनुतपोमहोग्रतपसश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। मतिश्रुता-वधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। यमवरुणकुबेरवासवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। अनंतवासुकितक्षककर्कोट-कपद्ममहापद्मशंखपाल-कुलिशजयविजयादिमहोरगाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। इंद्राग्नियमनैऋत-वरुणवायुकुबेरेशानधरणेन्द्रसोमाश्चेति दशदिक्पालकाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। सुरासुरोरगेन्द्रचमरचारणसिद्धविद्याधरकिन्नरकिम्पुरुषगरुड-गन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। बुधशुक्रबृहस्पत्य-र्केन्दुशनैश्चराङ्गारकराहुकेतुतारकादिमहाज्योतिष्कदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। चमरवैरोचनधरणानंदभूतानन्दवेणुदेववेणुधारिपूर्ण-वशिष्ठ-जलकांतजलप्रभु (प्रभ) घोषमहाघोषहरिषेणहरिकान्तामितगत्यमित-वाहनवेलाञ्जनप्रभञ्जनाग्निशिख्याग्निवाहनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। गीतरतिगीतकांतसत्पुरुषमहापुरुषसुरुपप्रतिघोषपूर्णभद्र-मणिभद्रपुरुषचूलमहाचूलभीममहाभीमकालमहाकालाश्चेति षोडशव्यतरेन्द्राश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। नाभिराजजितशत्रुदृढ़राजस्वयंवरमेघराजधरणराज-सुप्रतिष्ठमहासेनसुग्रीवदृढ़रथविष्णुराजवसुपूज्यकृतवर्मसिंहसेनभानुराज-विश्वसेनसुदर्शनकुम्भराजसुमित्रविजयमहाराजसमुद्रविजयविश्वसेन-सिद्धार्थाश्चेति-जिनजनकाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। मरुदेवीविजयासुषेणा-सिद्धार्थासुमंगलासुसीमापृथ्वीलक्ष्मणाजयरामासुनन्दाविपुलानंदाजयावत्यर्यश्यामा-लक्ष्मीमतीसुप्रभैरादेवीश्रीकांतामित्रसेनाप्रभावतीसोमावर्मिलाशिवादेवीब्रह्मीप्रिय-कारिण्यश्चेति जिनमातृकाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। गोमुखमहायक्षत्रिमुख-यक्षेश्वरतुम्बुरुकुसुमवरनन्दिविजयाजितब्रह्मेश्वरकुमारषण्मुखपातालकिन्नर किम्पुरुषगरुडगन्धर्वमहेन्द्रकुबेरवरुणविद्युत्प्रभसर्वाह्नधरणेन्द्रमातङ्गनामाश्चेति चतुर्विंशतियक्षाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। चक्रेश्वरीरोहिणीप्रज्ञप्तिवज्र-शृङ्खलापुरुषदत्तामनोवेगाकालीज्वालामालिनीमहाकालीमानवीगौरीगान्धारीवैरो-

अनंतमतिमानसीमहामानसीजयाविजयापराजिताबहुरूपिणीचामुण्डी-कूष्माण्डीपद्मावतीसिद्धायिन्यश्चेति चतुर्विंशतिजिनशासनदेवताश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। कुलगिरिशिखरशेखरीभूतमहाह्रदादिसरोवरमध्यस्थितसहस्रदल-कमलवासिन्यो मानिन्यः सकलसुन्दरीवृन्दवंदितपादकमलाश्च देव्यो वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। यक्षवैश्वानरराक्षसनधृतपन्नगअसुरसुकुमारपितृविश्वमालिनीचमर-वैरोचनमहाविद्यमारविश्वेश्वरपिण्डाशनाश्चेति पञ्चदशतिथिदेवताश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। (सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांतवकापिष्ठ-शुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतेन्द्रषोडशकल्पवासिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।।) हिट्ठिमहिट्ठिम-हिट्ठिममज्झमहिट्ठिमोपरिम-मज्झमहिट्ठिम-मज्झममज्झम-मज्झमोपरिम-उपरिमहिट्ठिम-उपरिममज्झमउपरिमोपरिमाश्च नवग्रैवेयकवासिनोऽहमिन्द्रदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। अर्च्चअर्च्चमालिनी-वैरोचनसोमसोमरूपाङ्कास्फटिकादित्यादिनवानुदिशवासिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। विजयवैजयन्त-जयन्तअपराजितसर्वार्थ-सिद्धिनामधेय-पञ्चानुत्तरविमानवासिनश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। अतीतानागतवर्तमान-विकल्पानेकविविधगुणसम्पूर्णाष्टगुणसंयुक्ताः सकलसिद्धसमूहाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। सर्वकालमपि (अमुकनामधेयस्य) सम्पत्तिरस्तु। सिद्धिरस्तु। वृद्धिरस्तु। तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। शांतिरस्तु। कांतिरस्तु। कल्याणमस्तु। सम्पदस्तु। मनः समाधिरस्तु। श्रेयोऽभिवृद्धिरस्तु। शाम्यंतु घोराणि। शाम्यंतु पापानि। पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। आयुर्वर्धताम्। श्रीर्वर्धताम्। कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु वः। ततो भूयो भूयः श्रेयसे।। ॐ ह्रीं इवीं क्ष्वीं हं सः स्वस्त्यस्तु वः। स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्।। भगवंतोऽर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः सकलसुखास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजितास्त्रिलोक-नाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरणविप्रमुक्ताः सर्वविदश्च ॐ श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्।। ॐ वृषभादि-वर्धमानान्ताः शान्तिकराः सकलकर्मरिपुकांतारदुर्गविषमेषु रक्षन्तु मे जिनेन्द्रा॥ आदित्यसोमाङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुनाम-नवग्रहाश्च वः प्रीयन्तां

प्रीयन्ताम्।। तिथिकरणनक्षत्रवारमुहूर्तलग्नदेवाश्च इहान्यत्र ग्रामनगरा-धिदेवताश्च ते सर्वे गुरुभक्ता अक्षीणकोशकोष्ठागारा भवेयुः। दानतपोवीर्यधर्मानुष्ठानादिनित्यमेवास्तु। मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्र-गुरुसुहृत्स्वजनसम्बन्धिबन्धुवर्गसहितस्यास्य यजमानस्य (अमुकनामधेयस्य) धनधान्यैश्वर्यद्युतिबलयशःकीर्तिबुद्धिवर्धनं भवतु। सामोदः प्रमोदो भवतु। शांतिर्भवतु। कांतिर्भवतु। तुष्टिर्भवतु। पुष्टिर्भवतु। सिद्धिर्भवतु। वृद्धिर्भवतु॥ अविघ्नमस्तु। आरोग्यमस्तु। आयुष्यमस्तु। शुभं कर्मास्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। शास्त्रसमृद्धिरस्तु। इष्टसंपदस्तु। अरिष्टनिरसनमस्तु। धनधान्यसमृद्धि-रस्तु। काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु। शाम्यन्तु घोराणि। शाम्यन्तु पापानि। पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। श्रीर्वर्धताम्। आयुर्वर्धताम्। कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु वः। स्वस्ति भद्रं चास्तु नः। इवीं इवीं हं सः स्वस्त्यस्तुते। स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रयालंकृताय दिव्यतेजोमूर्तये नमः। प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय स्वयंभुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रिलोकमहिताय अनंतसंसारचक्रपरिमर्दनाय अनंतज्ञानाय अनंतदर्शनाय, अनंतवीर्याय, अनंतसुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, उपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मक्षयंकराय, अजराय, अमराय, अभवाय, (अमुकनामधेयस्य)। मृत्युं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। हन्तुकामं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। रतिकामं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। बलिकामं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। क्रोधं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। पापं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। वैरं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। वायुधारणं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। अग्निभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वशत्रुभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वोपसर्गं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वविघ्नं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वराजभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वचोरभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वदुष्टभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वसर्पभयं छिन्द

छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्ववृश्चिकभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वग्रहभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वदोषं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वव्याधिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वंडामरं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वपरमंत्रं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वात्मघातं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वपरघातं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वकुक्षिरोगं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वशूलरोगं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वाक्षिरोगं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वशिरोरोगं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वज्वररोगं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वनरमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वगजमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वाश्वमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वगोमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वमहिषमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वाजमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वसस्यमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वधान्यमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्ववृक्षमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वगुल्ममारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वलतामारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वपत्रमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वपुष्पमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वफलमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वराष्ट्रमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वदेशमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वविषमारिं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वक्रूररोगभयवेतालशाकिनीडाकिनीभयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्ववेदनीयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वमोहनीयं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्पापस्मारं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द। सर्वदुर्भगं छिन्द छिन्द, भिन्द भिन्द।

ॐ सुदर्शनमहाराजचक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यं वशं कुरु कुरु। सर्वजनानंदं कुरु कुरु। सर्वजीवानंदं कुरु कुरु। सर्वराजानंदं कुरु कुरु। सर्वभव्यानंदं कुरू कुरू। सर्वगोकुलानंदं कुरु कुरु। सर्वग्रामनगरखेटकर्वट-मटम्बपत्तनद्रोणमुखजनानंदं कुरु कुरु। सर्वलोकं, सर्वदेशं, सर्वसत्त्वं, वशं कुरु कुरु। सर्वानंदं कुरु कुरु। सर्वपापं हन हन, दह दह, पच पच, पाचय पाचय, कुट कुट, शीघ्रं शीघ्रं, सर्वं वशमानय हूं फट् स्वाहा।

-अनुष्टुप् छन्द-

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते।।1।।

-बसंततिलका छन्द-

कल्याणमस्तु कमलाभिमुखी सदास्तु।
दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रसमृद्धिरस्तु।।
आरोग्यमस्त्वभिमतार्थफलाप्तिरस्तु
भद्रं तवास्तु जिनपुङ्गवभक्तिरस्तु।।2।।

-शार्दूलविक्रीडित छन्द-

श्रीमज्जैनजनार्च्चितप्रकटित स्याद्वादरत्नाकरः।
सद्धर्मामृतचन्द्रसुश्रुतकरो लावण्यरत्नाकरः।।
मोक्षद्वारकवाटपाटनपटुः प्रध्यानरत्नाकरः।
भौमो भूरिगुणाकरो विजयते योगीन्द्ररत्नाकरः।।3।।

पवित्रतरगन्धोदकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।स्वधा।

।।इति गन्धोदकाभिषेकः महाशांतिमंत्रः।।

(आगे का श्लोक बोलकर अर्घ्य चढ़ाना)

स्नानानन्तरमर्हतः स्वयमपि स्नानाम्बुशेषाधृतो।
वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैर्दीपैश्च धूपैः फलैः।।
कामोद्दामगजाङ्कुशं जिनपतिं स्वभ्यर्च्य संस्तौति यः।
स स्यादारविचन्द्रमक्षयसुखं प्रख्यातकीर्तिध्वजः।।

अर्घ्यं। शांतिधारां, पुष्पांजलिम्।।

गंधोदक लेने के मंत्र

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं पुण्यांकुरोत्पादकम्।
नागेन्द्र त्रिदशेन्द्रचक्रपदवीराज्याभिषेकोदकम्।।
स्यात्सज्ज्ञानचरित्रदर्शनलतासंसिद्धिसम्पादकम्।
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिनस्नानस्य गन्धोदकम्।।4।।

नेत्रद्वन्द्वरुजोविनाशनकरं गात्रं पवित्रीकरम्।
वातोत्पित्तकफादिदोषरहितं गात्रं च स्रां (पवित्रं) भवेत्।।
कामालाक्षयकुष्ठरोगविषमग्राहक्षयंकारि तत्।
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगलस्नानस्य गन्धोदकम्।।5।।

घातिव्रातविघातजातविपुल श्रीकेवलज्योतिषो।
देवस्यास्य पवित्रगात्रकलनात् पूतं हितं मङ्गलम्।।
कुर्याद्भव्यभवार्तिदावशमनं स्वर्मोक्षलक्ष्मीफलम्।
प्रोद्यद्धर्मलताभिवर्धनमिदं सद्गन्धगन्धोदकम्।।6।।

निःशेषाभ्युदयोपभोगफलवत्पुण्यांकुरोत्पादकम्।
धृत्वा पंकनिवारकं भगवतः स्नानोदकं मस्तके।।
ध्यातौ विश्वमुनीश्वरैरभिनुतौ प्रेक्षावतामर्चितौ।
इन्द्राद्यैर्मुहुरर्चितौ जिनपतेः पादौ समभ्यर्चये।।7।।

।।ॐ शांतिः शांतिः शांतिः। मंगलं भूयात्। श्रीः।।

लघु शांतिमंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वक्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असि आ उसा ([1]अमुकनामधेयस्य) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।।

1. यहाँ पर अन्य किसी का नाम लेवें अथवा 'मम' या 'चतुर्विधसंघस्य' ऐसा बोलें।

मंदिर एवं वेदी शुद्धि हेतु घटयात्रा और शुद्धि विधान विधि

मंदिर, वेदी तथा कलशों की शुद्धि के लिए तीर्थजल की आवश्यकता होती है। अतः किसी जलाशय पर गाजे-बाजे के साथ जाकर जल लाना चाहिए। इस कार्य के लिए कम से कम 9 और अधिक से अधिक 81 घटों का भरना बतलाया है। कहीं-कहीं 108 या 21, 41 आदि कलश ले जाते हैं। घटों को तूल तथा नारियल आदि से बाँधकर इन्द्र-इन्द्राणी तथा अन्य स्त्री-पुरुषों के द्वारा जलाशय पर ले जाना चाहिए। वहाँ पीले पुष्पों अथवा पंचरंगों से रंगे चावलों से 81 खण्ड का एक मण्डल बनाना चाहिए। एक चौकोर मण्डल बनाकर उसमें नौ-नौ के नौ खण्ड बना देने से 9×9=81 खण्ड का मण्डल अनायास बन जाता है। उन सबमें एक-एक छोटा स्वस्तिक अथवा पूरे मण्डल में एक बड़ा नंद्यावर्त स्वस्तिक बनाकर उस पर सब घट रख देवें। चौकोर मण्डल के सामने एक नौ कलिकाओं का कमल बनावें और उसमें अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनआगम, जिनप्रतिमा और जिनमंदिर इन नौ देवों की स्थापना कर नवदेव पूजन करें।

एक बड़े बर्तन में जल छान कर भरवाये। उसमें लवंग का चूर्ण या केशर मिला दें, जिसमें अन्तर्मुहूर्त बाद फिर से छानने की आवश्यकता न रहे। एक छोटी रकेबी में केशर से जल यंत्र बनावें अथवा ताम्रपत्र आदि पर यंत्र बना हो, तो उसे उसी बर्तन में डाल देवें। तदनन्तर वह जल साथ में लाये हुए घटों में भर ले। पश्चात् नीचे लिखी तीर्थमण्डल पूजा पढ़कर अर्घ चढ़ावें।

नवदेवतार्घ्यम्

मध्ये कर्णिकमर्हदार्यमनघं बाह्येऽष्ट पत्रोदरे,
सिद्धान् सूरिवरांश्च पाठकगुरून् साधूंश्च दिक्पत्रगान्।
सद्धर्मागमचैत्यचैत्य निलयान् कोणस्थदिक्पत्रगान्,
भक्त्या सर्वसुरासुरेन्द्रमहितान् तानष्टधेष्ट्या यजे।।

ॐ ह्रीं अर्हदादि नवदेवेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थमण्डल पूजा

–बसन्ततिलका छंद–

तद्ब्रह्मचिन्मयसुधारसपूरभोक्तृ, वाक्यामृताप्लुतजगद् विधिपूर्वमेतत्।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।1।।

ॐ ह्रीं परब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्त्येऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मादिदिव्यह्रदवारिविभूतिभोक्त्रीः, श्रीपूर्वदिव्ययुवतीर्विधिपूर्वमेताः।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।2।।

ॐ ह्रीं श्री प्रभृतिदेवतास्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गङ्गादिदिव्यसरिदम्बुविभूतिभोक्त्री-गङ्गादिदैवतवधूर्विधिपूर्वमेताः।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।3।।

ॐ ह्रीं गङ्गादिदेवीस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतातदुत्तरसरित्प्रणयिह्रदाम्भो-भुञ्जन्महाह्रदसुरान् विधिपूर्वमेतान्।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।4।।

ॐ ह्रीं सीताविद्धमहाह्रददेवस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिन्धुप्रवेशपथतोयविभूतिभुञ्जन्, श्रीमागधादिविबुधान् विधिपूर्वमेतान्।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।5।।

ॐ ह्रीं लवणोदकालोदमागधादितीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतादिमागधपथीय-विभूतिभुञ्जन्, श्रीमागधादिविबुधान् विधिपूर्वमेतान्।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।6।।

ॐ ह्रीं सीतासीतोदादिमागधादितीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्यातिगाम्बुनिधिनीरविभूतिभुञ्जन्, क्षीरोदवारिधिसुरान् विधिपूर्वमेतान्
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।7।।

ॐ ह्रीं संख्यातीतसमुद्रदेवस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकाग्रसिद्धपुरतीर्थजलर्द्धिभुञ्ज-ल्लोकेऽष्टतीर्थमरुतो विधिपूर्वमेतान्।
अबान्धतन्दुललतान्तचरुप्रदीप-धूपप्रसूनकुसुमाञ्जलिभिर्यजेऽस्मिन्।।8।।

ॐ ह्रीं लोकस्थिततीर्थस्थाने चैत्यचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गङ्गादयः श्रीप्रमुखाश्च देव्यः, श्रीमागधाद्याश्च समुद्रनाथः।
ह्रदेशिनोऽन्येपि जलाशयेशा-स्ते सारयन्त्वस्य जिनोचिताम्भः।।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-शान्ति-पुष्टयः श्रीदिक्कुमार्यो कलशमुखेष्वेतेषु नित्यनिविष्टा भवत भवतेति स्वाहा।

यह श्लोक और मंत्र बोलकर जलाशय के तट पर पुष्प बिखेरें। तदनन्तर प्रारंभ में छपा मङ्गलाष्टक बोलकर घटों पर पुष्प बिखेरें। यहाँ यदि समय हो तो आगे लिखे 81 श्लोकों द्वारा उनके मंत्रों को चतुर्थ्यन्त (ॐ ह्रीं इन्द्रकलशायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा) बदलकर कलशपूजन करें। अन्यथा समुदायरूप में एक अर्घ्य चढ़ाकर यह श्लोक बोले। फिर कलश उठाकर जिस प्रकार ले आये थे, उसी प्रकार वापिस ले जावे।

तीर्थेनानेन तीर्थान्तरदुरधिगमोदारदिव्यप्रभाव-
स्फूर्जत्ततीर्थोत्तमस्य प्रथितजिनपतेः प्रेषितप्राभृताभान्।
श्रीमुख्यख्यातदेवीनिवहकृतमुखाद्यासनोद्भूतशक्ति-
प्रागल्भ्यानुद्धरामो जयजघनिनदे शातकुम्भीयकुम्भान्।।

यदि कलशारोहण होना है तो इन्द्र उस कलश को साथ में लेकर नगर के खास-खास मार्गों में प्रभावना के साथ घूमकर नगर कीर्तन करें। नगर कीर्तन के समय प्रतिष्ठाचार्य मन में शांतिमंत्र का उच्चारण करते हुए सब ओर पुष्प अथवा पीली सरसों क्षेपित करते रहें। जुलूस के अन्य स्त्री-पुरुष स्वर से स्तुति आदि पढ़ते जावें।

वापिस आने पर यदि मंदिर प्रतिष्ठा है तो मंदिर के शिखर पर, वेदी प्रतिष्ठा है तो वेदी पर और कलशारोहण है तो एक थाली में कलश को रखकर उस पर नीचे लिखे श्लोक व मंत्र बोलकर वह जल डालना चाहिए। मंदिर शुद्धि आदि की विधि यह है कि एक इतना बड़ा दर्पण रखा जाये, जिसमें शिखर सहित मंदिर का प्रतिबिम्ब आ जाये। फिर मंदिर के प्रतिबिम्ब

सहित दर्पण के सामने देखते हुए एक पात्र में प्रत्येक घट से एक धारा देवें, यदि एक साथ तीनों कार्य हों तो तीनों की शुद्धि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के द्वारा एक साथ कर लेना चाहिए।

शुद्धि विधान

81 कलशों के श्लोक और मंत्र इस प्रकार हैं–

कुम्भमिन्द्राह्वयं दिव्यमिन्द्रशस्त्रसमप्रभम्।
ऐन्द्रपुष्पैः समर्चामि नवार्हद्भवनोत्सवे।।1।।

ॐ ह्रीं इन्द्रकलशेन मंदिर-(वेदिका.....कलश.....) शुद्धिं करोमीति स्वाहा।।1।।

अग्निज्वालासमानाभमग्न्याख्यं बहुलाक्षतैः।
पूजयामि जिनागारस्नानाय सुखहेतवे।।2।।

ॐ ह्रीं अग्निकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

यमदण्डसमानाभमलौकिकमणिश्रितम्।
यमाख्ययमदिक्पालमान्यं संचर्चयेऽनघम्।।3।।

ॐ ह्रीं यमकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

नैऋत्याख्यं महाकुंभं नैऋत्याधिपरक्षितम्।
संशब्दये जिनागारं स्नानाय मधुस्तवैः।।4।।

ॐ ह्रीं नैऋत्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

वरुणाख्यं घटं दिव्यं वरुणासुररक्षितम्।
संशब्दये जिनेन्द्रस्य वेश्मस्नानाय चम्पकैः।।5।।

ॐ ह्रीं वरुणकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पवनामरसंसेव्यं पवनामरसुरक्षितम्।
पवनाख्यं घटं नीर-गन्धप्रसूनशालिजैः।।6।।

ॐ ह्रीं पवनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुबेराख्यं घटं दिव्यं कुबेरगृहशोभितम्।
जिनवेश्मप्लवायात्र समाह्वये कदम्बकैः।।7।।

ॐ ह्रीं कुबेरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

ईशानाख्यमदाधारमीशादिदिग्विभासितम्
ॐ ह्रीं तिष्ठेद्विधानेन काश्मीरैस्तन्महे मुदा।।8।।

ॐ ह्रीं ईशानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं गारुन्मताह्वानं गरुन्मणिविनिर्मितम्।
सरसैर्दिव्यपूजार्घैः श्रये जैनमहोत्सवे।।9।।

ॐ ह्रीं गारुन्मतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कलशं सुन्दराकारं वैडूर्यमणिनिर्मितम्।
दिव्यं मरकताभिख्यं स्थापयेऽर्हद्गृहोत्सवे।।10।।

ॐ ह्रीं मरकतमणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

गाङ्गेयनिर्मितं कुम्भं गाङ्गेयाख्यं महोन्नतम्।
गङ्गावनरसापूर्णं पूजयेऽर्हत्सुवेश्मनि।।11।।

ॐ ह्रीं गाङ्गेयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

प्रतप्तहाटकैः स्पष्टं श्रीमद्धाटकसंज्ञकम्।
कुम्भं तीर्थजलापूर्णमर्चयामि यथाविधि।।12।।

ॐ ह्रीं हाटककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

हिरण्याख्यं महाकुम्भं हिरण्येन समर्जितम्।
लसत्पङ्कजमालाढ्यं यजेऽर्हत्सद्मसम्महे।।13।।

ॐ ह्रीं हिरण्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कनत्कनकसंकाशं नानामणिविमण्डितम्।
यजेऽर्हन्मन्दिरे कुम्भं शुद्धनीरसमाश्रितम्।।14।।

ॐ ह्रीं कनत्कलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अष्टापदाख्यं सत्कुम्भं हेमस्रक्प्रविराजितम्।
क्षीरोदवारिसम्पूर्णमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे।।15।।

ॐ ह्रीं अष्टापदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

महारजतनामाढ्यं महारजतनिर्मितम्।
तीर्थाम्बूपूरनिभृतमर्हद्गेहेऽर्चये मुदा।।16।।

ॐ ह्रीं महारजतकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

आनन्ददायकं दिव्यं सानन्दाख्यं मनोहरम्।
नित्यं तीर्थजलैः पूर्णं स्थापये चैत्यसम्महे।।17।।

ॐ ह्रीं आनन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

नन्दाख्यं नन्दनोत्कृष्टं प्रणन्दितगमं जितम्।
कुम्भं समर्चये दिव्यं नानामणिविनिर्मितम्।।18।।

ॐ ह्रीं नन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं विजयनामानं विजयोर्जितविश्वकम्।
पूर्णं तीर्थजलैर्दिव्यमर्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे।।19।।

ॐ ह्रीं विजयकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

नानातीर्थजलाकीर्णं कुम्भं त्वजितनामकम्।
मानवे विविधार्हाभिः स्मरजिनमन्दिरोत्सवे।।20।।

ॐ ह्रीं अजितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अपराजितनामानं घटं काञ्चनसंनिभम्।
संप्रतिष्ठापये चैत्यमहे जलसुमाक्षतैः।।21।।

ॐ ह्रीं अपराजितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

महोदरं शतानन्दनामधेयं प्रभास्वरम्।
कलशं कमलैः पूर्णं प्रार्चयेऽर्हद्गृहोत्सवे।।22।।

ॐ ह्रीं शतानन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सह स्नानदसत्ख्यातिं पद्मादितीर्थसंभृतम्।
पुष्पमालावृतं कुम्भं महाम्यर्हद्गृहक्षणे।।23।।

ॐ ह्रीं स्नानदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुन्दाख्यं कुन्दपुष्पाढ्यं कुन्दस्रक्प्रविराजितम्।
प्रार्चये कुन्दपुष्पौघैः कुम्भं भव्यजिनालये।।24।।

ॐ ह्रीं कुन्दकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

प्रस्फुटन्मल्लिकापुष्पसमूहामोदवासितैः।
नीरैः पूर्णं यजे हेममल्लिकाख्यं महाघटम्।।25।।

ॐ ह्रीं मल्लिकाख्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अपूर्वचम्पकामोदप्रवासितजलैर्भृतम्।
चम्पकाख्यं घटं दिव्यं सूत्रितं सम्यगर्चये।।26।।

ॐ ह्रीं चम्पकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कदम्बरजसाव्याप्तकदम्बाख्यं महाघटम्।
उपाक्षिप्तविधानेनार्चये जैनगृहालये।।27।।

ॐ ह्रीं कदम्बकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

मन्दराख्यं महाकुम्भं मन्दारस्रग्विभूषितम्।
दिव्यैरर्चामि मन्दारैः प्रत्यग्रजिनमन्दिरे।।28।।

ॐ ह्रीं मन्दारकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

प्रत्यग्रपारिजातौघसमर्चितजलैर्भृतम्।
पारिजाताभिधं कुम्भमर्चयामि पयोभरैः।।29।।

ॐ ह्रीं पारिजातकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

संतानपल्लवोत्फुल्लप्रसूननिकरार्चितम्।
संतानाख्यं जलैः पूर्णं संस्थाप्यापूजयेऽनिशम्।।30।।

ॐ ह्रीं सन्तानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

हरिचन्दनपुष्पाभं हरिचन्दनसंज्ञकम्।
हरिचन्दनकर्पूरैः कुम्भं संप्रार्चये मुदा।।31।।

ॐ ह्रीं हरिचन्दनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कल्पवृक्षमहापुष्पप्रकरेण प्रसाधितम्।
कल्पवृक्षाभिधं कुम्भं पूजनाय प्रकल्पये।।32।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

जपाख्यं जपदामाभं जपापुष्पाख्यबालकम्।
यजे जगत्प्रभोर्नव्यचैत्यस्नानाय केवलम्।।33।।

ॐ ह्रीं जपाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

विशालाख्यं घटं दिव्यं विशालं रत्ननिर्मितम्।
विशालयामि पुष्पौघैः कुन्दरमन्दारसंभवैः।।34।।

ॐ ह्रीं विशालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं श्रीभद्रकुम्भाख्यं भद्रेभकुम्भसुन्दरम्।
पारिभद्रप्रसूनौघैः शोभायामि मनोहरैः।।35।।

ॐ ह्रीं भद्रकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

घटं श्रीपूर्णकुम्भाख्यं पूर्णकुम्भमिवोन्नतम्।
क्षीरोदनीरसम्पूर्णैः सुरत्नैर्वर्णयाम्यहम्।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्णकुम्भकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

जयन्तं सर्वकुम्भानां जयन्ताख्यं महाघटम्।
विकसज्जयपुष्पौघैः संजयामि तदुत्सवे।।37।।

ॐ ह्रीं जयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

वैजयन्ताभिधं कुम्भं सत्यं विजयदायकम्।
नव्यप्रासादचर्यार्थैश्चर्चयेऽहं वनादिभिः।।38।।

ॐ ह्रीं वैजयन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

चन्द्रकान्तमहारत्नविनिर्मितमहाघटम्।
चन्द्राख्यं जगदुत्कृष्टं पूजये विविधार्चनैः।।39।।

ॐ ह्रीं चन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सूर्यकान्ताश्मसन्दोहविराजितं महोदयम्।
सूर्याख्यं कुम्भमुत्कृष्टैः प्रयजे तन्महार्घकैः।।40।।

ॐ ह्रीं सूर्यकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

लोकालोकप्रविख्यातं लोकालोकविधानकम्।
कुम्भं संस्थापयाम्यत्र सम्पूज्य विविधार्चनैः।।41।।

ॐ ह्रीं लोकालोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

त्रिकूटनामकं कुम्भं त्रिकूटाद्रिसमानकम्।
समर्च्य विविधार्घेण स्थापये तन्महोत्सवे।।42।।

ॐ ह्रीं त्रिकूटकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

उदयाख्यं महाकुम्भमुदयाचलसन्निभम्।
स्थापयामि जिनागारेऽभिषवाय महोन्नतिम्।।43।।

ॐ ह्रीं उदयाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

हिमवत्पर्वताभिख्यं हिमाचलसमुन्नतिम्।
कुटं निवेशयाम्यत्र स्नानाय नव्यवेश्मनः।।44।।

ॐ ह्रीं हिमाचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

निषधाद्रिसमोत्सेधं निषधाख्यं घटं वरम्।
संविधायार्हणां दिव्यां स्थापयेऽर्हन्महोत्सवे।।45।।

ॐ ह्रीं निषधकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

माल्यवत्कुम्भनामानं नानामालाविराजितम्।
शुद्धस्फटिकसंकाशं कुम्भं तत्र निवेशये।।46।।

ॐ ह्रीं माल्यवत्कलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सत्पारिपात्रकोत्सेधं सत्पारिपात्रकाह्वयम्।
कलशं श्रीजिनगारस्नानाय पूजयेऽनघम्।।47।।

ॐ ह्रीं सत्पात्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

गन्धमादननामानं गन्धमादप्रपूरितम्।
सम्पूजये जलाद्यर्घैर्जिनौकस्नानहेतवे।।48।।

ॐ ह्रीं गन्धमादनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सुदर्शनसमाह्वानं सुदर्शनगरिष्ठकम्।
कलशं विशुद्धये जैनवेश्मनः स्थापयेऽनघम्।।49।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कलशं मन्दराकारं मन्दराख्यं महोन्नतिम्।
विधापयामि जैनेन्द्रभवनस्नानहेतवे।।50।।

ॐ ह्रीं मन्दरकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अचलेत्यब्धिना पूर्णमचलाख्यं घटं नवम्।
आम्रपल्लवशोभाढ्यं तदर्थं स्थापयाम्यहम्।।51।।

ॐ ह्रीं अचलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

विद्युन्मालासमाकारं विद्युन्माल्यभिधानकम्।
कलशं स्थापये दिव्यं नानापूजनवस्तुभिः।।52।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

चूडामण्याख्यमुत्तुङ्गं चूडामणिसमुन्नतिम्।
पूर्णं तीर्थोदकैः कुम्भं तदुत्सवे निधापये।।53।।

ॐ ह्रीं चूडामणिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सद्धारगुलिकाभालं गुलिकाह्वयमुत्तमम्।
कुम्भं निवेशयाम्यत्र जैनमन्दिरशुद्धये।।54।।

ॐ ह्रीं गुलिकाकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

दक्षिणावर्तनामानं दक्षिणावर्तसन्निभम्।
घटं च घटितं लक्ष्म्या तत्कृते सन्निवेशये।।55।।

ॐ ह्रीं दक्षिणावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कोकाख्यं कोकसंकाशं वारिजाश्मविनिर्मितम्।
घटं निधापये जैनवेश्मनः शुद्धहेतवे।।56।।

ॐ ह्रीं कोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

राजहंससमानाभं राजहंससमाह्वयम्।
घटं तं जाघटीम्यत्र नवार्हद्वेष्मशुद्धये।।57।।

ॐ ह्रीं राजहंसकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कलशं हरिताभिख्यं हरिताश्मविनिर्मितम्।
पूजये दिव्यरत्नेन दिव्यगन्धाम्बुचम्पकैः।।58।।

ॐ ह्रीं हरितकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

मृगेन्द्राह्वयमुत्तुङ्गं समाह्वयार्चनादिभिः।
मृगेन्द्रवत्प्रगर्जन्तं स्नानकालेषु वेश्मनः।।59।।

ॐ ह्रीं मृगेन्द्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुम्भं कोकनदाकारं श्रीमत्कोकनदाह्वयम्।
त्रिभङ्गानीरसंपूर्णं घटयेऽस्मिन्महोत्सवे।।60।।

ॐ ह्रीं कोकनदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

स्निग्धाञ्जन समाकारमणिनिर्मितमुत्तमम्।
कालाख्यं कलशं ह्रद्यं तदुत्सवे निवेशये।।61।।

ॐ ह्रीं कालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पद्माख्यं पद्मचक्राख्यं पद्मरागविनिर्मितम्।
कुम्भं समाह्वये नव्यप्रसादस्नपनाय वै।।62।।

ॐ ह्रीं पद्मकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अत्यन्तश्यामलाकारप्रस्तरैर्निर्मितं घटम्।
प्रासादस्नानकालेऽत्र महाकालं निवेशये।।63।।

ॐ ह्रीं महाकालकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पञ्चप्रकारसद्रत्नविनिर्मितं महोन्नतम्।
कलशं सर्वरत्नाख्यं स्नानाय श्रीजिनौकसः।।64।।

ॐ ह्रीं सर्वरत्नकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पाण्डुकाकारपाषाणनिर्मितं पाण्डुकाह्वयम्।
कुम्भं तीर्थोदकसम्पूर्णं निवेशये यथाविधिं।।65।।

ॐ ह्रीं पाण्डुककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

नैःसर्पकाङ्गलाकारमणिनिर्मितमुन्नतम्।
कुम्भं स्थापयाम्यत्र तीर्थवारिप्रपूरितम्।।66।।

ॐ ह्रीं नैःसर्पकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

मानवाख्यं घटं नव्यमानये तीर्थवार्भृतम्।
स्थापयेऽर्हन्महावेश्मस्नपनाय जलार्जितम्।।67।।

ॐ ह्रीं मानवकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

शङ्खसंकाशरत्नौघविनिर्मितमहोन्नतम्।
संस्थाप्य पूजये दिव्यं शङ्खाख्यं जलचन्दनैः।।68।।

ॐ ह्रीं शङ्खनिधिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पिङ्गलाख्यं च पिङ्गाभं पिङ्गाश्मभिर्विनिर्मितम्।
घटं तीर्थाम्बुसम्पूर्णं तदर्थं सन्निधापये।।69।।

ॐ ह्रीं पिङ्गलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पुष्करावर्तनामानं कलशं रत्ननिर्मितम्।
जिनोदवासितस्नानालोकं सङ्कल्पयाम्यहम्।।70।।

ॐ ह्रीं पुष्करावर्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

मकरध्वजनामानमिन्द्रनीलविधापितम्।
कटुं गङ्गाम्बुपर्याप्तं पवित्रं स्थापयेद्वरम्।।71।।

ॐ ह्रीं मकरध्वजकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

ब्रह्माभिख्यं चतुर्वक्त्रं कुम्भं ब्रह्मसमर्चितम्।
ब्रह्मतीर्थजलैः पूर्णं स्थपये नीरचन्दनैः।।72।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सुवर्णनिर्मितं कुम्भं सुवर्णाख्यं महासुखम्।
स्फुरद्रत्नचयं चारुं संस्थाप्याहं समर्चये।।73।।

ॐ ह्रीं सुवर्णकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कदलीपत्रसंकाशं नीलाश्मकमयं घटम्।
स्थापयामीन्द्रनीलाख्यं सम्भृतं तीर्थवारिणा।।74।।

ॐ ह्रीं इन्द्रनीलकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

अशोककुसुमामोदवासिताम्भःप्रपूरितम्।
अशोकाख्यं महाकुम्भं निधापये जिनौकसाम्।।75।।

ॐ ह्रीं अशोककलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

पुष्पदन्तसमानाभं पुष्पदन्तसमाह्वयम्।
कलशं सलिलैः पूर्णं संस्थापयेऽर्हन्मन्दिरे।।76।।

ॐ ह्रीं पुष्पदन्तकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

कुमुदाख्यं घटं नव्यं कुमदस्रग्विराजितम्।
कुमदैरर्चये स्नाने संस्थाप्य श्रीजिनौकसः।।77।।

ॐ ह्रीं कुमुदकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

येषु दृष्टेषु भव्यानां सम्यक्त्वं प्रकटीभवेत्।
दर्शानाख्यं महाकुंभ सम्भावये जलादिभिः।।78।।

ॐ ह्रीं दर्शनकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

यस्य दर्शनमात्रेण धर्मोऽधर्मः प्रबुध्यते।
कुम्भं ज्ञानाख्यमुत्तुङ्गं निवेशये जलैर्भृतम्।।79।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

दर्शनाद्यस्य भव्यानां वृत्ते मतिः प्रजायते।
चारित्राख्यं वनैःपूर्णं कुम्भं संस्थापये मुदा।।80।।

ॐ ह्रीं चारित्रकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

सर्वार्थसिद्धिकर्तारं सर्वार्थसिद्धिनामकम्।
कुम्भं समर्चये जैनवेश्मनः स्नानहेतवे।।81।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिकलशेन मन्दिरशुद्धिं करोमीति स्वाहा।

इस प्रकार 81 कलशों के द्वारा शुद्धि करने के बाद निम्न मंत्रों के द्वारा शुद्धि करें।

ॐ ह्रीं वायुकुमार देव! सर्वविघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु हूँ फट् स्वाहा।

(यह मंत्र बोलकर वेदी पर दर्भ पूले से मार्जन करें)

ॐ ह्रीं मेघकुमार देव! धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

(यह मंत्र बोलकर दर्भ के पूले से वेदी पर जल छींटे।)

ॐ ह्रीं अग्निकुमार भूमिं ज्वालय ज्वालय अं हं सं वं झं ठं क्षः फट् स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर कपूर जलाकर वेदी पर डाले)

ॐ हूँ फट् किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु आत्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः फट् स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर मंदिर की दशों दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें।)

सूचना—वेदी यदि कच्ची हो अथवा अधिक जल निकलने का मार्ग न हो तो थोड़ा-थोड़ा जल डालकर शुद्धि कर लेना चाहिए। अथवा दर्पण में प्रतिबिम्ब देखकर यह विधि करें।

शिलान्यासविधि

भूमि-परीक्षा

1. सर्वप्रथम स्वस्तिक बनाकर एक हाथ लम्बा चौड़ा गड्ढा खोदकर भूमि परीक्षण करें। गड्ढे से खोदी गई मिट्टी ही उसमें भरे, कम रहे तो अशुभ, सम रहे तो मध्यम और गड्ढे से अधिक हो तो उत्तम।

2. पूरा गड्ढा पानी से भर दे, प्रातः देखें। पूरा रहे तो अशुभ, कुछ पानी सूख जावे तो मध्यम, कुछ पानी शेष रहे तो शुभ।

3. शिलान्यास स्थल पर भगवान की प्रतिमा विराजमान करके मंगलाष्टक पढ़ें पुनः भगवान का एवं विनायक यंत्र का अभिषेक और शांतिधारा करें।

4. पुनः नवदेवता पूजन, चौबीस भगवान एवं विनायक यंत्र की पूजन करें।

5. शिलान्यास किये जाने वाले गड्ढे में 2×2 फुट के चौकोर स्थल में समतल ईंटों से चबूतरा बना लें, उस चबूतरे को पुण्याहवाचन का मंत्र (पृ. 79 से) बोलकर गंधोदक से शुद्ध कर लें। सफेद चावल बिछाकर पीले चावल से बीच में स्वस्तिक बना दें पुनः भूमिशोधन विधि (पृ. 67 से 71 तक) पंचकुमार की स्थापना करें।

6. चौबीस तीर्थंकरों के शासन देव-देवी की स्थापना करें, उन्हें यथायोग्य अर्घ्य समर्पित करें।

7. पुनः वास्तुविधान की पुस्तक से वास्तुविधान करें अथवा समयाभाव हो तो संक्षिप्त वास्तुविधान कर लें।

दिग्बन्धन

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं, ह्रां पूर्वदिशातः समागतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

(प्रत्येक मंत्र पढ़ने के पश्चात् पीली सरसों या पुष्प छोड़ें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ह्रीं दक्षिणदिशातः समागतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो आइरियाणं, ह्रूं पश्चिमदिशातः समागतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ह्रौं उत्तरदिशातः समागतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं, ह्रः सर्वदिशातः समागतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

(सब दिशाओं में पीली सरसों या पुष्प क्षेपण करें)

(निम्न मंत्र पढ़कर गेती पर जल के छींटे देवे)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः क्षीं भूः अमृतजलेन खन्ति शुद्धिं करोमि।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः खन्ति चन्दनलेपं करोमि।

(यह पढ़कर गेंती पर चन्दन से साँथियां बनावे)

वास्तुविधान (संक्षिप्त)

एते वास्तुसुराः समस्तधरणीसंवाहिनी वाहिताः।
प्रत्यूहाद्यविधायिनस्त्वपचिताः प्रत्यूहसंहारकाः।
आद्याः प्रापितपूजनाः प्रमुदिताः सर्वप्रभाभान्विता-
यष्टुर्याजकभूपमन्त्रिसुजनानां च श्रियै सन्तु ते।।1।।
पृथ्वीविकारात् सलिलप्रवेशात्, अग्नेर्विदाहात् पवनप्रकोपात्।
चौरप्रयोगादपि वास्तुदेवाः, चैत्यालयं रक्षतु वास्तुदेवः।।2।।
ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ह्रौं सर्वशान्तिं कुरुत स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयर्द्धिभ्यो नमः स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं दशदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं दुर्मुहूर्तदुःशकुनादिकृतोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं वास्तुदेवेभ्यः स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं परकृतमन्त्रतन्त्रडाकिनीशाकिनीभूतपिशाचादिकृतोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नोपशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वाधिव्याधिशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वत्र क्षेमं आरोग्यतां विस्तारय विस्तारय सर्वं ह्रष्ट-पुष्टं प्रसन्नचित्तं कुरु कुरु स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं यजमानादीनां सर्वसंघस्य शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं समृद्धिं अक्षीणर्द्धिं पुत्रपौत्रादिवृद्धिं आयुवृद्धिं धनधान्यसमृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।।11।।

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः णमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।।12।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नमः स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं क्रौं आं अनुत्पन्नानां द्रव्याणामुत्पादकाय, उत्पन्नानां द्रव्याणां वृद्धिकराय चिन्तामणिपार्श्वनाथाय वसुदाय नमः स्वाहा।।14।।

(अर्घ्य चढ़ावे)

(यहाँ वास्तुविधान की पुस्तक से हिन्दी का विधान भी कर सकते हैं)

ॐ ह्रीं क्रौं ब्रह्मवास्तुदेवाय स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्र-वास्तुदेवाय स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं क्रौं अग्नि-वास्तुदेवाय स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं क्रौं यम-वास्तुदेवाय स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं क्रौं नैऋत्य-वास्तुदेवाय स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं क्रौं वरुण-वास्तुदेवाय स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं क्रौं पवन-वास्तुदेवाय स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं क्रौं कुबेर-वास्तुदेवाय स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं क्रौं ऐशान-वास्तुदेवाय स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं क्रौं आर्य-वास्तुदेवाय स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं क्रौं विवस्वान्-वास्तुदेवाय स्वाहा।।11।।
ॐ ह्रीं क्रौं मित्र-वास्तुदेवाय स्वाहा।।12।।
ॐ ह्रीं क्रौं भूधर-वास्तुदेवाय स्वाहा।।13।।
ॐ ह्रीं क्रौं शचीन्द्र-वास्तुदेवाय स्वाहा।।14।।
ॐ ह्रीं क्रौं प्राचीन्द्र-वास्तुदेवाय स्वाहा।।15।।
ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्र-वास्तुदेवाय स्वाहा।।16।।
ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्रराज-वास्तुदेवाय स्वाहा।।17।।
ॐ ह्रीं क्रौं रुद्र-वास्तुदेवाय स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं क्रौं रुन्द-वास्तुदेवाय स्वाहा।।19।।
ॐ ह्रीं क्रौं आप-वास्तुदेवाय स्वाहा।।20।।
ॐ ह्रीं क्रौं आप-वास्तुदेवाय स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं क्रौं पर्जन्य-वास्तुदेवाय स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं क्रौं जयन्त-वास्तुदेवाय स्वाहा।।23।।
ॐ ह्रीं क्रौं भास्कर-वास्तुदेवाय स्वाहा।।24।।
ॐ ह्रीं क्रौं सत्य-वास्तुदेवाय स्वाहा।।25।।
ॐ ह्रीं क्रौं भृश-वास्तुदेवाय स्वाहा।।26।।
ॐ ह्रीं क्रौं अन्तरीक्ष-वास्तुदेवाय स्वाहा।।27।।
ॐ ह्रीं क्रौं पुष्प-वास्तुदेवाय स्वाहा।।28।।
ॐ ह्रीं क्रौं वितथ-वास्तुदेवाय स्वाहा।।29।।
ॐ ह्रीं क्रौं राक्षस-वास्तुदेवाय स्वाहा।।30।।
ॐ ह्रीं क्रौं गन्धर्व-वास्तुदेवाय स्वाहा।।31।।
ॐ ह्रीं क्रौं भृङ्गराज-वास्तुदेवाय स्वाहा।।32।।
ॐ ह्रीं क्रौं मृषदेव-वास्तुदेवाय स्वाहा।।33।।
ॐ ह्रीं क्रौं दौवारिक-वास्तुदेवाय स्वाहा।।34।।
ॐ ह्रीं क्रौं सुग्रीव-वास्तुदेवाय स्वाहा।।35।।
ॐ ह्रीं क्रौं पुष्पदन्त-वास्तुदेवाय स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं क्रौं असुर-वास्तुदेवाय स्वाहा।।37।।
ॐ ह्रीं क्रौं शेष-वास्तुदेवाय स्वाहा।।38।।
ॐ ह्रीं क्रौं रोग-वास्तुदेवाय स्वाहा।।39।।
ॐ ह्रीं क्रौं नागराज-वास्तुदेवाय स्वाहा।।40।।
ॐ ह्रीं क्रौं मुख्य-वास्तुदेवाय स्वाहा।।41।।
ॐ ह्रीं क्रौं भल्लारक-वास्तुदेवाय स्वाहा।।42।।
ॐ ह्रीं क्रौं भृङ्ग-वास्तुदेवाय स्वाहा।।43।।
ॐ ह्रीं क्रौं आदित्य-वास्तुदेवाय स्वाहा।।44।।
ॐ ह्रीं क्रौं उदित-वास्तुदेवाय स्वाहा।।45।।
ॐ ह्रीं क्रौं विचारदेव-वास्तुदेवाय स्वाहा।।46।।
ॐ ह्रीं क्रौं पूतना-वास्तुदेवाय स्वाहा।।47।।
ॐ ह्रीं क्रौं पापराक्षसी-वास्तुदेवाय स्वाहा।।48।।
ॐ ह्रीं क्रौं चरकी-वास्तुदेवाय स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं क्रौं इन्द्रादि चरकीपर्यन्त एकोनपंचाशत् वास्तुदेवाः इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं गृण्हीध्वं गृण्हीध्वं स्वाहा।

तिर्यक्प्रचारादशनेः प्रपातात् बीजप्ररोहाद् द्रुमखण्डपातात्।
कीटप्रवेशादपि वास्तुदेव! चैत्यालयं रक्षतु सर्वकालम्।

(इतीष्टप्रार्थनाय पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अब गड्ढे में तांबे के पंचकलश की स्थापना मंत्रोच्चारणपूर्वक करें। उन कलशों के अंदर पहले से ही हल्दी गांठ, सरसों, सुपारी और चांदी के या सामान्य रुपये के 1-1 सिक्के डालकर, कलशों में केशर से स्वस्तिक बनाकर उन्हें पंचरंगी सूत्र से वेष्टित करें।

पुनः सर्वप्रथम गड्ढे में बिछाये गये चावल के चारों कोनों पर एवं मध्य में चाँदी के 1-1 स्वस्तिक स्थापित करें। उसके बाद उन स्वस्तिकों के ऊपर कलश स्थापित करवाएँ।

स्वस्तिक स्थापना का मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीजिनमंदिरशिलान्यासक्रियायां रजतस्वस्तिकं स्थापयामि स्वाहा।

कलशस्थापना का श्लोक एवं मंत्र–

तीर्थाम्बुपूर्णशरणोत्तममङ्गलार्थं, संकल्पनादि समलंकृतशुभ्रकुम्भान्।
वेद्यष्टदिक्षु विनिवेश्य सपश्चवर्ण-सूत्रेण तांस्त्रिगुणमेव वृणोमि सिद्ध्यै।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमंदिरशिलान्यासक्रियायां मंगलकुंभं स्थापयामि स्वाहा सर्वलोक शांतिर्भवतु।

(पाँच बार इस मंत्र को पढ़कर पृथक्-पृथक् पाँच कलश स्थापित करें)

पुनः मध्य के कलश में नवरत्न (मोती-माणिक-मूंगा-हीरा-नीलम-पन्ना-पुखराज-स्फटिक-गोमेद अथवा शक्ति अनुसार जो भी रत्न उपलब्ध हो सकें, उन्हें कलश में डालें) डालें–

नवरत्न स्थापन का मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीजिनमंदिरशिलान्यासक्रियायां नवरत्नानि निक्षिपामि स्वाहा सर्वलोक शांतिर्भवतु-शांतिर्भवतु-शांतिर्भवतु।

मध्य के कलश में पारा डालें–

ॐ ह्रीं श्रीजिनमंदिरशिलान्यासक्रियायां पारदद्रव्यं निक्षिपामि स्वाहा सर्वलोक शांतिर्भवतु-शांतिर्भवतु-शांतिर्भवतु।

(पुनः पाँचों कलशों के ऊपर या उनके पास नीचे घी के जलते हुए दीपक (मिट्टी या तांबे के) रखें।

दीपक रखने का मंत्र–

दिव्य-प्रदीप-कलिकोज्ज्वल-वर्ण-पूरै-र्नीराजनाथमुदितैर्वरभाजनस्थैः।
नीराजयामि भगवज्जिनयज्ञवेदी-मोजोगुणस्य यजतामभिवर्धनाय।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनमंदिरशिलान्यासक्रियायां घृतदीपं स्थापयामि स्वाहा।

(सवा फुट की पाषाण की शिला पर स्वस्तिक बनाकर उसे कलावा से वेष्टित करके पहले से ही पीली सरसों एवं पीले पुष्पों से मंत्रित करके रख लें। उस पर सेंधा नामक एवं गुड़ की ढेली रख दें।)

स्वर्ण व रजत की ईंट स्थापित करने हेतु मंत्र–

ॐ ह्रीं श्री जिनमंदिर शिलान्यास क्रियायां स्वर्णइष्टिकां स्थापयामि स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री जिनमंदिर शिलान्यास क्रियायां रजतइष्टिकां स्थापयामि स्वाहा।

शिला स्थापित करने का मंत्र–

शिलां विशालां लवणेन विद्धां, सूत्रेण बद्धां समृदं सलोष्ठाम्।
भौगौघपुष्ट्यै दुरितौघपिष्ट्यै, वेद्याः अधस्ताद् विनिवेशयामि।।

ॐ ह्रीं सर्वजनानन्दकारिणि सौभाग्यवति तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

(शिला स्थापित करने के बाद शिला के चारों ओर दशों दिशाओं में 10 कीलें गाढ़ें।)

बीच सोने की कील लगाने का मंत्र–

ॐ भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसेविताय अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टेभूतभविष्यत्वर्तमानाय स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर बीच में सोने की एक कील गाढ़ें)

आठों दिशा में कील लगाने का मंत्र–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर आठ दिशाओं में पाँच अंगुलप्रमाण लोहे की शलाकाएँ गाड़ देवें। बीच की शलाका का प्रमाण सात अंगुल हो। इन शलाकाओं को तेल में भिगोकर तथा रुई में लपेटकर गाड़ें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे पुण्यसहिताय शक्त्यनुसारेण द्रव्यस्थापनं करोमीति स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर शक्ति के अनुसार रुपया, सोना, चांदी आदि द्रव्य डालें। फिर कारीगर को वस्त्र आदि से संतुष्ट कर नींव भर दें।)

(अनन्तर शांति विजर्सन करें)

अन्त्यमङ्गल

आयुर्द्राघयतु व्रतं दृढ़यतु व्याधीन्व्यपोहत्वयं,
श्रेयांसि प्रगुणीकरोतु वितनोत्वासिन्धु शुभ्रं यशः।
शत्रून् शांतयतु श्रियोऽभिरमरत्वश्रान्तमुन्मुद्रय-
त्वानन्दं भजतां प्रतिष्ठित इह श्रीसिद्धनाथः सताम्।।

श्री विनायकयंत्र पूजा

–शंभु छंद–

श्रीपंचपरम गुरु त्रिभुवन में, नित शत इंद्रों से वंदित हैं।
अर्हंत सिद्ध साधू केवलि, प्रज्ञप्तधर्म मंगलमय हैं।।
ये चार लोक में उत्तम हैं, ये चारहि शरणभूत जग में।
ये सिद्ध विनायक यंत्र मध्य, पूजत ही विघ्न हरें क्षण में।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूता! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूता! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूता! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–*(चाल-नंदीश्वर पूजा)*

रेवानदि को जल लाय, कंचन भृंग भरूँ।
भव भव की तृषा मिटाय, आतम शुद्ध करूँ।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।1।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, घिस कर्पूर मिला।
जिनपद पंकेरुह चर्च, निजमन कमल खिला।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।2।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशिकर सम तंदुल श्वेत, खंड विवर्जित हैं।
शिवरमणी परिणय हेतु, पुंज समर्पित हैं।।

श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।3।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सित कुमुद नील अरविन्द, लाल कमल प्यारे।
मदनारिजयी पदपद्म, पूजूँ सुखकारे।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।4।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली पयसार, पायस मालपुआ।
अमृतसम जिनपद अर्च, आतम सौख्य लिया।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।5।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर प्रजाल, ज्योति उद्योत करे।
अंतर में भेद विज्ञान, प्रगटे मोह हरे।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।6।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध अग्नि में जार, सुरभित गंध करे।
निज आतम अनुभव सार, कर्मकलंक हरे।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।7।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला फल आम्र, जंबू निंबू हरे।
शिव कांता संगम हेतु, तुम ढिग भेंट करें।।

श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।8।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिलादिक द्रव्य मिलाय, कंचनपात्र भरें।
जिन सन्मुख अर्घ्य चढ़ाय, शिव साम्राज्य वरें।।
श्रीसिद्ध विनायक यंत्र, विघ्न विनाश करे।
पूजत हो आत्म स्वतंत्र, मंगल सौख्य भरे।।9।।

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि समश्वेत।
यंत्र मध्य धारा करूँ, तिहुँजग शांती हेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

पारिजात के पुष्प ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
यंत्र विनायक पूजते, आतमसुख विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–शंभु छंद–

जिनके पांचों कल्याणक में, इन्द्रादि महोत्सव करते हैं।
जो ज्ञानदर्श सुखवीर्यमयी, आनन्त्य चतुष्टय धरते हैं।।
ऐसे अर्हंत अनंत गुणों के, धारी अच्युत परमात्मा।
स्याद्वादवचन पीयूष झराते, जजूँ शुद्ध अर्हंतात्मा।।

ॐ ह्रीं अनंतचतुष्टय समवसरणादिलक्ष्मीबिभ्रते अर्हत्परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जो शुक्लध्यानमय अग्नी में, आठों कर्मेन्धन भस्म करें।
परमानंदामृत सरवर में, अतिशय निमग्न हो सौख्य भरें।।

कृतकृत्य परम सिद्धात्मा ये, लोकाग्र शिखर पर तिष्ठ रहें।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ा करके, मेरे सब कर्म कलंक दहें।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठभस्मीकर्त्रे सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

जो पंचाचार स्वयं पालें, भव्यों से भी पलवाते हैं।
ये शिवपथ विघ्न विनाश करें, रत्नत्रय से नित पावन हैं।।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, ये मुझको मोक्ष मार्ग देवें।
निश्चय व्यवहार रत्नत्रय दें, मुझको भी निज सम कर लेवें।

ॐ ह्रीं पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

जो द्वादशांग अरु अंगबाह्य, श्रुत पढ़ते और पढ़ाते हैं।
अष्टांग निमित्त महाज्ञानी, गुरु उपाध्याय कहलाते हैं।।
इन गुरु के चरण कमल पूजूँ, मुझमें भी ज्ञान ज्योति प्रगटे।
ये द्रव्य भावश्रुत पूरे हों, फिर केवल ज्ञान ज्योति चमके।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगपठनपाठनोद्योताय उपाध्यायपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

चारों आराधन आराधें, नित धर्मामृत पीते रहते।
पर्वत वन गुफा कंदरा में, शुद्धात्म ध्यान करते रहते।।
ये साधु स्वात्म साध्य करें, फिर सिद्धिरमा के स्वामी हों।
मैं पूजूँ गुरु के चरण कमल, मेरा मन शिवपथ गामी हो।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकारचारित्राराधकाय साधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

–शेर छंद–

सब जग में करें मंगल, अर्हंत जिनेशा।
सब विघ्न कर्म नाशें जिनदेव हमेशा।।
ये अरिहंत मंगल मैं इनको नित जजूँ।
हों दूर सब अमंगल मैं साम्य सुख भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हंतमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

चैतन्य चिदानंद गुण समुद्र से भरे।
भगवंत सिद्धमंगल सब सौख्य विस्तरें।।
जल गंध आदि लेके मैं अर्चना करूँ।
होवे सदा मंगल मेरा दुख रंच ना धरूँ।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

बुद्धी क्रिया रस तप व विक्रिया व औषधी।
अक्षीण ऋद्धि ये कही है सात ही ऋद्धी।।
तप बल से साधु ऋद्धि धरें सर्व दुखहरें।
मैं नित्य जजूँ साधू ये मंगल सदा करें।।

ॐ ह्रीं साधुमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

जो लोक औ अलोक के स्वरूप को कहे।
केवलि प्रणीत धर्म ये संसार दुख दहे।।
बाजे बजाके भक्ति गीत नृत्य मैं करूँ।
मंगलमयी जिनधर्म पाके मृत्यु को हरूँ।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्ममंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

तीनों जगत में उत्तम अर्हंत देव हैं।
भव रोग के विनाशक ये श्रेष्ठ वैद्य हैं।।
कर्मारिनाश हेतू मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ।
अर्हंत लोकोत्तम को सदा शीश नमाऊँ।।

ॐ ह्रीं अर्हल्लोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

त्रिभुवन शिखर पे तिष्ठे उत्तम हैं विश्व में।
मुक्तीरमा के वल्लभ परमात्मा बनें।।
चिद्रूप परमानंद सौख्य में निमग्न हैं।
मैं नित्य जजूँ ये सुरेन्द्र वृंद वंद्य हैं।।

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

जो राग द्वेष त्यागी समता सुधा पियें।
ये विश्व श्रेष्ठ साधु चिन्मय प्राण से जियें।।

व्यवहार और निश्चय त्रयरत्न को धरें।
मैं नित्य नमूँ मुझको गुणरत्न से भरें।।

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

उत्तम क्षमादि शिवप्रद दश धर्म रूप है।
सद्धर्म विश्व भास्कर निज सौख्य रूप है।।
भगवंत केवली से भाषित जगत् उत्तम।
इस धर्म को मैं वंदूँ, मुनि वंद्य श्रेष्ठतम।।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

इस जग में देव कोई नहिं दे सकें शरण।
अर्हंत ही हमारे इस लोक में शरण।।
परिणाम की विशुद्धी अर्हंत भक्ति से।
अरहंत को नमूँ मैं हो सौख्य इन्हीं से।।

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

जो पाँच परावर्तन से छूट चुके हैं।
चैतन्य कल्पतरू के शिवफल को चखे हैं।।
ये सिद्ध ही शरण हैं भवभीत भक्त के।
पूजूँ सदा निज आत्मा के गुण सभी चमकें।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

मुनिराज ही शरण हैं संसारी जीव के।
अज्ञानतम हटा के श्रुत ज्ञानदान दें।।
मैं भावशुद्धि हेतू गुरुदेव को भजूँ।
सम्यक्त्वरत्न पाऊँ भवदुःख से बचूँ।।

ॐ ह्रीं साधुशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

जिनधर्म ही जगत में बंधू है शरण है।
इसके सदृश न कोई इस जग में मित्र है।।

करुणा है मूल इसका ये मोक्ष प्रदाता।
मैं नित्य जजूँ इसको हो दूर असाता।।
ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मशरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –

श्रीपंच परमगुरु वंद्य, चार मंगल चउ उत्तम शरण धार।
ये सत्रह मंत्र अनादि निधन, हैं तीन भुवन में मुख्य सार।।
संपूर्ण अमंगल अंतराय, नाशक यह मूलयंत्र जग में।
आत्यंतिक शांति प्रदान करे, पूजत ही व्याधि हरें क्षण में।।
ॐ ह्रीं अर्हदादिसप्तदशमंत्रेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

जयमाला

तर्ज –पार्श्वनाथ देव सेव.....

श्री अरीहंत देव छियालीस गुण धरें।
सिद्ध आठ गुण प्रधान भी अनंत गुण भरें।।
सूरि गुण छतीस धार चार संघ नाथ हैं।
पंचवीस गुण समेत श्री उपाध्याय हैं।।1।।

चार ही त्रिलोक वंद्य मंगलीक सिद्ध हैं।
श्री अरिहंत सिद्ध साधु जैन धर्म हैं।।
चार ये हि लोक वंद्य सर्वश्रेष्ठ उत्तमा।
चार ये हि जीव को शरण जगत में और ना।।2।।

केवली प्रणीता धर्म मोक्षधाम में धरे।
विश्व के समस्त सौख्य देय दुःख को हरे।।
मूल मंत्र युक्त यंत्र सिद्ध है विनायका।
प्राणियों के सर्वविघ्न शत्रु को निवारता।।3।।

मानसीक आधि देह व्याधि शोक दूर हों।
यंत्र भक्ति के प्रसाद वांछितार्थ पूर्ण हो।।

ये गृहस्थ कार्य का प्रसिद्ध सिद्ध हेतु है।
योगियों के आत्म सिद्धि में अपूर्व हेतु है।।4।।

द्रव्य क्षेत्र काल भव व भाव पांच भेद से।
संसरण करें अनंत काल तक अनादि से।।
पंच परावर्तनों से जीव त्रस्त हो रहा।
यंत्र भक्ति के प्रभाव सर्व दुःख धो रहा।।5।।

आज कलीकाल में मिथ्यात्व शत्रु छा रहे।
चोर ये विषय कषाय स्वात्मधन चुरा रहे।।
नाथ! आपके प्रसाद से पछाड़ दूँ इन्हें।
रत्न तीन दीजिये प्रभो! नमूँ नमूँ तुम्हे।।6।।

–दोहा–

मूल अनादी मंत्र का, सिद्ध विनायक यंत्र।
''ज्ञानमती'' हित मैं जजूँ, पाऊँ सौख्य स्वतंत्र।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूतेभ्यः जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

महामंत्र शुभ यंत्र की, महिमा अगम अपार।
सुरगुरु भी नहिं गा सके, नमूँ नमूँ शतबार।।8।।

।।इत्याशीर्वादः।।

1008 कलश मांडने का नक्शा

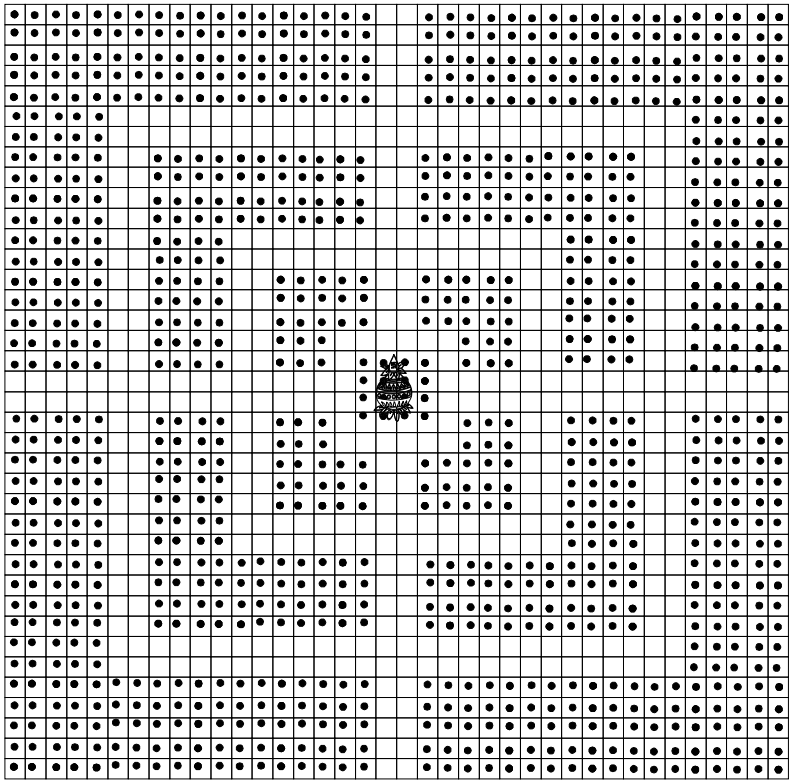

108 कलश मांडने का नक्शा

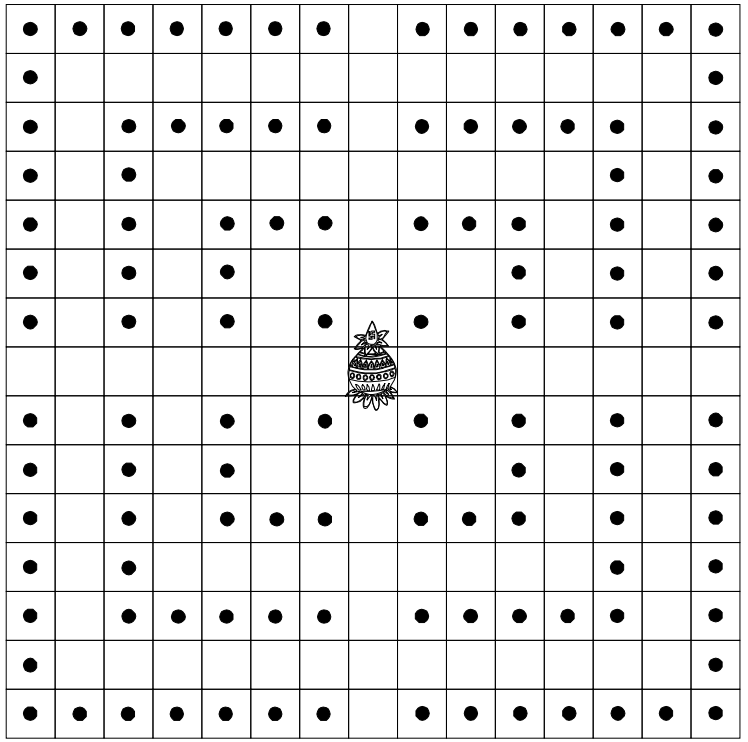

जल यंत्र

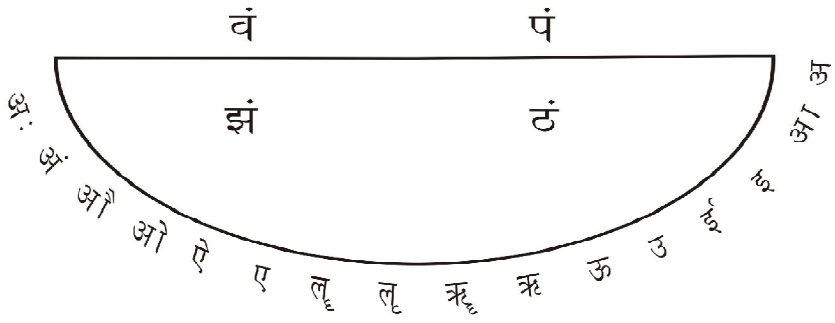

गणधर कुण्ड

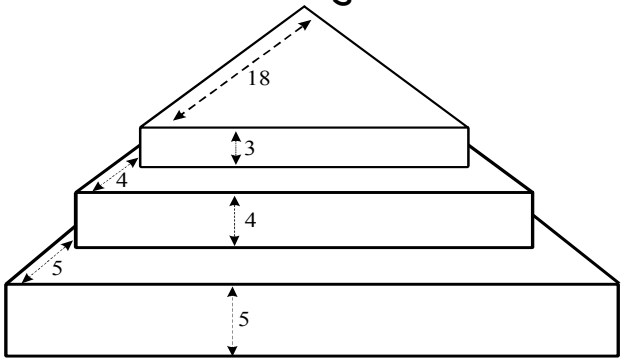

सामान्य केवली कुण्ड

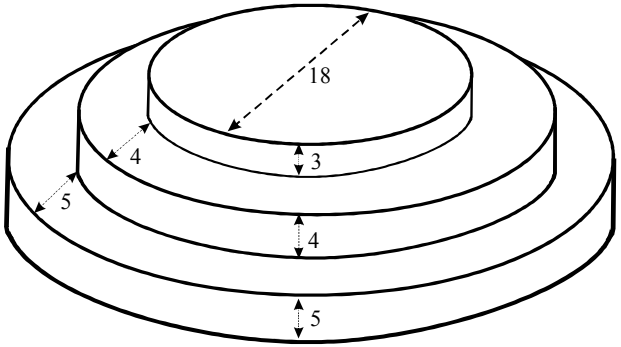

तीर्थंकर कुण्ड

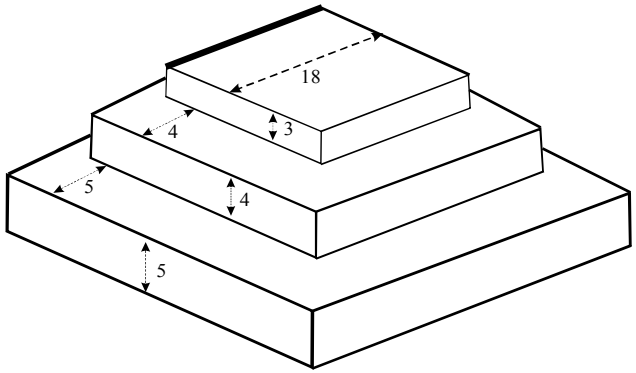

गंध यंत्रम्

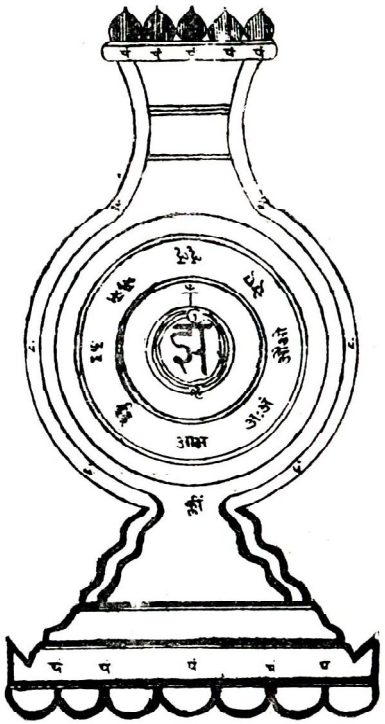

कुण्ड में मांडने के लिए अग्नि मण्डल का नक्शा

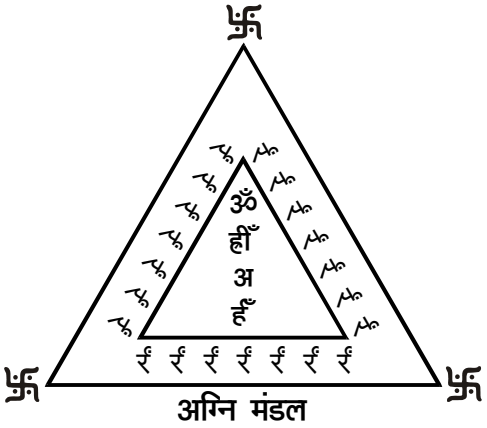

ध्वज गीत

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –फूलों सा.....

केशरिया झण्डा मेरा, जिनमत की पहचान है।
साथिया निशान है, जैनियों की शान है, उत्सव का सम्मान है।। टेक.।।

जिनवर के मंदिर शाश्वत बने जो,
उन सब पे भी ध्वज लहराते हैं।
रत्नों से निर्मित फिर भी हवा के,
चलने से वे ध्वज लहराते हैं।

देव वहाँ जाते, कीर्ति प्रभु की गाते, जिनचैत्य की वंदना कर रहे।
जय जय हो, जय जय प्रभो, केशरिया ध्वज धाम है।। साथिया।।1।।

आकाश की ऊँचाई को कहता,
झण्डा यह देखो फहराया है।
फूलों से गूंथा घंटी से गूंजा,
जिनवाणी का स्वर लहराया है।

महामहोत्सव में, आज के उत्सव में, ''चन्दनामती'' ध्वज वंदन करो।
जय जय हो, जय जय प्रभो, केशरिया ध्वज धाम है।। साथिया।।2।।

सरस्वती माता का शृँगार करते समय निम्न मंत्र एवं स्तुति पढ़ें

ॐ ह्रीं श्री सरस्वतीदेवि! सद्वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।

(वस्त्र पहनाना)

ॐ ह्रीं श्री सरस्वतीदेवि! आभरणं गृहाण गृहाण स्वाहा।

(अलंकार पहनावे)

ॐ ह्रीं श्री सरस्वतीदेवि! तिलकं करोमि स्वाहा।

(माथे में बिन्दी, तिलक लगावे)

–शेर छन्द –

कमलासिनी श्रुतधारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।
है द्वादशांग रूप से निर्मित तेरी काया।
सम्यक्त्व तिलक माथे पे चारित्र की छाया।।
विद्वानों से भी पूज्य तुम माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।1।।
जिनवर की मूर्ति तेरे मस्तक पे राजती।
वन्दन करें जो उनकी ज्ञान शक्ति जागती।।
हे श्वेतवस्त्र धारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।2।।
हे शारदा तू ज्ञान की गंगा बहाती है।
वागीश्वरी तू ब्रह्मचारिणी कहाती है।।
कर में है वीणा पुस्तक माला सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।3।।
जो भी तेरी आराधना में लीन होता है।
मिथ्यात्वतिमिर हटा ज्ञान लीन होता है।।
है ''चन्दनामती'' विनत माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।4।।

लक्ष्मी देवी का शृँगार करते समय निम्न मंत्र एवं भजन पढ़ें

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! सद्वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा। (वस्त्र पहनाना)
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! आभरणं गृहाण गृहाण स्वाहा। (अलंकार पहनावे)
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! तिलकं करोमि स्वाहा। (माथे में बिन्दी, तिलक लगावे)

लक्ष्मी महादेवी का श्रृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।। टेक.।।
जिनवर के ये सदा संग रहती हैं।
समवसरण में आगे-आगे चलती हैं।।
उसी वैभव को नमस्कार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।1।।
तीर्थंकर की माता को स्वप्न में दिखी थीं।
गज अभिषेक प्राप्त लक्ष्मी जी दिखी थीं।।
लक्ष्मी माता पर जल की धार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।2।।
साड़ी पहनाओ और चुनरी ओढ़ाओ।
माथे पे कुंकुम की बिन्दिया लगाओ।।
नाना अलंकारों से श्रृंगार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।3।।
लक्ष्मी को देने वाली यही महामाता हैं।
इनकी आराधना से सब मिल जाता है।।
पूजा में तन-मन-धन उदार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भंडार भरो जी।।4।।
''चन्दनामती'' जिसने इनका ध्यान धर लिया।
उसी ने वरदहस्त इनका प्राप्त कर लिया।।
जिनवर सहित देवी को प्रणाम करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।।5।।
अरिहंत देव इनके मस्तक पे विराजे हैं।
जिनको नमन करने से दरिद्रता भागे है।
दीवाली को इनका सब सत्कार करो जी।
अपने घर में लक्ष्मी का भण्डार भरो जी।। 6।।

पद्मावती माता की गोद भरने का भजन

–कु. माधुरी शास्त्री

आओ री सुहागन नारी, मंगल गावो री।
पद्मावति माता की, गोद भरावो री।।
सुन्दर काया माँ की वस्त्र पहनाओ,
जयपुर चँदेरी की चुनरी ओढ़ाओ।
अपनी चुनरिया भी खूब सजावो री।। पद्मावति माता की.।।1।।

(वस्त्र पहनावें)

सोने चाँदी के भूषण माँ को पहनाओ,
माला कुण्डल कंकणों से मात को सजाओ।
अपने घर की लक्ष्मी को खूब बढ़ावो री।। पद्मावति माता की.।।2।।

(गहना पहनावें)

हाथ माता के चूड़ियाँ पहनाओ,
सुंदर नैनों में कजरा लगाओ।
अपनी सुंदरता खूब बढ़ावो री।। पद्मावति माता की.।।3।।

(चूड़ी पहनाकर काजल लगावें)

माथे माता के बिंदिया लगाओ,
माँग में उनके सिंदूर भराओ।
अपने सुहाग को अखंड बनावो री।। पद्मावति माता की.।।4।।

(बिन्दी लगाकर माँग में सिंदूर भरें)

शीश माता के मुकुट पहनाओ,
मेवा मिश्री पकवानों से गोदी भराओ।
पुत्र पौत्रों से अपनी गोदी भरावो री।। पद्मावति माता की.।।5।।

(मुकुट पहनाकर गोद भर दें)

ॐ ह्रीं श्रीपद्मावती देवि! इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं अक्षतं, पुष्पं, चरुं, दीपं धूपं फलं बलिं स्वस्तिकं यज्ञभागं च गृहाण गृहाण स्वाहा। (अर्घ चढ़ावें।)

(यह भजन पढ़ते हुए पद्मावती माता की गोद भरकर सुहागिन नारी अन्य सात सुहागिन महिलाओं की गोद भरें, उसके पश्चात् बची हुई सामग्री सबको प्रसाद के रूप में वितरित करें।)

महालक्ष्मी माता की पूजन

रचयित्री-आर्यिका चंदनामती

–स्थापना (शंभु छंद) –

हे लक्ष्मी माता! तव मस्तक पर, प्रभु अरिहंत विराजे हैं।
प्रभु से पावन तेरे तन पर, आभूषण गुण के राजे हैं।।
प्रभु समवसरण में सरस्वती के, साथ सदैव रहा करतीं।
तेरी पूजन से इसीलिए, जनता धनवान बना करती।।1।।

–दोहा–

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
इस विधि लक्ष्मी मात का, करूँ यहाँ आह्वान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अत्र आगच्छ आगच्छ संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट् स्वाहा।

–अथ अष्टक (शंभु छंद) –

भौतिक लक्ष्मी आने हेतू, निज घर को स्वच्छ बनाते हैं।
आत्मिक सम्पति पाने हेतू, निज मन को स्वस्थ बनाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन की शीतलता हेतू, चंदन का लेप लगाते हैं।
निज मन की शीतलता हेतू, चंदन पूजन में चढ़ाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन का सुख पाने हेतू, जाने क्या-क्या हम करते हैं।
आध्यात्मिक अक्षय सुख हेतू, अक्षत पुंजों से जजते हैं।।

हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तन की सौंदर्यवृद्धि हेतू, बहु पुष्पों का शृँगार किया।
मन की सौंदर्यवृद्धि हेतू, पूजन में पुष्प का थाल लिया।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन की भूख मिटाने को, पकवान बहुत हम खाते हैं।
आत्मा की भूख बढ़ाने को, नैवेद्य थाल हम लाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज घर का तिमिर मिटाने को, विद्युत के दीप जलाते हैं।
अज्ञान का तिमिर हटाने को, पूजन में दीप जलाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज गृह में सुन्दर धूप जलाकर, उसे सुगंधित करते हैं।
आत्मा को गुण से सुरभित करने, हेतु धूप से जजते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

निज तन की पुष्टि हेतु खट्टे-मीठे फल हम सब खाते हैं।
निज आतम की पुष्टी हेतू, पूजन में उन्हें चढ़ाते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

भौतिक सम्मान बढ़ाने को, कितने प्रयत्न हम करते हैं।
''चन्दनामती'' अब अर्घ्यथाल ले, ईप्सित फल हम वरते हैं।।
हे लक्ष्मी माता! तुम निर्धन को, भी धनवान बनाती हो।
सांसारिक सुख सम्पति देकर, सबको सन्मान दिलाती हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महालक्ष्मीदेवि! अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

–दोहा–

स्वर्ण कलश में नीर ले, कर लूँ शांतीधार।
पदयुग लक्ष्मी मात के, दें सबको आधार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के भाव से, लिये पुष्प बहु भांति।
करतीं पुष्पित जगत को, महालक्ष्मी मात।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं महालक्ष्म्यै नमः

जयमाला

–शंभु छंद–

जय जय तीर्थंकर के पद में, रहने वाली लक्ष्मी देवी।
जय जय प्रभु समवसरण में भी, रहने वाली लक्ष्मी देवी।।
जय जय माता श्री सरस्वती के, संग रहतीं लक्ष्मी देवी।
जय जय श्रीदेवी की संज्ञा, धारिणी मात लक्ष्मी देवी।।1।।

इनके मस्तक पर सदा रहें, अरिहंत देव की प्रतिमा हैं।
अरिहंत देव के ही निमित्त से, इनके गुण की गरिमा है।।
ये जिनवर भक्तों को सदैव ही, मालामाल बनाती हैं।
इसलिए जगत के द्वारा ये, लक्ष्मी माँ मानी जाती हैं।।2।।

जो पूज्य जनों की विनय करें, उनके घर में लक्ष्मी आतीं।
जो अविनय करते गुरुजन की, उनकी सम्पत्ति भाग जाती।।

धन लक्ष्मी पाकर मान नहीं, आने पावे यह ध्यान रहे।
इसलिए सदा धन पा करके, दानी बनने का भाव रहे।।3।।

लक्ष्मी देवी की पूजन से, ऐसी सद्बुद्धि मिले मुझको।
निज औ पर का उपकार करूँ, ऐसी ही बुद्धि मिले मुझको।।
जिनधर्म और धर्मायतनों के, लिए दान के भाव रहें।
जिनशासन होवे वृद्धिंगत, मेरे द्वारा यह भाव रहे।।4।।

लक्ष्मी माता के साथ सरस्वति, माता का भी यजन करें।
दिग्भ्रमित न मन होने पाए, इसलिए सरस्वति नमन करें।।
व्यसनों से सदा दूर रहकर, भौतिक सुख का उपभोग करें।
सुख सम्पत्ति पाकर चार दान में, लक्ष्मी का उपयोग करें।।5।।

हे लक्ष्मी माता! तुम मेरे, घर में आकर खुशियाँ भर दो।
मेरे आंगन को अपने वरदानों से पूर्ण सुखी कर दो।।
इस हेतु तुम्हारे दर पर यह, मेरा पूर्णार्घ्य समर्पित है।
जयमाला के माध्यम से माँ, ये आठों द्रव्य समर्पित हैं।।6।।

है यही भाव ''चन्दनामती'', रत्नत्रय की संपति पाऊँ।
उस संपत्ति से मैं शीघ्र तीन, लोकों की संपति पा जाऊँ।।
जो भौतिक सम्पति मिले उसी में, संतोषामृत पान करूँ।
बस श्रेष्ठ निराकुल मन होकर, निज आतम में विश्राम करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं महालक्ष्मीदेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

।।इत्याशीर्वादः।।